LIBRARY OF PRINCETON
MAR 21 1957
THEOLOGICAL SEMINARY
PK2097
.S25

Digitized by the Internet Archive
in 2016

https://archive.org/details/satwarajastamass00unse

MAR 21 1957
THEOLOGICAL SEMINARY

SATWA-RAJAS-TAMAS-SANGRAM

(THE BATTLE OF THE THREE QUALITIES, TRUTH, PASSION AND DARKNESS.)

OR

AN ACCOUNT OF

SOME ANCIENT AND CELEBRATED CITIES,

AND OF THE

ENTRANCE AND DIFFUSION IN THEM

OF THE

CHRISTIAN RELIGION.

Allahabad:

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

[1st *Ed.*] 1874. [1,500 *Copies.*

सत्वरजस्तमस्सङ्ग्राम ।

अर्थात

कई एक प्राचीन और प्रसिद्ध नगरों का वर्णन

और उन में

खिष्टीय मत के प्रवेश और प्रचलित होने का वृत्तान्त ॥

Allahabad:

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1874.

N. I. T. S.

PRINCETON
REC. SEP 1880
THEOLOGICAL
SEMINARY.

भूमिका ।

विदित हो कि इस पुस्तक का बहुधा वृत्तान्त सत्य है परन्तु कल्पित भी थोड़ा है । अर्थात नगरों का वर्णन सब सत्य है और अनेक पुस्तकों में वैसाही पाया जाता है । फिर मनुष्यों के नाम और उन की बहुधा दशा भी जो यहां लिखी है सो सत्य है और मङ्गल-समाचार आदि पुस्तकों में इस वर्णन के अनुसार लिखी हैं । परन्तु मनुष्यों की दो एक दशा जो यहां वर्णित हैं और उन के विवाद और सत्सङ्ग के कितने बचन इस रीति से कल्पित हैं कि ग्रन्थकर्त्ता ने सत्य वृत्तान्त से अनुमान करके और उस के अनुसार नवीन दशा की कल्पना करके उन मनुष्यों के सत्य और कल्पित भी बचनों को उस नवीन दशा में संयुक्त किया है । निश्चय आसरा है कि जो बुद्धिमान इस ग्रन्थ के तात्पर्य्य की तुल्यता मंगलसमाचार आदि पुस्तकों से करेगा सो अंगीकार करेगा कि इस का तात्पर्य्य और अभिप्राय असत्य नहीं है इति ॥

सूचीपत्र ।

अध्याय		पृष्ठ
१	प्राचीन यवन देश में तीन मनुष्यों की भेंट	१
२	कोरिन्तुस नगर और यहूदी कुल और उन का भजन	७
३	यवनी कोठियों का वृत्तान्त और तीन मित्रों का संवाद	१७
४	मण्डलीघर का उपदेश और चार मित्रों का सत्सङ्ग	२९
५	खिष्टीय जलसंस्कार भाइयों का समाचार और प्रभु का दिन और बियारी	४२
६	यहूदियों का वैर खिष्टीय मण्डली का स्थापन और पवित्र आत्मा के दान	६०
७	आत्मिक दानों का फल प्रभु का दर्शन और मनुष्यजाति के पुनरुत्थान का विचार	७५
८	खिष्टीय शिष्यों का व्यवहार यहूदियों की कुमंत्रणा और रूमी अध्यक्ष का न्याय	९४
९	मित्रों का अफसुस नगर को सिधारना और कैसरिया और यरूसलम नगरों का वर्णन	१०६
१०	अन्ताकिया नगर और उस की खिष्टीय मण्डली का और पुलूस की पहिली बड़ी यात्रा का संक्षेप	१२०
११	पुलूस का अपनी बड़ी दूसरी यात्रा कर यूरप महाखण्ड में पहिली बार आना	१३२
१२	अथेनी नगर का वृत्तान्त और पुलूस का वहां उपदेश करना और कोरिन्तुस और अन्ताकिया में पहुंचना	१४५
१३	तीसरी बड़ी यात्रा कर अफसुस में पहुंचना नगर का वृत्तान्त और पहिले शिष्यों और यहूदी वैरियों का वर्णन	१५८
१४	अफसुस के टोन्हों की हार और लोभी सुनारों का हुल्लड़ और पुलूस का अन्तवाला वृत्तान्त	१६९
१५	ऊपर के वृत्तान्त में सत्वरजस्तमस्सङ्ग्राम का प्रकाश	१८४

सत्वरजस्तमस्सङ्ग्राम।

पहिला अध्याय।

प्राचीन यवन देश में तीन मनुष्यों की भेंट।

अठारह सौ बरस बीते कि एक मनुष्य प्राचीन यवन देश में यात्रा कर उस देश के अति प्रसिद्ध नगर अथेनी को छोड़ दूसरे नगर कोरिन्तुस के राजमार्ग पर चल उस नगर के निकट पहुंचा था। यात्री के स्वरूप से उस देश का और उस के निवासियों का जान्नेहार देख सकता कि यह परदेशी है। क्योंकि उस का रङ्ग और डील और वस्त्र राजमार्ग पर अन्य चलनेवालों से भिन्न थे। प्राचीन यवन लोग ऐसे न थे जैसे कितने हिन्दू यवनों को समझते हैं अर्थात् वे महम्मदी न थे। महम्मद का जन्म और उस के धर्म्म का आरम्भ उस काल के छः सौ बरस पीछे लों न हुआ। परन्तु उस से आगे प्राचीन यवनों ने उन देशों को जिन में इस काल के महम्मदी लोग रहते हैं जीत लिया और उन में अपना राज स्थापन किया था। इस कारण कितने हिन्दू प्राचीन यवनों और महम्मदियों को एक ही समझते हैं॥

प्राचीन यवन देश भारतवर्ष से कितने सहस्र कोस पश्चिम ओर को था और उन देशों के बीच अनेक

और देश जो भारतवर्ष के तुल्य एशिया महाखण्ड के भाग हैं उपस्थित हैं। यवन अर्थात् यूनान देश पृथिवी के दूसरे महाखण्ड का जिस को यूरप कहते हैं एक भाग है और इन दो महाखण्डों अर्थात् यूरप और एशिया के बीच भूमध्यस्त नाम एक सागर उपस्थित है॥

प्रसिद्ध महाराजा सिकंदर के राज्य में अर्थात् ईस्वी संवत से तीन सौ एक बरस पहिले यवन देश यूरप महाखण्ड का वह भाग था जो उस के पूरव और दक्षिण कोण में पड़ा है। वह तीन सौ एक मील लम्बा और कहीं दो सौ मील कहीं एक सौ और कहीं इस से भी कम चौड़ा है। उस की भूमि के दो बड़े भाग हैं और इन के बीच एक डमरूमध्य १५। २० मील लम्बा और ६। ८ मील चौड़ा है। डमरूमध्य की दोनों ओर सागर की खाड़ी हैं और उस की भूमि पर कोरिन्तुस नगर जिस के निकट पूर्वोक्त यात्री पहुंचा था बसा हुआ था। वर्त्तमान काल में भी एक छोटा सा नगर उसी स्थान पर उपस्थित है और वह स्थान कोरिन्तुस का डमरूमध्य कहलाता है॥

सिकंदर महाराजा के काल से आगे यवन भूमि के दोनों भागों में अनेक भिन्न २ राज्य उपस्थित थे और यह राज्य बहुधा परस्पर सङ्ग्राम कर रहे थे क्योंकि यवन लोग अति फुरतीले और सूरवीर और महा विद्यावान थे और अपने राज्यप्रबन्ध में स्वाधीन निराधीन होने के निपट अभिलाषी थे। परन्तु सिकंदर का पिता

फ़िलिप अथवा फ़ैलबूस जो उत्तर भाग का राजा था उन सभों को पराजय कर और एक ही बड़ा राज्य स्थापन कर उन का महाराजाधिराज आप ही बन बैठा। इस के दो सौ एक बरस पीछे प्राचीन रूमियों ने समस्त यवन देश को जीतकर अपने बड़े बिस्तृत राज्य को उन के ऊपर प्रबल और प्रसिद्ध किया। उसी राज्य के काल में वह यात्री कोरिन्तुस की ओर चलता था॥

चलते २ नगर के निकट आ उस ने अपने सन्मुख चटान का ऊंचा कराड़ा देखा जिस के ऊपर एक दृढ़ गढ़ और एक लम्बा चौड़ा मन्दिर बना था और उस कराड़े की जड़ पर बिस्तृत और सुन्दर नगर के गृह मन्दिर आदि सूर्य्य की ज्योति में चमक रहे थे। दहिनी ओर कोरिन्तुस की खाड़ी के जलतरङ्ग उसी ज्योति से झलकते और उस के ऊपर अनेक प्रकार के नौका अपने कुपक और गुण सहित वृक्षों के एक बन के तुल्य दिखाई देते थे। नगर के निकट एक बड़ा चौगान था जिस में यवन लोग अपनी देवपूजा की बिधि के अनुसार मेला की रीति बिदित समय पर नाना प्रकार की लीला क्रीड़ा करते थे। बांयें ओर को ५। ७ मील की दूरी पर सलामीस की खाड़ी का जल और कंकरिया नाम एक और बन्दर जिस में पूरबी देशों की नौका लङ्गर डाल रहे थे धुन्धले से दिखाई दिये। नगर के राजमार्ग पर नाना प्रकार के मनुष्य इधर उधर चलते फिरते थे कहीं रूमी योद्धा शस्त्रावंध देश के स्वामी की रीति घमंड

से अकड़ते थे । कहीं परदेशी नवाहक और व्योपारी कहीं यवन के पण्डित और ऋषी कहीं नगर के कर्मकार और बनिहार और देश के गंवार आया जाया करते थे । उन लोगों के बीच वह याची अकेला थका उदास रूप हो नगर के निकट पहुंचा ॥

इतने में उस ने दो जन एक पुरुष और एक स्त्री को देखा जिन के स्वरूप से उस ने जान लिया कि ये हमारे समजाति हैं । उन्हों ने भी उस को देख इसी प्रकार से उसे पहिचान लिया और उस की निर्बलता और थकावट पर दया कर उस के निकट आ उस से बार्त्ता करने लगे । ये तीनों मनुष्य यहूदी कुल के थे और पहिले याची का नाम पुलूस और दूसरे पुरुष का अकिला और उस की पत्नी का प्रिसकिला नाम था । उन के सम्बाद से जो अब थोड़ा लिखा जाता है इस पुस्तक का पढ़नेवाला तनिक जान सकेगा कि यहूदी लोग किस प्रकार के लोग थे ॥

अकिला बोला । हे मित्र मैं आप को अपने प्राचीन पिता अबिरहाम का पुत्र जान प्रणाम करता हूं ऐसा देख पड़ता है कि यात्रा करने से आप थके हैं आना कहां से हुआ और किधर को जाते हैं ॥

पुलूस बोला । हमारे पितरों का ईश्वर धन्यबाद हो कि आप के हमारी कुशल क्षेम पूछने से मन हर्षित हुआ मैं परमेश्वर का दास और प्रभु यीशु खीष्ट का प्रेरित हो उस का बचन सुनाने को अथेनी नगर में

गया और वहां से सिधारके यहां आया हूं। क्या इस नगर में अपने समजातियों के सङ्ग कहीं टिकाव और बिश्राम-स्थान मिल सकता है॥

प्रिसकिला बोली। निःसन्देह मिल सकता है परन्तु आप किस देश के रहनेवाले थे। क्योंकि इन दिनों हम यहूदी लोग अपने पितरों के पवित्र देश को त्याग सम्पूर्ण रूमी राज्य के समस्त देशों के निवासी हो गये। और आप के रूप से सम्भव देख पड़ता है कि आप का और हमारा देश परस्पर निकट होंगे॥

पुलूस बोला। मैं तो किलकिया के तरसुस नगर का निवासी था आप लोग कहां के हैं॥

अकिला बोला। हम उस की उत्तर ओर के पन्तुस देश के हैं और अपना उद्यम जो तम्बू बनाने का है करने के लिये हम रूम नगर में गये। परन्तु महाराजा ने सारे यहूदियों को उस राजधानी से निकल जाने की आज्ञा दिई इस कारण हम अब इस नगर कोरिन्तुस में रहते हैं॥

पुलूस बोला। मैं ने भी अपनी युवावस्था में उस ही उद्यम को सीख लिया और अब भी कर सक्ता हूं। परन्तु महाराजा ने किस कारण से यहूदियों को रूम से निकाला॥

अकिला बोला। कारण यह था कि नगर में बखेड़ा हुआ और दुष्ट लोगों ने कहा कि यहूदी एक नवीन राजा क्रिस्तुस को महाराजा के विरुद्ध ठहराने चाहते

हैं परन्तु हम लोग इस बात में निर्दोषी थे। क्या आप ने अभी नहीं कहा था कि ऐसे नाम के प्रभु का बचन प्रचारने के लिये आप अथेनी में गये ॥

पुलूस बोला। हां जी मैं ने कहा कि मैं प्रभु यीशु खीष्ट का प्रेरित हूं और उस का मंगलसमाचार प्रचारने के लिये सारे देशों में घूमता फिरता हूं। परन्तु इस स्थान पर इस का ठीक बर्णन मैं भली भांति नहीं कर सकता हूं। इच्छा होय तो आप के घर पर संग ही संग चलूंगा और कुछ बेर लों उद्यम कर रहूंगा। इतने में यह सम्पूर्ण वृत्तान्त आप लोगों पर प्रगट करने का अवसर मिलेगा क्योंकि वह सुन्ने और ध्यान देने और ग्रहण भी करने के अति योग्य है ॥

प्रिसकिला बोली। हे मित्र हम तो इस बात पर बहुत ही प्रसन्न हैं। हमारे संग चलिये और हमारे यहां तनिक बिश्राम कीजिये क्योंकि आप के लिये ऐसा करना निपट अवश्य देख पड़ता है ॥

इस पर ये तीनों जन एक ही संग चलते २ थोड़ी देर में अकिला के घर पर पहुंचे ॥

दूसरा अध्याय।

कोरिन्तुस नगर और यहूदी कुल और उनका भजन।

जब कि इस पुस्तक के कितने पढ़नेहारे कोरिन्तुस की दशा निवासी इत्यादि और यहूदी लोगों के गुण इतिहास धर्म इत्यादि का ज्ञान भली भांति नहीं रखते होंगे इस कारण इस अध्याय में इन विषयों का संक्षेप वर्णन करना उचित है॥

ईस्वी संवत से १४६ बरस पहिले रूमी सेनापति ममियुस ने कोरिन्तुस नगर को यवनों के हाथ से ले भस्म कर दिया। इस के पश्चात १०० बरस लों वह नगर सर्वथा शून्य और निर्जन रहा। तब रूमी महाराजा जुलयूस कैसर ने उस को नवीन रूप से स्थापन करने का अभिलाषी हो कितने रूमियों को उस में बसा गृह आदिकों को बनवा नवीन नगर को यवन देश के उस भाग की रूमी राजधानी ठहराया। तब से नगर की शोभा प्राचीन नगर के तुल्य होने लगी। उस का स्थान दो सागरों के बीच और देश के दो महा भागों के मार्ग पर हो व्योपार और धन सम्पत्ति और अनेक परदेशियों के गमनागमन के लिये अत्यन्त योग्य ठहरा। नगर का प्रताप और महिमा प्रति बरस बढ़ता ही गया यहां लों कि सौ एक बरस पीछे जब पुलूस वहां आया वह एक अति शोभायमान नगर था। चटान के ऊंचे कराड़े के ऊपर दस बीस मील का एक चौगान था

जिस में अति दृढ़ गढ़ और देवी का एक प्रसिद्ध मन्दिर बने हुए थे। उस देवी का यवनी नाम आफ्रोदैती और रूमी नाम वीनस अर्थात् शुक्र था। यवनी कथा के अनुसार वह देवी हिन्दू देवी लक्ष्मी के समान सागर से निकली और रति देवी के तुल्य वह सुन्दरता और रताभिलाष की देवी थी। उस की टहल और भजन के लिये कोरिन्तुस के मन्दिर में एक सहस्र वेश्या रहा करती थीं और अन्य देशी धनी व्योपारियों से बड़ी धन सम्पत्ति कमाती थीं। कराड़ा के जड़ पर नगर की उत्तर ओर के चौगान में एक और बड़ा मन्दिर पोस्साइडौङ अर्थात् नेपच्यून की पूजा के लिये बना था। वह देवता सागर का राजा समझा जाता था जिस प्रकार से हिन्दू लोग इन्द्र को आकाश का राजा मानते हैं। उस ही की पूजा में प्रति दूसरे बरस मन्दिर के चौगान में एक बड़ा मेला लगता था जिस में समस्त यवन देश के लोग परस्पर सङ्ग्राम और बखेड़ा को छोड़ एकट्ठे आया करते थे। उस मेला में नाना प्रकार की लीला क्रीड़ा अर्थात् कुश्ती वा मुक्के लड़ना घोड़ों और रथों और मनुष्यों की दौड़ारी इत्यादि करते थे। जिस ने इन क्रीड़ों में जीत लिया उस की सारे यवन लोगों में बड़ी प्रतिष्ठा हुई॥

नगर के बहुधा निवासी यवन थे जिन के पूर्व काल में अनेक सद्गुण प्रकाशित थे। उन की बुद्धि अन्य जाति के लोगों से अति बलवन्त और तीक्ष्ण

थी । इस कारण उन में अनेक बड़े ऋषी और कवीश्वर और इतिहासबेत्ता और विद्यावान थे जैसे इफलातून सुकरात अरस्तू होमिरस सोफोक्लीस थियूसिदिडीस युक्लादुस इत्यादि जिन के नाम सारे संसार में आज लों प्रसिद्ध हैं प्रकाशित हुये । वे समस्त प्रकार की विद्या और कबिता में अत्यन्त प्रभृत और प्रवीण थे और उन की पुस्तकें आज लों सारे विद्यावानों के बिचार में अतुल्य हैं । यवन लोगों का स्वभाव अति शूरबीर और साहसी भी था और उन के सेनापति सारे संसार में निपट यशवन्त ठहरते हैं । परन्तु उन के पास ईश्वर के सत्य धर्म्म का ज्ञान न था बरन वे सनातन से देवताओं और देवियों के एक कल्पित मत को मानके होते २ नाना प्रकार के आश्चर्य्ययुक्त भ्रमों और कुमार्गों में भटकके भ्रष्ट हुये । निदान ईस्वी संवत के आरम्भ में वे विशेष करके फुर्ती चतुराई हलकाई कपट अविश्वासता के निमित्त लोकप्रख्यात हो गये ॥

यवन लोगों के संग कोरिन्तुस नगर में नाना प्रकार के अन्यदेशी भी रहते थे । पूर्बी देशों के जैसे सुरिया फारस अरब इत्यादि और पश्चिमी देशों के जैसे इटालिया स्पेन इत्यादि के अनगणित व्यापारी और महाजन अपने २ देश की सामग्री नौकाओं पर लाद २ के सागर के पार से लेन देन करने के लिये कोरिन्तुस के बन्दरों में आया करते थे । अपने २ बाणिज्य के संग वे अपने २ देश की रीतों मतों देवताओं और

कुचालों को भी लायके कोरिन्तुस के ऐसे विषयों में मिलाते बढ़ाते जाते थे। इन को छोड़ कितने रूमी भी जो पहिले बसनेहारों के बंश अथवा रूमी अध्यक्ष के सेवक किंवा राज्य के कर्मकार और सेना के योद्धा थे वहां रहा करते थे। और रूमी लोग भी वैसेही देवताओं और धर्म की रीतों को मानते थे जैसे यवन परन्तु उन का जातीय स्वभाव भिन्न था। वे बिश्वासी गम्भीर और राजकार और व्यवस्था में निपुण और सङ्ग्राम में अति विद्यावान और शूरवीर थे। इस कारण से वे सम्पूर्ण यवन देश और अनेक और देशों को जीत अपना स्थिर राज्य उन के ऊपर कर सके और फिर भी विद्या के प्रकरण में वे बहुधा यवनों के चेले थे॥

अब यहूदी कुल का जिस के वे तीन मनुष्य अर्थात् पुलूस और अकिला और प्रिसकिला थे तनिक वर्णन करना चाहिये क्योंकि उस कुल के भी बहुत मनुष्य कोरिन्तुस में रहते थे। यह जाति सारे और जातिगणों से जो इस संसार में मिलते हैं कई एक भारी प्रकरणों में भिन्न और विशेष ठहरती है। इस का कारण यह है कि पूर्वकाल में सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने इस जाति के आदि पिता अबिरहाम को अपना दर्शन दे कुटुम्ब दारी से अलग बुला उस को और उसके बंश को अपना निज विशेष कुल ठहराया। यह वृत्तान्त ईस्वी संवत से दो सहस्र बरस अर्थात् इस काल से प्रायः

चार सहस्र बरस पहिले उपस्थित था। इस कुल का पूरबी नाम इब्रानी और इस्रायेली भी था परन्तु अब वे यहूदी कहलाते हैं। इस विशेष प्रबंध का अभिप्राय यह था कि यह जाति आस पास वाली जातों के देव पूजा और मनमता से अलग हो सत्य ईश्वर के भगत उस समय लों बने रहैं जब कि ईश्वर उसी जाति में से सारे जातिगणों के लिये एक बड़ा मुक्तिदाता प्रकाश करे। इस अभिप्राय के अनुसार परमेश्वर ने उस जाति को एक विशेष भूमि में बसा उन के पास अपने विशेष आचार्य्यों व्यवस्थादायकों और उपदेशकों को भेज उन की राजनीति और धर्म्म नियम को स्थापन कर उन की लौकिक और आत्मिक रक्षा कर आनेहारे मुक्तिदाता की नाना प्रकार की भविष्यद्वाणियां और लक्षण दे स्थापित समय में उन लक्षणों के अनुसार उन में से उस बड़े त्राणकर्त्ता को प्रकाश किया। उस के आने से पहिले यहूदी कुल के लोग रूमी विस्तृत राज्य के बहुधा नगरों में व्यापार के लिये जा बसे थे। परन्तु अपने ईश्वरीय धर्म नियम पर बिश्वासी हो उन नगरों की मूर्त्ति पूजा और व्यवहारों से अलग रहे। उन नगरों में वे भजन के लिये मण्डलीघर बना शनिवार को जो उन का पवित्र बिश्राम का दिन था उन में एकट्ठे हो अपने धर्म्मपुस्तक को पढ़ सत्य परमेश्वर का भजन किया करते थे। उन नगरों के मूर्त्तिपूजकों में से भी कितने मनुष्य जो बुद्धिमान और धर्म्मी हो अपनी मन-

मता की प्रलापी कथाओं से अप्रसन्न थे यहूदियों की धर्म्मपुस्तक को देख सुन उन के भजन में साझी हो उन का ईश्वरीय ज्ञान और उपदेश समझ बूझ और ग्रहण कर अपनी मूर्त्तिपूजा को त्याग और यहूदी मण्डली में प्रवेश कर सत्य ईश्वर के सेवक और भगत हो गये। इस रीति से जाती और अन्यदेशीय यहूदियों की मण्डलियां रूमी राज्य के बहुधा नगरों में उपस्थित हुई थीं। फिर यहूदी धर्म्मपुस्तक भी मिसर देश के एक राजा की आज्ञानुसार तीन सौ एक बरस पहिले यवनी भाषा में उलथा किई गई थी। इस प्रकार से भी आनेहारे बड़े मुक्तिदाता का कुछ समाचार उन सारे देशों में फैल गया था। सो कोरिन्तुस नगर की यह दशा थी जब पुलूस अपने दो मित्र अकिला और प्रिसकिला के संग वहां रहने लगा॥

उन के घर पर पहुंचके पुलूस ने देखा कि बड़ी कोठी है और उस में अनेक कोठरियां और नौकर चाकर और तम्बू बनानेवाले बनिहार और कर्म्मकार उपस्थित हैं। कुछ बेर लों शरीर की थकावट और निर्बलता के कारण उस का जी दब रहा और उदासी के मारे न तो उद्यम में बहुत परिश्रम न तो संवाद में बहुत बार्त्ता कर सका। परन्तु उस के मित्रों ने समस्त प्रकार से उस की रक्षा और उपकार किया। यों होते २ उस को तनिक बल होता ही गया॥

दो एक दिन पीछे जब शनिबार था वह अपने

मित्रों के संग ईश्वर का भजन करने को यहूदियों के मण्डलीघर में गया। वह घर चौकोन बना था चार-दिवार के बीच एक आंगन आंगन में दो कोठरियां और चारों ओर दिवार के अन्दर उसारे बने थे। दो कोठरियों में एक जो बड़ी थी भजनघर था दूसरी में यहूदी लोग सत्सङ्ग और परामर्श की सभा और पाठशाला का काम करते थे। भजनघर में द्वार की दूसरी ओर को एक मंजूषा थी जिस में धर्मपुस्तक की चामवाली लंबी पट्टियां काठ के दो बेलनों पर लपेटी हुई धरी थी। मंजूषा के सन्मुख चबूतरा और उस पर धर्म्मोपदेशक के लिये आसन बना था। इस के और द्वार के बीच का स्थान टट्टी से दो भाग किया गया। एक में पुरुष दूसरे में स्त्री बैठी थीं। जब पुलूस और उस के मित्र अन्दर गये तो देखा कि दो सौ एक मनुष्य एकट्ठे हैं और मण्डलीघर का प्रधान पाठ को पढ़ने पर सिद्ध है। प्रथम उसने व्यवस्था में से वह पाठ सुनाया जो मूसा आचार्य्य की पहिली पुस्तक उत्पत्ति नामे में लिखा है अर्थात् कि मनुष्यजाति के आदि पुरुष और स्त्री किस रीति से पाप में पतित हुये और श्री परमेश्वर ने उन के लिये किस प्रकार का दण्ड ठहराया और दण्ड के संग प्रतिज्ञा भी दिई कि स्त्री के बंश में से एक बड़ा मुक्तिदाता उत्पन्न होगा। इस के उपरान्त पुरोहित ने यसैयाह भविष्यद्वक्ता के ५३ पर्ब्ब को पढ़ सुनाया जिस में ईश्वर के दास का वर्णन

है कि किस रीति से कुचला और घायल और बध भी किया जायगा और अपना प्राण प्रायश्चित्त का बलि करेगा और अन्त को अपने प्राण की पीड़ा का फल देखके सन्तुष्ट होगा ॥

जब पाठ को पढ़ चुका तो मण्डली घर के प्रधान ने पुलूस को देख उस के पास कहला भेजा कि हे भाई जो लोगों के लिये कुछ उपदेश की बात आप के पास हो तो सुनाइये । इस पर पुलूस खड़ा हो और हाथ से सैन कर कहने लगा कि

हे इस्रायेली लोगो और परमेश्वर से डरनेवालो सुनो । हमारे पितरों का ईश्वर जो सभों का प्रभु है जब मनुष्यजाति के पहिले माता पिता उस की आज्ञा भंग करके पाप में पतित हुये तब उस ने उन को दण्ड देके यह बचन भी दिया कि स्त्री के बंश से एक उत्पन्न होगा जो उन के और हमारे भ्रष्टकर्त्ता दुष्ट आत्मा को नष्ट करके आप कुछ हानि उठायेगा । इस के उपरान्त परमेश्वर ने हम लोगों के आदि पिता अबि-रहाम को चुनके कहा कि तेरेही बंश से सारे पृथिवी के घराने आशीस पावेंगे । फिर हमारे पूरबी राजा दाऊद को दैवीय बाणी हुई कि तेरा एक पुत्र होगा जो तेरे सिंहासन पर बैठके सारी पृथिवी के ऊपर राज्य करेगा । इस के पीछे अनेक भविष्यद्वक्ताओं ने हमारे पित्रों को नाना प्रकार का समाचार दिया कि वह आनेहारा मुक्तिदाता किस बस्ती में और किस काल

में उत्पन्न होगा और किस प्रकार का काम और उपदेश करेगा और उस की कैसी दशा होगी जैसे यसैयाह ने कहा कि कुचला और वध किया जायगा और अन्त को सन्तुष्ट होगा और बहुतों को धर्मी ठहरावेगा और उन की बुराइयों को उठा लेगा। फिर दाऊद ने भी कहा कि परमेश्वर अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा अर्थात् उस को मृतकों में से जिलावेगा। अब हम तुम लोगों को यह मंगलसमाचार सुनाते हैं कि जो वाचा परमेश्वर ने हमारे पित्रों से किई थी सो उस ने हमारे लिये जो उन के सन्तान हैं पूरी किई है कि उस ने यसू को जो स्त्री का वंश अर्थात् कुंवारी कन्या मरियम से जो अबिरहाम और दाऊद के सन्तान की थी उत्पन्न हुआ और दाऊद के नगर बैतलहम में जन्म पाया और तेंतीस बरस लों इस जगत में जीता रहा और नाना प्रकार का दैवीय धर्मोपदेश और दयापूर्वक आश्चर्य्यकर्म कर और दुःख सह अन्त को जगत के पाप के प्रायश्चित्त में बलिदान हो घात किया गया सो उस ही को परमेश्वर ने मृतकों में से जिलाया और वह अपने शिष्यों पर कई बार प्रगट हुआ और मुझ को भी जब मैं उस के शिष्यों को सताता था दर्शन दिया और आज्ञा भी दिई कि यह मङ्गलसमाचार समस्त लोगों में प्रचारो और उन से कहो कि मुझ पर बिश्वास लाके मुक्ति लो। सो हे भाइयो तुम जानो कि उसी यसू के द्वारा से तुम को पापमोक्षण की बार्त्ता दिई

जाती है और उन सब बातों से कि जिन से तुम मूसा की व्यवस्था अथवा किसी प्रकार के दान पुण्य के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते हो हर एक जो उसी यसू पर बिश्वास लाता है सो उस के द्वारा निर्दोष ठहरेगा ॥

इतने में मण्डलीघर का भजन समाप्त हुआ और जाती और अन्यदेशी यहूदी जो वहां थे बिदा हो अपने अपने घर को सिधारे और पुलूस और उस के मित्र भी घर पर लौट आये ॥

तीसरा अध्याय।

यवनी कोठियों का वृत्तान्त और तीन मित्रों का संवाद।

पुलूस का धर्म्मोपदेश जो उस ने मण्डलीघर में किया सो उस के सुननेहारों के लिये अत्यन्त आश्चर्य्य का था क्योंकि यहूदी लोगों ने अपने आनेहारे मुक्तिदाता के विषय में ऐसा विचार जैसा पुलूस ने बताया कभी नहीं किया था। उन्हों ने समझा था कि वह धन्य अभिषिक्त त्राणकर्त्ता जब आवेगा तो एक बड़ा पराक्रमी और प्रतापी महाराजा होगा और हम लोगों को रूमियों की बरबस्ती से छुड़ा अपना बड़ा राज्य लौकिक रीति से बड़ी धूम धाम के संग सारी पृथिवी के ऊपर स्थापित और प्रकाश करेगा। जो भविष्यद्वाणियां प्राचीन आचार्य्यों ने ईश्वर की ओर से आत्मिक अर्थबोधक उन को दिई थीं उन्हों ने शारीरिक और लौकिक रीति से समझीं। इस कारण जब सुना कि वह मुक्तिदाता एक दीन निर्बल पुरुष और तुच्छ अपराधी की रीति पर बध किया गया तो वे निपट अप्रसन्न थे। और जब पुलूस ने उन के धर्मपुस्तक के अर्थ को ऐसे नवीन और अनोखी रीति से खोल दिया तो संदेह करके आपस में विवाद करने लगे कि यह बर्णन किस प्रकार से ठीक हो सक्ता है। निदान उन के मन पर पक्ष अज्ञानता और द्वेष का तम अर्थात अन्धकार छा गया था और जब पुलूस का सत्य बर्णन यसू के विषय

में उजाला के तुल्य उस अन्धकार पर उदय होने लगा तो अन्धकार ने उस को ग्रहण न किया । जैसे यसू के एक और प्रेरित ने लिखा है कि उजियाला अंधियारे में चमका और अंधियारे ने उसे न बूझा वह जगत में था और जगत उसी से रचा गया और जगत ने उसे न पहिचाना वह अपनों पास आया और अपनों ने उसे ग्रहण न किया । यूहन्ना प्रेरित ने यह वर्णन यसू खीष्ट और यहूदी लोगों के विषय में इस कारण लिखा कि जब यसू अपना दैवीय कर्म और उपदेश कर रहा था तो यहूदियों के प्रधान और पुरोहित उस के उपदेश से जिस से वे दोषी और पापी ठहरे अति क्रोधित हो उस को बध करने पर प्रयत्न करने लगे । वे तो न जानते थे कि इसी रीति से वे अपने आचार्य्यों की भविष्यद्वाणियों को और ईश्वर के स्थापित प्रबन्ध को पूरा करते थे नहीं तो वे ऐसा न करते । फिर जब इस के पीछे यह समाचार अन्य यहूदियों के बीच प्रचारा गया तो वे भी पक्षके मारे उसी रीति से अप्रसन्न हुए ॥

परन्तु ऐसा कठिन द्वेष कोरिन्तुस के यहूदियों में झटपट प्रगट नहीं हुआ वे केवल आपस में बड़ा वाद विवाद करने लगे कि यह कैसे आश्चर्य्य का समाचार है जो उस मनुष्य ने हम को दिया । और उन में कितने यह भी कहते थे कि वह मनुष्य बड़ा ज्ञानी धर्मी गुणवान देख पड़ता है । बिशेष करके अकिला और प्रिसकिला अपने मन में बड़े अचंभित हुए कि यह कैसा

साहसी सत्य पुरुष और दैवीय जन देख पड़ता है और जब वे घर पर पहुंचे तो उस के संग उस के वर्णन के विषय में संवाद करने लगे॥

जान्ना चाहिये कि यवन लोग अपने नगरों में पत्थर अथवा ईंट के अच्छे घर रहने के लिये बनाते थे जो उन के व्यवहारों और धर्म की रीतों के अनुसार और उन के देश के जल वायु के अति योग्य थे। अकिला ने एक ऐसा घर कोरिन्तुस में भाड़े पर ले लिया था और यद्यपि यवनी मूर्त्तिपूजा के चिन्ह उस पर प्रगट थे तथापि उन चिन्हों को बिना मिटाये परन्तु बिना माने भी उस में रहता था। मार्ग की ओर एक ऊंची भीत और उस में एक द्वार था द्वारके पास एक मूरत और ऊपर टोना वा मन्त्र की रीति पर एक लिखित थी फिर द्वार के अन्दर दो भीतों के बीच एक सकरा मार्ग और मार्ग की दहिनी ओर एक द्वार था जो घोड़साल में गया। बांयें ओर द्वारपाल की कोठरी थी और मार्ग के उस अन्त पर एक आंगन जिस की चारों ओर खम्भ और उसारे बने थे। आंगन की बांयें ओर एक बड़ी कोठरी और चारों ओर कई एक और कोठरियों के द्वार उसारों में खुलते थे आंगन के बीच किसी देवता की बेदी थी और यह आंगन पुरुषों का था। पहिले मार्ग के आम्हने साम्हने एक और मार्ग स्त्रियों के एक और ऐसे ही आंगन में गया। पुरुषों की कोठरियों के ऊपर नौकर चाकर और दासों के लिये कोठे थे और घर का सारा छप्पर चौरस

था क्योंकि यवन देश का वायु अति मध्यम और मीठा था और यवन लोग बहुधा भोर और सांझ को छप्पर के ऊपर चलते और बैठते थे। यवनों की एक अति बुरी रीति थी कि वे अपनी स्त्रियों को पढ़ाते सिखाते न थे परन्तु अज्ञानता और दासत्व में दबाय रखते थे। इस दशा में क्या आश्चर्य्य था कि उन से पशु की रीति व्यवहार करके वे उन की शुद्धता पर सन्देह करते और इस कारण उन को गुप्त में रख छोड़ते और स्त्रियों का एक अलग आंगन अपने घरों में बना लेते थे। परन्तु यहूदियों की यह रीति न थी क्योंकि वे जानते थे कि परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष के सङ्ग संसर्ग मित्रता सत्सङ्ग के योग्य उत्पन्न किया और इस ही रीति से दोनों का कुशल और उपकार हो सकता है। फिर यद्यपि स्त्री के द्वारा संसार में पाप का प्रवेश हुआ तथापि ईश्वर ने ऐसा प्रबन्ध ठहराया कि स्त्री ही के द्वारा मुक्ति-दाता भी संसार में आवे। इस कारण यहूदी लोग अपनी स्त्रियों के योग्य आदर सन्मान और शिक्षा भी करते थे और यहूदिन स्त्री इस रीति से बुद्धिमान और पतिव्रता भी थीं और पुरुषों के संग सत्सङ्ग करने में अनर्थ लज्जा न मानती थीं। अकिला की पत्नी प्रिसकिला एक अत्यन्त बुद्धिमान भलमानुस धर्ममय स्त्री थी और पुलूस के गुणों को देख उस की बड़ी प्रतिष्ठा और उस की शारीरिक निर्बलता और मानसिक उदासी के कारण उस पर बड़ी दया किया करती थी॥

उस पहिले शनिवार को सांझ के समय जब सूर्य्य अस्त नहीं हुआ था ये तीनों जन कोठी के ऊंचे छप्पर पर जा बैठे। उस समय आकाश अत्यन्त फरछा था और उन की चारों ओर सारी भूमि सागर गृह आदि बड़े स्पष्ट रूप से दिखलाई देते थे। जब अपने सन्मुख अर्थात् उत्तर ओर को दृष्टि करते तो कोरिन्तुस का डमरूमध्य कोसों तक देख सकते थे उस के बीच में अथेनी नगर से कोरिन्तुस का राजमार्ग खेतों वृक्षों और छोटी पहाड़ियों के बीच सर्प के समान घूमता फिरता था। दहिनी अर्थात् पूरब ओर को सागर नौका और टापू सूरज के ज्योति में चमकते थे पश्चिम दिशा को धूप की झलक से वे भली भांति न देख सकते। उन के पीठ पर ऊंचा कराड़ा ऊपर चढ़ अपना छाया पूरबी ओर को बहुत दूर तलक डाल देता था एक अत्यन्त कोमल आनन्ददायक पवन उन पर बह रहा था। यह दशा देख उन के मन अति हर्षित हुए और पुलूस अपना मुंह खोल परमेश्वर का जो सब का सृष्टिकर्त्ता और पालन कर्त्ता है धन्यबाद करने लगा परन्तु उस के संग ठंढी सांस भी भरी। यह देख प्रिसकिला बोल उठी॥

प्रिसकिला बोली। हे मित्र ऐसी दशा देख जैसी हमारे नेत्रों के सन्मुख पड़ी है ईश्वर का धन्यबाद करना अत्यन्त उचित है बरन मन का हर्षित भी होना कुछ अनुचित नहीं हो सकता आप काहे को ठंढी सांस लेते हैं॥

पुलूस बोला । सच है कि सारी दशाओं में हर्षित हो ईश्वर का धन्यबाद करना सब लोगों को उचित है और यह दशा देख और ईश्वर की दया पर ध्यान कर मैं हर्षित होता हूं । मेरी ठंढी सांस का कारण यह था कि मेरा देह निर्बल और दुःखी है और मैं ने तनिक शारीरिक कष्ट भी उठाया और इस रीति से अपने प्रभु के कार्य करने की इतनी सामर्थ्य जैसी चाहिये नहीं है। और जब मैं करता भी हूं तो मेरे यहूदी भाई जैसा चाहिये मेरे प्रभु का बचन ग्रहण नहीं करते हैं फिर सच्चे ईश्वर का ज्ञान रख और यवनों की मूर्त्तिपूजा को देख कौन सत्य पुरुष उदास नहीं होवेगा ॥

प्रिसकिला बोली । निःसन्देह मूर्त्तिपूजकों की दशा अत्यन्त खेदजनक तो है कि वे अपने हस्तकारी और मनभावना के कल्पित का भजन करते हैं । परन्तु आपने जो कहा कि शारीरिक कष्ट उठाया हमारे लिये इस का तनिक बर्णन कीजिये कि कैसा कष्ट था ॥

पुलूस बोला । वह तो कुछ ऐसी बड़ी बात न थी मेरे प्रभु ने मेरे लिये इस से अत्यन्त भारी दुःख उठाया और मैं इस योग्य नहीं कि उस की सेवा में दुःख सहने की पदवी पाऊं । परन्तु जब देह निर्बल है तो छोटी बात से भी कधी २ जी दब जाता है । फिर कुछ दिनों से मैं ने दो भाइयों को जो थसलोनीकी और बरीया नगरों में पीछे रह गये नहीं देखा न उन का समाचार पाया आसरा है कि थोड़े दिनों पीछे आवेंगे। प्रभु की

इच्छा होय तो उन के आने से बड़ा हर्षित होऊंगा और उन के आने लों आप को कोमल दया और भलमनसी मेरी आत्मा के लिये ऐसी है जैसे प्यासे जीव को ठंढा जल। केवल यह है कि अपने प्रभु के कार्य करने में मैं अब दुर्बल हूं और डरता और थरथराता हुआ उस को करता हूं॥

अकिला बोला। जब आप मण्डलीघर में उपदेश करते थे तो आत्मा की प्रबलता से देह की यह दुर्बलता और थरथराहट तनिक दिखाई नहीं देती थी। आप के ज्वलन को देख हम अचंभित हुये॥

पुलूस बोला। निःसन्देह प्रभु के प्रेम और दया का मंगलसमाचार सुनाना ऐसा कार्य है जिस्से मन ज्वलित हो जाता है वरन वह कार्य्य मुझे अवश्य आन पड़ता है और यदि मैं मंगलसमाचार को न सुनाऊं तो मुझ पर हाय है। इस प्रकरण में मुझे एक प्रकार का भण्डारीपन सोंपा गया॥

अकिला बोला। आप क्षमा कीजिये जो मैं इस विषय में आप से दो एक बात पूछूं क्योंकि आप के कितने वचन भली भांति हमारी बुद्धि में नहीं आते हैं। जो उपदेश आप ने मण्डलीघर में किया उस का अभिप्राय कुछ न कुछ हम ने समझा क्योंकि यसू का नाम हम ने पहिले से रूम नगर में सुना और उस का तनिक वृत्तान्त भी जान लिया। परन्तु यह किस रीति से सिद्ध हो सकता है कि वह यसू नासरी जो अपराधी

के समान हमारे धर्म्माध्यक्षों की आज्ञा से घात किया गया हमारा मुक्तिदाता होवे । क्या आप ने उस को कभी देखा है अथवा यहूदी हो और धर्मपुस्तक के बचन को ईश्वरीय मान आप उस यसू के शिष्य क्योंकर हो गये ॥

पुलूस बोला । मैं बड़े आनन्द से इस का बर्णन करूंगा आप सुनिये । सच है कि मैं जात का यहूदी इब्रानी का इब्रानी हूं व्यवस्था के विषय में फरीशी और खिष्टीय शिष्यों का एक क्रूर सतानेहारा भी था और धर्मबिधि के विषय में निर्दोष । परन्तु जिन बस्तों को मैं अपने लाभ की जानता था अब मैं ने यसू खीष्ट के लिये हानि समझीं। हां निःसन्देह अपने प्रभु यसू खीष्ट के ज्ञान की उत्तमता को बिचार कर मैं सब बस्तुओं को हानि समझता हूं । और जो आप पूछते हैं कि क्या मैं ने उस प्रभु को देखा है तो मैं उत्तर देता हूं कि हां मैं ने उस को देखा और उस का शब्द सुना और यही कारण है कि अब मैं उस का अयोग्य शिष्य और प्रेरित हूं क्योंकि उस ने मुझे इस बिशेष काम पर ठहराया है कि समस्त देशों में उस का मङ्गलसमाचार सुनाऊं ॥

अकिला बोला । आपने अपने उपदेश में कहा कि यसू घात किया गया और उस के उपरान्त मृतकों में से जी उठा तो क्या आप ने उस पुनरुत्थान से पहिले अथवा उस के पीछे उस का दर्शन पाया । दया करके इस का तनिक वृत्तान्त हमारे लिये कहिये ॥

पुलूस बोला। पुनरुत्थान के पीछे उसने मुझ को दर्शन दिया और उस का वृत्तान्त यह था कि मैं उस के शिष्यों को बड़े ही ज्वलन और क्रूरता से सताता था क्योंकि मैं ने समझा कि यसू नासरी के नाम के बिरुद्ध बहुत कुछ किया चाहिये। सो भी मैं ने यरूशलम में किया और प्रधान याजकों से अधिकार पाके बहुतेरे सन्तों को बन्दीगृह में डाला और उन के घात होने से मैं रीझ गया। और मैं ने बारम्बार हर एक मण्डली-घर में उन्हें ताड़ना दे देके बरबस उन से परमेश्वर की निन्दा करवाई और उन पर निपट उन्मत्त होके मैं बिराने नगरों तक भी उन्हें सताता था। जब मैं इसी बात के लिये प्रधान याजकों से अधिकार और आज्ञा पाके दमिश्क को चला जाता था तब दो प्रहर के समय में मैं ने मार्ग में क्या देखा कि स्वर्ग से एक ज्योति सूर्य्य से अधिक तेजवन्त मेरी और मेरे संगी याचियों की चारों ओर चमकी और जब हम सब लोग भूमि पर गिर पड़े तब मुझ से बोलती हुई मैं ने एक बाणी सुनी सो इब्रानी भाषा में मुझ से कहती थी कि हे साऊल हे साऊल तू मुझे क्यों सताता है आरों पर लात मारना तेरे लिये कठिन है। तब मैं ने कहा हे प्रभु तू कौन है वह बोला मैं यसू हूं जिसे तू सताता है अब उठ और खड़ा हो क्योंकि जो बातें तू ने देखीं और जो बातें मैं तुझ पर प्रगट करूंगा उन का सेवक और साक्षी तुझे ठहराने के लिये मैं तुझ पर प्रगट

हुआ हूं मैं तुझे इस देश के लोगों से और अन्यदेशियों से कि जिन के पास अब मैं तुझे भेजता हूं बचाऊंगा जिस्तें तू उनकी आंखें खोल दे कि वे अंधियारे से उजाले को और शैतान के वश में से परमेश्वर की ओर फिरें कि उन के पाप क्षमा किये जायें और जो मुझ पर विश्वास लाने से पवित्र हुए उन में वे अधिकार पावें॥

अकिला बोला। हे मित्र यह वृत्तान्त अत्यन्त आश्चर्य्य का है उस को सुन हम बड़े अचंभित हैं। जो आप ऐसे बुद्धिमान और गंभीर न होते तो अवश्य यह सन्देह हमारे मन में आता कि क्या जाने आप उन्मत्त हो गये हैं किस रीति से निश्चय हो सकता है कि उस ज्योति को और यसू को देख और उस का शब्द सुन आप स्वप्न में न थे॥

पुलूस बोला। नहीं तो हे मेरे मित्र यह हो नहीं सक्ता है और इस का मैं आप के लिये एक निश्चयपूर्वक लक्षण बताऊंगा जिस्से धोखा खाना अनहोना था। क्योंकि उस ज्योति के कारण मैं अंधा हो गया और अंधा हो अपने साथियों के पहुंचाये मैं दमिश्क में गया और तीन दिन लों अंधा ही रहा और कुछ न खाया न पीया। तीसरे दिन एक खिष्टीय शिष्य जिस को मैं न जानता था मेरे उस ही प्रभु की आज्ञा से मुझ कने आया और अपना हाथ मेरी आंखों पर धरके उन को खोल दिया और उस ने मुझ को बतलाया

कि प्रभु ने मुझ को दर्शन देके यह आज्ञा दिई नहीं तो डरके मारे मैं नहीं आ सक्ता इत्यादि। ऐसी दशा में धोखा खाना क्या अनहोना न था॥

प्रिसकिला बोली। ऐसा देख पड़ता है कि आप वह मनुष्य हैं जिस का मैं ने पहिले कुछ समाचार सुना अर्थात तरसुस का साऊल जो पहिले हमारे धर्म का बड़ा प्रचारक और खिष्टीय लोगों का बड़ा सतानेहारा था और पीछे लोगों ने कहा कि खिष्टीय शिष्य हो गया परन्तु कुछ बेर लों गुप्त रहा। अब आप एक दूसरा अर्थात् रूमी नाम पुलूस बतलाते हैं इस कारण मैं ने नहीं पहिचाना क्या ऐसा है कि नहीं है॥

पुलूस बोला। हां ऐसा तो है मैं वही पापी हूं जो ऐसा दुष्ट कर्म करता था परन्तु मैं ने अज्ञानता और अबिश्वासता की दशा में किया जो किया और इस कारण मुझ पर दया हुई। सो अब मैं उस प्रभु के प्रेम के बल से जो कुछ करता सो करता हूं और आसरा है कि उस की सहायता से जीवन भर ऐसाही करता रहूंगा॥

अकिला बोला। वह वर्णन जो आप ने अभी किया है उस प्रकार का है कि हम तुरन्त नहीं कह सकते हैं कि हम उसको किस रीति से मानते हैं। उस का तात्पर्य तो हमारे उन सब बिचारों के ठीक बिरुद्ध है जो हम ने अपने बाप दादों के धर्म के बिषय में किया है। इस दशा में हम उस को झटपट सच क्योंकर मान सकते। फिर भी आप तो अवश्य एक बड़ा ज्ञानी

धर्मी और सत्यवादी देख पड़ते हैं और वे बिचार जो हम ने अपने धर्मपुस्तक के तात्पर्य्य के विषय में किये हैं कदाचित भूलरहित नहीं हुए। इस कारण इन सब बातों पर ध्यान करना और परमेश्वर से अगवाई के लिये प्रार्थना करना चाहिये कि उस के अनुग्रह से निर्पक्ष हो सत्य बचन को जान सकें उस की इच्छा होय तो औसर पाय हम फिर सत्सङ्ग करें अब तो सूर्य्य अस्त हुआ और सांझ का भोजन सिद्ध है आप चलिये॥

इतने में ये तीनों मित्र छप्पर के ऊपर से उतर घर के अन्दर गये और सांझ का भोजन कर अपने अपने बिसतरों पर लेट गये॥

चौथा अध्याय।

मण्डलीघर का उपदेश और चार मित्रों का सत्सङ्ग।

पुलूस के उपदेश के कारण जो उस ने मण्डलीघर में किया था केवल उन तीन मित्रों के बीच संवाद नहीं हुआ बरन कितने एक और यहूदी और अन्यदेशी शिष्य जो उस काल वहां थे आपस में बड़ाही चर्चा और बाद बिबाद करने लगे। उन में से दो एक उस के अभिप्राय के विषय में प्रश्न करने को अकिला के घर पर भी आये। उन के आने से पुलूस अति प्रसन्न था और यद्यपि तम्बू बनाने में परिश्रमी हो रहा तथापि सामर्थ्य भर आनेहारों से संवाद करने को अवकाश पाया। अकिला तो नहीं चाहता था कि वह बनिहार की रीति कार्य्य करने में कष्ट उठाये और कई बार उससे निवेदन भी किया कि क्यों जी आप तो मेरे मित्र और पाहुन हैं ऐसा परिश्रम करना उचित नहीं है। परन्तु पुलूस ने इस प्रकरण में उस की बात न मानी और यह कहके कि मैं आप लोगों पर कुछ बोझ डालने नहीं चाहता हूं परिश्रम करता रहा। ऐसा देख पड़ा कि कार्य्य करते २ वह मन में शांति पाता और ध्यान भी करता गया और एकान्त में प्रार्थना और मित्रों से संवाद करते २ उस का शारीरिक और मानसिक बल नवीन होता गया। फिर केवल शनिवार को नहीं बरन जब भजनघर में मण्डली होती

थी वहां जाते २ वह और भी उपदेश करता गया जिस के कारण समस्त सुन्नेहारों के मन और भी अचंभित हुए ॥

एक शनिवार को ऐसा हुआ कि मण्डलीघर की विधि के अनुसार धर्मपुस्तक का वह पाठ पढ़ने पड़ा जो मूसा आचार्य्य की दूसरी अर्थात याचा नाम पुस्तक के १२ पर्ब्ब में लिखा है। उस पर्ब्ब में वर्णन है कि जब ईसवी संवत से पन्द्रह सौ बरस आगे इस्रायेली अर्थात यहूदी लोग मिसर देश में दास हो गये थे और परमेश्वर ने उन का छुटकारा करने को उन के पास मूसा आचार्य्य भेज दिया था और जब उस देश के राजा फिराऊन ने जिस के वे दास थे उन्हें जाने न दिया तो परमेश्वर ने उस देश के निवासियों पर नाना प्रकार की विपत्ति भेजीं। उन में दसवीं विपत्ति यह थी कि जो राजा इस्रायेली लोगों को जाने न देगा तो मृत्यु का दूत उन पास आय उन के समस्त पहिलौठों को पशु से ले मनुष्य लों और राजा से ले दास लों एक ही रात में नष्ट कर देगा। और मूसा ने इस्रायेलियों को ईश्वर की ओर से यह आज्ञा दिई कि अपने २ घर के समान एक २ मेमना लेओ और फसह अर्थात् पार जाने का मेमना मारो और एक मुट्ठी जूफा लेओ और उसे उस लोहू में जो बासन में है बोरके ऊपर की चौखट को और द्वार की दोनों ओर उसे छापो और तुम में से कोई बिहान लों अपने घर के द्वार से

बाहर न जावे क्योंकि परमेश्वर मिसर को मारने के लिये वार पार जायगा और जब वह ऊपर की चौखट पर और द्वार की दोनों ओर लोहू को देखे तब परमेश्वर द्वार पर से बीत जायगा और नाशक तुम्हारे घरों में जाने न देगा कि मारे। और अपने और अपने सन्तान के लिये इस बचन को नित्य मानियो इति। इस के अनुसार इस्रायेलियों ने किया और यों हुआ कि आधी रात को मिसर देश के सारे पहिलौठे क्या मनुष्य के क्या पशु के मारे गये और राजा उठा और वह और उस के सब सेवक और सारे मिसरी उठे और मिसर में बड़ा बिलाप था क्योंकि कोई घर न रहा जिस में एक न मरा। परन्तु इस्रायेलियों के घरों में कोई न मरा। इस पर मिसर के राजा ने इस्रायेलियों को अपने देश से निकाल दिया और आज लों यहूदी यही बिधि मानते आये। जब कि वे अपने पवित्र देश यहूदिया में थे तब वे इस पर्व को अपनी राजधानी यरूशलम के बड़े मन्दिर में बड़ी धूमधाम के संग मानते थे और सम्पूर्ण देश के सारे पुरुषों को उस पर्व में प्रति बरस उपस्थित होने की आज्ञा थी परन्तु जब वे अन्यदेशों में तितर बितर हो गये तो वे केवल उस की कितनी एक बिधियों को जैसे मेमना का बलि करना इत्यादि मान सके॥

जब ऊपर का पाठ हो चुका तो पुलूस पहिली रीति पर उपदेश करने को खड़ा हो हाथ से सैन कर कहने लगा॥

हे इस्रायेली भाइयो और ईश्वर से सारे डरनेवालो सुनो । हमारे पितरों का जो वर्णन उस पाठ में अब सुनाया गया सो केवल शारीरिक और लौकिक रीति से समझना न चाहिये । क्योंकि ये सब बातें जो उन पर पड़ीं दृष्टान्त थीं और वे हमारे चितावनी के कारण लिखी गईं जिन के आगे जगत के अन्त समय पहुंचे। अर्थात् उन बातों का एक आत्मिक दृष्टान्तपूर्वक उपदेशदायक अभिप्राय था क्योंकि जिस प्रकार से हमारे पितर मिसर देश में दास थे और उस देश के राजा से बड़ा कष्ट उठाते थे और अपने को उस की बरबस्ती से छुटा नहीं सकते थे इसी प्रकार से हम सब के सब और सारे मनुष्यजाति जन्म से पाप की दासता में फंसे हैं और पापात्मा हम पर बरबस्ती करता है और हम अपने को उस के बल से बचा नहीं सकते हैं । और जिस रीति से परमेश्वर ने हमारे पितरों पर दया कर उन के छुटकारा के लिये अपने विशेष आचार्य्य मूसा को उन के पास भेज दिया उसी रीति से उस ने इस अन्त समय में मनुष्यों को पाप के बल से छुड़ाने के लिये मूसा के समान बरन उस से भी बड़ा पराक्रमी और प्रतापी अपने प्रिय पुत्र यसू को संसार में भेज दिया है । जैसी मूसा ने आप भविष्यद्वाणी की रीति से कहा कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे कारण तेरे ही मध्य में से तेरे ही भाइयों में से एक आगमज्ञानी मेरे तुल्य उदय करेगा तुम उस की मानियो इति । फिर जिस

प्रकार से हमारे पितरों ने मूसा की आज्ञानुसार मृत्यु के दूत की मार से बचने के निमित्त एक निर्दोष निष्कलंक मेमना को बलि कर उस के लोहू से अपने चौखटों पर छाप मारी उसी प्रकार से वह जगत्राता यसू ईश्वर का विशेष निष्पाप मेमना हो जगत के पाप के कारण बलि किया गया। और अब उन को जो उस पर बिश्वास लाते हैं उस के लोहू के द्वारा से उद्धार अर्थात अपराधों का मोचन ईश्वर के अनुग्रह के धन के अनुसार मिलता है क्योंकि उस ने अपने लोहू के द्वारा से पवित्रस्थान में प्रवेश किया और हम पापियों के लिये अनन्त उद्धार प्राप्त किया और यों सनातन आत्मा के द्वारा अपने तईं ईश्वर के आगे अर्पण कर वह अपने लोहू से तुम्हारे मन को मृतुत कर्मों से शुद्ध कर सक्ता है कि तुम जीवते ईश्वर की सेवा करो इति॥

जब मण्डलीघर का भजन समाप्त हुआ और लोग बिदा हुए तो दो मनुष्य पुलूस और उस के मित्रों के संग अकिला के घर पर सत्सङ्ग करने को आये। वे तो कई बार इससे पहिले इसही रीति पर आये थे और उन सभों के बीच यसू ख्रीष्ट और उस की मुक्ति के विषय में बड़ी चर्चा हो रही थी। उन के नाम गायूस और स्तीफान थे। सम्भव है कि गायूस रूमी और स्तीफान यवन था और इस अनुभव पर उन का बर्णन लिखा जाता है। वे दोनों अपने सनातन मत

को त्याग कर यहूदी शिष्य हो गये थे और पुलूस के उपदेश और सत्सङ्ग के द्वारा उन के मन पर बड़ा गुण हो गया था। एक विषय में वे कुछ समान थे अर्थात बहुधा यहूदियों की अपेक्षा वे दोनों निर्पक्ष थे। इस कारण जब उन्हों ने अपने मनमता को वे अर्थ और निष्प्रमाण देखा तो सत पुरुषों की योग रीति पर उन्हों ने स्पष्ट रूप से ऐसा कहा। और जब यहूदियों के धर्म्मपुस्तक का ज्ञान और उन के भजन की उत्तमता उन पर प्रगट हुई तो उन्हों ने निष्कपट रीति से अंगीकार किया। परन्तु कई एक और विषयों में वे भिन्न थे। गायूस रूमी तो स्वाभाविक धर्ममय था और इस कारण कि अपनी मनमता में अपने अन्तःकरण के शुद्ध पवित्र करने का कोई यथायोग्य उपाय न पा सका उस ने जान लिया कि यह ईश्वर का धर्म और मुक्ति का मार्ग नहीं हो सक्ता है। और जब यहूदियों के धर्म्मपुस्तक में परमेश्वर एक सत्य पवित्र दयावान न्यायी पिता की रीति पर प्रगट हुआ तो तुरन्त उस को निश्चय हुआ कि यह तो सत्य मर्म्म ज्ञान है। दूसरा मनुष्य स्तीफान विशेष करके विद्यार्थी और सत्य का खोजक था उस की बुद्धि बली और तीक्ष्ण थी और उस ने अनेक यवनी विद्याओं का अभ्यास और साधन किया था। क्योंकि जिस रीति से कि हिन्दू शास्त्रों में षडदर्शन हैं उसी प्रकार से यवनों में नाना प्रकार के दर्शन और सम्प्रदाय थे। स्तीफान ने

इन सभों में बड़े यत्न से मूल तत्व ज्ञान का खोज किया था परन्तु किसी रीति से उस का मन उन की शिक्षा से सन्तुष्ट न हुआ। बाद बिबाद करने में तो वह निपुण था और सत्यार्थी होके सत्य मिथ्या का बिबेक भली भांति कर सका और इस कारण कि यहूदियों के धर्म्मशास्त्र में सत्यता के लक्षण ऐसे प्रकाशित हुये उस ने उस को ग्रहण करके उस से अपने मन की शांति पाई थी॥

जब वे अकिला के घर पर पहुंचे तो प्रिसकिला किसी गृह संबन्धी कार्य के लिये स्त्रियों के आंगन में गई पर पुलूस अकिला गायूस और स्तीफान सत्सङ्ग करने को छप्पर के ऊपर जा बैठे और उन के परस्पर प्रश्नोत्तर और बाद बिबाद इस रीति से हो चले अर्थात्

गायूस बोला। हे गुरु जी उस उपदेश से जो आज आप ने किया मेरा मन अति हर्षित हुआ क्योंकि अब मुझ को तनिक ज्ञान हो गया है कि मेरे अनगणित पाप किस रीति से क्षमा हो सकते हैं। इसही बात के विषय में मेरा बड़ा सन्देह और चिन्ता हो रही है क्योंकि मुझ को ऐसा देख पड़ा कि जब हमारे पाप सब के सब परमेश्वर ही के बिरुद्ध में किये गये थे अर्थात् हम ने उसही की आज्ञाओं को पालन नहीं किया बरन उल्लंघन किया तो ईश्वर को छोड़ कौन उन को क्षमा कर सकेगा। इस प्रकरण में किसी सृष्टि की सामर्थ

नहीं है कि ईश्वर के बदले क्षमा करे । फिर ईश्वर जो आप सत्य पवित्र और न्यायी है और पाप से अति घिन करता है और सम्पूर्ण सृष्टि के राज्य को सत्य न्याय के संग संभालता रहता है तो वह भी पाप को सेंत में क्योंकर क्षमा करेगा । जो राजा इस रीति से अपराधियों को बिना दंड दिये छोड़ देता तो राज की कैसी दशा हो जाती । परन्तु जो बर्णन आपने आज किया है उससे इस कठिन अन्धकार भेद पर तनिक उजियाला चमकने लगा है क्योंकि यदि वह समाचार जो आप सुनाते हैं सत्य और प्रमाणिक हो अर्थात् कि यसू खीष्ट पशुओं के बलिदान की रीति पर प्रायश्चित के लिये बलिदान हुआ तो वह जैसे आप कहते थे मानो ईश्वर का सत्य मेमना ठहरता है जो संसार के पाप को उठा ले जाता है । अब मुझ को स्पष्ट रूप से देख पड़ता है कि समस्त बलिदान जो मूसा की व्यवस्था के अनुसार स्थापन हुये और यहूदी लोग उन को मानते आये हैं सो बिशेष करके इस बड़े बलिदान के चिन्ह और लक्षण ठहरते हैं और उन का मूल तात्पर्य और सत्य प्रयोजन यसू खीष्ट ही में परिपूर्ण होता है ॥

पुलूस बोला । हे मेरे भाई आप ने मंगलसमाचार के तात्पर्य का ठीक बर्णन किया है निःसन्देह पवित्र आत्मा ने आप को शिक्षा दिई होगी नहीं तो ऐसा यथार्थ ज्ञान कहां से मिल सकता । इस पर सन्देह न

कीजियो कि यह वचन बिश्वास योग्य और सर्वथा ग्रहण योग्य भी है कि यसू ख्रीष्ट पापियों के बचाने के लिये जगत में आया और उन में मैं सब से बड़ा पापी हूं क्योंकि मैं आगे ईश्वर की निन्दा करनेहारा और उस के संतों का सतानेहारा और अंधेर करनेहारा था परन्तु मुझ पर इस लिये दया हुई कि मुझ बड़े पापी पर यसू ख्रीष्ट अपना सब धीरज दिखावे जिस्तें उन के लिये जो आगे उसपर अनन्त जीवन के लिये बिश्वास लावें दृष्टान्त बनूं॥

स्तीफान बोला। मेरी बुद्धि में आता है कि जो मेरे मित्र गायूस ने यहूदियों के बलिदानों के विषय में कहा है सो क्या अन्यदेशियों के बलिदानों का ठीक बर्णन ठहरता है कि नहीं। क्योंकि मैं ने सुना है कि बहुधा जातियों में बलिदान चढ़ाने की रीति सनातन से चली आई॥

पुलूस बोला। अन्यदेशी लोग जो कुछ बलि चढ़ाते हैं सो परमेश्वर के लिये नहीं परन्तु देवों के लिये चढ़ाते हैं परन्तु कदाचित इस रीति का आरंभ परमेश्वर की ठहराई हुई रीति से हुआ हो जो परम्परा से उन को मिली और वे बिना समझे मानते आये हैं। और यद्यपि वे इस का तात्पर्य्य भली भांति नहीं समझते तथापि बलि करके वे दिखाते हैं कि पाप का योग दण्ड मृत्यु है और यह भी कि पापी का प्रतिनिधि हो सक्ता है और यों एक प्रकार से उन के भी बलिदान

यसू ख्रीष्ट के सत्य प्रायश्चित के लक्षण ठहर सक्ते हैं॥

स्तीफान बोला। मेरे मन में ठीक नहीं आता है कि यसू ख्रीष्ट का प्रायश्चित्त की रीति से बलि होना किस कारण अवश्य था। क्या परमेश्वर अन्यदेशी देवताओं के तुल्य है कि किसी जीवते के कष्ट और मृत्यु से प्रसन्न हो। अथवा यसू की मृत्यु में क्या विशेष गुण था कि उस के पुण्य प्रताप से औरों के पाप कट जायें॥

पुलूस बोला। यह तो स्पष्ट और साक्षात बात है कि पाप का फल मृत्यु है परमेश्वर ने ऐसा ठहराया और मनुष्य का अन्तःकरण साक्षी देता है कि यह प्रबंध योग्य यथार्थ है। इस के अनुसार सारे मनुष्य मरते जाते क्योंकि सब पापी हैं यूं मृत्यु का डंक पाप है और पाप का बल व्यवस्था है अर्थात परमेश्वर की व्यवस्था पाप का बल है क्योंकि उस के उल्लंघन करने में पाप होता है। फिर यसू ख्रीष्ट का मरण इस रीति से और इस कारण से हुआ कि उस ने उस व्यवस्था को सम्पूर्ण रूप से प्रतिपालन किया और यद्यपि मनुष्य उस की इस करणी से यहां लों क्रोधी हुये कि उन्होंने उस को घात भी किया तथापि वह मरने लों हां क्रूस की मृत्यु लों आज्ञाकारी रहा। परन्तु ऐसा करके वह मनुष्य-जाति का प्रतिनिधि था और यूं व्यवस्था का जो अपमान मनुष्य के पाप से हो गया था सो उस के प्रति-

पालन के द्वारा सन्मान हो गया। फिर जब व्यवस्था का सन्मान हुआ तो पाप कहां रहा। इस रीति से यसू ख्रीष्ट ने उन सभों के लिये जो उस पर बिश्वास लाते हैं अर्थात जो इस अनमोल दान को ग्रहण करते हैं पापमोक्षण प्राप्त किया है और मरने ही के द्वारा से प्राप्त किया क्योंकि मरने के बिना उस की आज्ञा पालन समाप्त और परिपूर्ण न होती। और यही कारण है कि ख्रीष्ट का प्रेम हमें बस कर लेता है क्योंकि हम ने यह बिचार किया कि यदि सभों के लिये एक मरा तो वे सब मरे और वह सभों के लिये इस कारण मरा कि जो जीवते हैं सो अब अपने लिये न जीवें बरन उस के लिये जो उन के निमित्त मरा और जी उठा॥

अकिला बोला। अब मेरे स्मरण में आया कि दाऊद के एक गीत में इसी प्रकार का तात्पर्य मिलता है अर्थात् ४०वें गीत में दाऊद परमेश्वर से कहता है कि बलि और भेंट से तू प्रसन्न नहीं तू ने मेरे कान छेदे बलिदान की भेंट और पाप की भेंट को तूने नहीं चाहा तब मैंने कहा देख मैं आता हूं पुस्तक के पत्रों में मेरे विषय में लिखा है हे मेरे ईश्वर मैं तेरी इच्छा मानने से आनन्दित हुआ तेरी व्यवस्था मेरे मन के भीतर है इति। इन बातों से वह तात्पर्य निकलता है जो आप ने अभी बतलाया अर्थात् कि बलिदान इत्यादि का मूल अर्थ है अपनी इच्छा को त्याग ईश्वर की

इच्छा से प्रसन्न और आनन्दित होना और उस के अनुसार आज्ञाकारी होना । क्या यह इस का अर्थ नहीं है ॥

पुलूस बोला । हां जी और समूएल आचार्य्य ने भी पहिले राजा साऊल से यही कहा कि क्या परमेश्वर बलिदान की भेंटों और बलि से ऐसा आनन्दित है जैसे परमेश्वर के शब्द के मानने से । देखो मान्ना बलिदान से और सुनना मेढ़ों की चिकनाई से उत्तम है । क्योंकि फिर जाना टोने के पाप के तुल्य है और बुराई और ढीठाई मूर्तिपूजा के समान । फिर दाऊद के गीत का वह बचन जो आप ने अभी कहा सो यसू खीषृ ही के विषय में लिखा है और उस की एक स्पष्ट भविष्यद्वाणी भी है क्योंकि वह बचन उस के सारे कार्यों और बचनों में और उस के जीवन मरण और पुनरुत्थान में परिपूर्ण हुआ ॥

अकिला बोला । हे गुरु आप का वह बचन अर्थात् कि यसू का प्रेम उस के शिष्यों को बस कर लेता है सो मेरी पत्नी के दो एक बचन के ठीक अनुसार देख पड़ता है क्योंकि उस ने मुझ से कहा है कि यदि आप का बर्णन प्रमाणिक ठहरे तो अवश्य हम सभों को उचित है कि बिना बिलम्ब किये ऐसे प्रेमी कृपालू दयावन्त प्रभु के शिष्य होवें । जब उस ने हमारे लिये अपना प्राण भी दिया तो क्या हम उस को प्यार न करें और उस की आज्ञा न मानें । हे मेरे मित्रो

गायूस और स्तीफान आप लोगों के मन में कैसा आता है॥

गायूस और स्तीफान बोले। अवश्य ऐसा करना तो बहुत ही उचित और योग्य है॥

पुलूस बोला। ईश्वर का धन्यवाद हो कि उस का अनुग्रह इस रीति से तुम सभों को प्राप्त हुआ बड़े आनन्द के संग मैं तुम को प्रभु के नाम से शिष्यों की रीति ग्रहण करूंगा। प्रभु की आज्ञा है कि जो विश्वास लाके मुझे अंगीकार करता है सो जलसंस्कार पावे। ईश्वर की इच्छा होय तो कल के दिन प्रभु की आज्ञानुसार तुम्हारा जलसंस्कार करेंगे। परन्तु अब मेरा मन पवित्र आत्मा के अनुग्रह से और आत्मिक हर्ष से ऐसा परिपूर्ण हुआ कि इस बड़े आशीष के लिये ईश्वर का धन्यवाद करना अवश्य पड़ता है। हम सब के सब घुटने टेकके उस की प्रार्थना करें॥

अकिला बोला। आप क्षमा कीजिये पहिले मैं अपनी पत्नी को बुलाऊं कितने दिनोंसे उस की यही इच्छा थी वह भी इस धन्यवाद कर्म में हमारी साक्षी हो॥

इस पर अकिला ने अपनी पत्नी प्रसकिला को बुलाया और ये सारे मनुष्य घुटने टेकके ईश्वर का धन्यवाद करने लगे। इस के उपरान्त यह ठहराके कि कल सब फिर एकट्ठे होवें गायूस और स्तीफान विदा हुए और शेष मिल सांझ का भोजन करके विश्राम करने को अपनी २ कोठरी में गये॥

पांचवां अध्याय।

खिष्टीय जलसंस्कार भाइयों का समाचार और प्रभु का दिन और बियारी।

जब पुलूस ने कहा कि खिष्टीय शिष्यों को जलसंस्कार पाना चाहिये तो उस के चार मित्र कुछ न कुछ जानते थे कि इस का क्या अभिप्राय है क्योंकि यहूदियों की यह रीति थी कि अन्यजातीय शिष्योंको जलसंस्कार देके ग्रहण करते थे। इस रीति से वे प्रगट करते थे कि नवीन शिष्य अपनी पुरातन मनमता और व्योहारों को त्यागकर उन की मलीनता से मानो धोये जाते हैं और नवीन जीवन का आरंभ करते हैं। इस के अनुसार यसू के प्रगट होने से पहिले यूहन्ना नामे स्नानकर्त्ता अर्थात् बपतिसमा देनेहारा प्रभु का मार्ग सिद्ध करने को जलसंस्कार देते हुए प्रकाशित हुआ। और इस के पीछे यसू खीष्ट ने भी अपने शिष्यों के लिये वैसी ही विधि ठहराई। परन्तु खिष्टीय जलसंस्कार का औरों के अपेक्षा भारी अभिप्राय है क्योंकि उस में केवल नवीन धर्म का अंगीकार करना अभिप्रेत नहीं है बरन नवीन जन्म पाना अर्थ है। इस प्रकरण में यसू खीष्ट ने आप आज्ञा किई है कि मैं तुझ से सच २ कहता हूं यदि मनुष्य जल से और आत्मा से उत्पन्न न होवे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता है इति। इस का सम्पूर्ण अर्थ खोलना मनुष्य के लिये कठिन है क्योंकि उस में अनेक भारी २ बातें

समाप्त हैं। परन्तु दृष्टान्त की रीति से कदाचित इस का तनिक ज्ञान बिदित हो सकता है क्योंकि मनुष्य का शारीरिक जन्म और जीवन उसके आत्मिक जीवन का दृष्टान्त हो सकता है जैसे यसू खीष्ट ने कहा कि जो शरीर से उत्पन्न हुआ है शरीर है और जो आत्मा से उत्पन्न हुआ है सो आत्मा है इति। निदान मनुष्य शारीरिक माता पिता से जन्म लेके शारीरिक जीवन और स्वभाव पाता है परन्तु उस की मूल प्रकृति तो आत्मिक भी है केवल यह है कि उस का आत्मा पाप के कारण मुरदा अर्थात् शरीर के बस हो गया फिर जब उस का आत्मा शरीर से छूट जाता है तो शरीर भी मर जाता है। उस के आत्मिक जन्म और जीवन भी इस के अनुसार है क्योंकि मनुष्य के आत्मा में पवित्र आत्मा के प्रवेश होने से मनुष्य आत्मिक जन्म पाता है और जब लों पवित्र आत्मा उस के संग संयुक्त रहता है तो वह आत्मिक जीवन रखता है जब पवित्रात्मा भिन्न हो जाता है तब मनुष्य का आत्मा मर जाता है॥

अब खिष्टीय जलसंस्कार में पवित्र आत्मा का लक्षण जल है और खिष्टीय शिष्य जलसंस्कार पाके अंगीकार करते हैं कि मेरे लिये पवित्र आत्मा से नवीन आत्मिक जन्म पाना प्रयोजन है और मैं उसे पाने का अभिलाषी हूं इस कारण यसू खीष्ट की आज्ञानुसार मैं उस का लक्षण भी अपने ऊपर लेता हूं और यों मैं सभों पर प्रगट करता हूं कि इस अनमोल दान को प्राप्त करने

के लिये मैं केवल यसू ख्रीष्ट के प्रायश्चित्त पर विश्वास लाता हूं और मैं उसकी सहायता से सदा सर्बदा उस ही का शिष्य होता रहूंगा ॥

ख्रिष्टीय लोगों में इस धर्म विधि के मानने के दो एक प्रकार प्रचलित हैं क्योंकि ख्रिष्टीय धर्म में ऐसी रीतों के शारीरिक डौल का बड़ा ध्यान अथवा प्रभाव नहीं होता है। कितने तो जल को शिष्यों पर छिड़क देते कितने उंडेलते कितने शिष्यों को जल में डुबो देते हैं। सम्भव है कि प्रथम काल में बहुधा शिष्य नदी वा ताल के पास जाके उसके जल में अथवा उस के तट पर खड़े हुये और धर्म्मोपदेशक ने उस का जल लेके शिष्य के सिर पर उंडेल दिया और यह भी देख पड़ता है कि जब कोई गृहस्थ विश्वास लाके ख्रिष्टीय शिष्य हो गया तो बहुधा उस के घराने वाले भी उस के संग जलसंस्कार लेने में साझी हुये ॥

ऊपर के सत्सङ्ग के दूसरे दिन रबिवार था और इस कारण कि उस दिन में यसू ख्रीष्ट मृतकों में से जी उठा ख्रिष्टीय शिष्य उस को पवित्र जानके और प्रभु का दिन करके मानते आये हैं। इस हेतु से पुलूस जब से कि अकिला के पास रहने लगा तो रबिवार को तम्बू बनाने में परिश्रम नहीं करता था और यों आनेहारों से संवाद करने का अवकाश भी पाता था। उस रबिवार के भोर को गायूस और स्तीफान अपनी बाचा के अनुसार अकिला के घर पर आये

और स्तीफान अपने घराने के लोगों को भी संग ले आया। उस कराड़े में जिस की जड़ पर कोरिन्तुस नगर बना था अति सुन्दर जल का एक सोत था जिस को यवन लोग पायरीनी कहते थे। सोत से एक धारा नगर के इर्द गिर्द बहके कोरिन्तुस की खाड़ी में जा गिरी। इस धारा के तट पर ये सारे मित्र अर्थात् अकिला और उस की पत्नी प्रिसकिला गायूस और स्तीफान और उस का घराना पुलूस के संग गये और नगर के कितने मनुष्य यह दशा देख उन के साथ हो लिये। उस से पहिले कभी उन सिवानों में खिष्टीय जलसंस्कार किसी को दिया नहीं गया था और यवन लोग नई २ बात के सुनने अथवा देखने में अत्यन्त फुरतीले थे। यों देखनेहारों का एक बड़ा समूह हो गया और उन के सन्मुख पुलूस ने उस धर्मबिधि का अर्थ खोल और मंगलसमाचार का उपदेश कर सभों के देखते सुनते ही अपने उन मित्रों को खिष्टीय जलसंस्कार दिया। इस रीति से नगर निवासियों में भी पुलूस के समाचार की चरचा होने लगी और प्रभु का बचन उन के बीच फैलता गया। परन्तु जब यह सन्देश मण्डलीघर के यहूदियों को मिला कि हमारे इतने जन जलसंस्कार पाके खिष्टीय शिष्य हो गये हैं तो उन में कितने मनुष्य अत्यन्त बिस्मित और क्रोधित हुये क्योंकि उन्हों ने समझा कि यह पुरुष पुलूस हमारा सनातन का धर्म बिगाड़ने को आया है। सन्देह नहीं है कि

कितनों में ईश्वर ही के लिये उत्साह तो था पर ज्ञान के अनुसार नहीं। नहीं तो समझ लेते कि केवल सनातन से होना किसी धर्म को ईश्वर का अथवा सत्य प्रमाणिक ठहरा नहीं सकता क्योंकि अनेक बातें सनातन से होती हैं जो परीक्षा करने से बरन विना परीक्षा किये भी साक्षात मिथ्या और दुष्ट हैं। इस दशा में कोई बुद्धिमान और ज्ञानी किसी बात को विशेष करके किसी धर्म को केवल इस कारण से कि सनातन का है ग्रहण नहीं करेगा। क्योंकि धर्म ऐसी वस्तु है कि जो सत्य ईश्वर का न हो तो अवश्य अति दुष्ट और प्राणनाशक होगा। फिर बिना परखे और जांचे कोई मनुष्य निश्चय नहीं कर सकता है कि कौन धर्म सत्य है और कौन मिथ्या है॥

कई एक और यहूदी भी थे जो पुलूस के उपदेश पर ध्यान करते २ और अपने धर्मपुस्तक के सत्य तात्पर्य को जांचते २ कुछ ऐसा बिचार करने लगे थे कि कदाचित यह नया समाचार सत्य और प्रमाणिक होवे। एक ऐसा मनुष्य कृस्पुस नामे था वह मण्डलीघर का प्रधान बड़ा प्रतिष्ठित और आदरयोग था। जब से कि उस ने पहिली बार पुलूस को मण्डलीघर में उपदेश करने के लिये बुलाया था उस ने उस के बचनों पर बहुत ही ध्यान किया था और धर्मपुस्तक के बचनों से परीक्षा करके वह अनुमान करने लगा था कि दोनों बचन आश्चर्यरूप से मिलते हैं। और कई बार

उस ने पुलूस के संग इस विषय में संवाद भी किया था। कदाचित वह गायूस और स्तीफ़ान के साथ जल-संस्कार भी लेता परन्तु उस का एक परममित्र था जो उस को ऐसा करने से रोक रखता था। यह भी मण्डलीघर का एक प्रधान था क्योंकि कभी एक मण्डलीघर के अनेक प्रधान थे। इस मनुष्य का नाम सोस्थनीज था और वह भी एक धर्मी और मान्यपुरुष था परन्तु एक विषय में अपने मित्र कृस्पुस से भिन्न था अर्थात् बड़ा पक्षपाती और उत्साही था। निदान जैसा पुलूस प्रभु के दर्शन पाने से पहिले था वैसा ही यह मनुष्य सोस्थनीज भी था और जो उस की सामर्थ होती तो वह ऐसा भी करता। इस कारण उस ने बार २ कृस्पुस को घुड़की भी दिई थी कि क्यों जी ऐसे मनुष्य को उपदेश करने के लिये क्यों बुलाते हो ऐसा तो कभी नहीं चाहिये। वह मूसा और समस्त पितरों और प्राचीन आचार्य्यों के वचनों को झुठलाता है और हमारे पवित्र व्यवस्था के अर्थ को उलटा देता है। यदि वह फिर हमारे मण्डलीघर में एक बचन भी सुनाने पावे तो अवश्य मैं उस को वहां से निकाल दूंगा इति। फिर जब उस ने सुन लिया कि अकिला और स्तीफ़ान और उन के घराने और गायूस भी खिष्टीय शिष्य हो गये तो वह एक सीढ़ी के समान हो गया और कृस्पुस के घर पर जाके पुलूस का और उस के सारे बचनों और कर्मों का धिक्कार करने लगा।

ऐसे वचनों को सुन कृस्पुस अति खेदित हुआ और बड़ी नम्रता और सुशीलता के संग सोस्थनीज को समझाने लगा। परन्तु वह एक वचन न सुनता बरन कृस्पुस को छोड़ उन यहूदियों के पास जो पुलूस के उपदेश से अप्रसन्न थे गया और उन के मनों को उभारने लगा॥

इतने में पुलूस और उस के साथी जलसंस्कार करने के पीछे अकिला के घर पर लौट आते थे और जब वे वहां पहुंचे तो उन्हों ने देखा कि पुलूस के दो मित्र जो थिसलोनिकी और बिरिया में पीछे रह गये थे अभी आ गये। उन को देख पुलूस अत्यन्त आनन्दित और आह्लादित हुआ और आनन्द के मारे चिल्लाके परमेश्वर का धन्यवाद बड़े शब्द से करने लगा। उस के साथी भी उस के समान बड़े आत्मिक आनन्द से परिपूर्ण थे क्योंकि उन को ऐसा देख पड़ा कि अब पवित्र आत्मा के अनुग्रह से यसू ख्रीष्ट पर विश्वास ला उस को प्यार कर उस के शिष्य हो हम एक पवित्र धन्यवाद मण्डली में साझी हो गये जिस का पिता परमेश्वर है और स्वर्गीय पवित्र दूत और सारे विश्वासी प्रेमी संत लोग उस के साझी हैं। इस कारण पहिले सब के सब एक ही संग अकिला के घर में जा धर्म्मपुस्तक का कुछ भाग पढ़ और दाऊद का गीत गा उन्हों ने प्रार्थना के संग परमेश्वर का धन्यवाद किया। इस पर सभों के मन प्रभु के प्रेम के कारण एक अति गम्भीर कोमल गहिरा आनन्दपूर्वक प्रेम से परिपूर्ण हो

गये । इस के उपरान्त भेार का तनिक भेाजन कर आपस में सत्सङ्ग करने केा अकिला के घर की बड़ी केाठरी में बैठ गये ॥

पुलूस के देा मित्रेां के नाम जेा आ पहुंचे थे सेा सीलास अर्थात् सिलवानुस और तिमेादेउस थे । सीलास यहूदियेां के प्रधान नगर यरूसलम की ख्रिष्टीय मण्डली में एक प्रसिद्ध मनुष्य था और पुलूस के संग देा एक यात्राओं में गया था । उस के नाम से जेा रूमी था संभव है कि वह एक परदेशी यहूदी था । तिमेादेउस का पिता यवन था पर उस की माता यहूदिन थी । उस की जन्मभूमि वह देश था जेा अकिला और पुलूस के देशेां के बीच में पड़ा था । उस के नगर लिस्त्रा में पुलूस उपदेश करने केा गया और वहां उस ने एक मनुष्य केा जेा जन्म का लंगड़ा था आश्चर्यित दैवीय शक्ति से चंगा किया । इस पर नगर निवासी पुलूस केा देवता जान उस की पूजा करने लगे परन्तु पुलूस ने करने न दिया । इस के उपरान्त यहूदीय बैरियेां ने उन के मनेां केा ऐसा उभारा कि उन्हेांने पुलूस केा नगर के बाहर घसीटके पथराव किया परन्तु मार नहीं डाला क्येांकि जब लेागेां ने उस के पास खड़े हेा समझा कि मर गया है तेा वह उठके चला गया । कितने एक दिन पीछे जब पुलूस दूसरी बार उस नगर केा गया तेा उस ने इस युवा तिमेादेउस केा एक गुणवान ख्रिष्टीय

शिष्य देख अपने संग यात्रा में ले गया । उस की नानी लोइस और उस की माता यूनिकी दोनों धर्मी और विश्वासी यहूदिन थीं और उन्होंने तिमोदेउस को बालकपन ही से धर्म्मपुस्तक की शिक्षा भली भांति दिई थी । इस वृत्तान्त से स्त्रियों की शिक्षा करने का एक बड़ा लाभ देख पड़ता है कि जब वे आप शिक्षा पातीं तो अपने बालकों को भी सिखला सकती हैं । इस ही द्वारा से तिमोदेउस एक धर्मी बुद्धिमान सुशील युवा हो गया और जब पुलूस के उपदेश से ईश्वर का सत्य ज्ञान उस के सुनने में आया तो वह जांचने और ग्रहण करने पर सिद्ध था । पुलूस उस को अपना धर्मपुत्र जान बहुत प्यार करता था और उस की भेंट और संसर्ग से सदा हर्षित रहा । फिलिपी और थिसलोनिकी और बिरिया यवनी नगरों में जब पुलूस उपदेश करने को गया ये दोनों मित्र उस के संग थे और फिलिपी में पुलूस और सीलास कोड़ों से मारे जाके बन्दीगृह में डाले गये थे फिर आश्चर्यरूप से छुड़ाये गये । पुलूस ने दोनों को पीछे छोड़ दिया था जिस्से वे उन नगरों के ख्रिष्टीय भाइयों का उपकार कर उन के कुशल क्षेम का समाचार उस के पास ले आवें इस कारण वह पहिले इस विषय में उन से यों प्रश्न करने लगा ॥

पुलूस बोला । ईश्वर का धन्य हो कि तुम मेरे भाई सीलास और मेरे पुत्र तिमोदेउस कुशल से यहां

आ पहुंचे हो। आसरा है कि उन नगरों में जहां हम ने प्रभु का बचन सुनाया सारे खिष्टीय भाई ईश्वर के अनुग्रह से प्रभु के प्रेम और पवित्र बिश्वास में स्थिर हो भली भांति बढ़ते चले जाते हैं। उन की दशा का समाचार सुनाइये॥

सीलास बोला। हां जी प्रभु की दया से वे सब भले हैं और प्रभु के नाम से आप को बहुत ही प्रेम का प्रणाम भेज दिया है। फिलिपी के भाइयों ने चन्दा भी करके आप के लिये कुछ थोड़ा सा उपकार भेज दिया है क्योंकि उन की बड़ी इच्छा थी कि उन के सत्य प्रेम का कोई लक्षण आप पर प्रगट हो जावे॥

पुलूस बोला। उन के प्रेम का कोई प्रमाण हमारे लिये तो तनिक भी अवश्य नहीं था क्योंकि मैं भली भांति जानता हूं कि वे मुझ को प्यार करते हैं जैसा मैं उन को प्यार करता हूं उन के विषय में ऐसा समझना मुझे उचित है इस कारण कि मेरे सारे यत्नों और कष्टों में वे सब मेरे संग अनुग्रह के भागी थे। फिर भी यह उन का दान मेरे लिये और प्रभु के लिये अत्यन्त ग्राह्य है मानो सुगन्ध अथवा बलिदान जो ईश्वर को भावता है। मेरा ईश्वर अपने धन के अनुसार महिमा सहित यसू खीष्ट में सब कुछ जो उन को आवश्यक हो भरपूर कर देवे अब बतलाइये कि थिसलोनिकी के भाइयों की क्या दशा है॥

तिमोदेउस बोला। ईश्वर के अनुग्रह से उन की

भी भली दशा है उन का बिश्वास स्थिर और उन का प्रेम अटल है और वे आप का शुभ स्मरण सदा करते हैं और निपट चाहते हैं कि आप को देखें। उन में एक दोष तो देख पड़ता है अर्थात् कोई २ ऐसे हैं जो इस बिचार पर कि प्रभु दोबारा अभी आने-वाला है अनरीति से चलते और कुछ काम नहीं करते परन्तु औरों के काम में हाथ डालते हैं॥

पुलूस बोला। उन सब भाइयों के लिये भी मैं परमेश्वर का धन्यबाद सर्वदा करता हूं और अपनी प्रार्थनाओं में उन का स्मरण करता हूं और उन के बिश्वास के कार्य को और प्रेम के परिश्रम को और आसरा की धीरता को जो हमारे प्रभु यसू ख्रीष्ट के लिये है स्मरण करता हूं। परन्तु यह जो दोष उन की चाल में देख पड़ता है सो बड़े शोक की बात है और उन के भ्रम को ठीक करने के निमित्त उन के पास एक शिक्षापत्र लिखना होगा। उन का सम्पूर्ण वृत्तान्त औसर पाके मैं फिर पूछूंगा परन्तु अब ये तीनएक नये भाई और बहिन प्रभु के अनुग्रह से बिश्वास लाके हमारे संग भागी हो गये हैं। एक का नाम स्तीफान है और उस नाम से एक प्रिय संत का स्मरण जो प्रभु के बिश्राम में प्रवेश कर चुका है मेरे मन में आता है कि जब प्रभु का पहिला साक्षी स्तीफान का लहू बहाया गया मैं भी वहां खड़ा हो उस के घात होने से संतुष्ट था और उस के बधिकों के बस्त्रों की

रखवाली करता था। उस ने उस समय प्रभु को देखा जैसा कि मैं ने भी पीछे देखा और अब इस भाई ने आत्मिकरूप से उस को देखा है और उस पर विश्वास लाया है। क्या ही धन्यवाद की बात है कि हम सब के सब उस के अनुग्रह और अनादि अनन्त प्रेम के अधिकारी हो गये हैं। आज का दिन तो उस का विशेष दिन है जिस में वह मृतकों में से जी उठा इस कारण हम को उचित नहीं है कि शारीरिक कार्यों में अपना समय गंवावें अन्य ख्रिष्टीय भाइयों की रीति पर हम प्रभु की स्तुति और भजन में और उस के विषय का सत्सङ्ग करने में यह सारा दिन काटें॥

इस पर सारे भाइयों ने जो वहां थे अपनी प्रसन्नता को प्रगट कर यों ठहराया कि उसी दिन से आगे को अकिला और गायूस और स्तीफान और उन के घराने पुलूस सिलवानुस तिमोदेउस सहित ख्रिष्टीय भजन प्रार्थना और सत्सङ्ग के लिये प्रति रबिवार को अकिला के घर पर इकट्ठे होवें और जो और भी मनुष्य उन के संग आ मिलें तो और भी भला होगा। उस पहिले रबिवार को जिस में ये सारे भाई इकट्ठे हो गये थे पुलूस ने उन को ख्रिष्टीय धर्म के एक और पवित्र नियम का जो प्रभु का भोजन अथवा बियारी कहलाता है वर्णन किया और भाइयों ने उस के विषय में उस से प्रश्न भी किया उन का परस्पर संवाद इस रीति से हो चला अर्थात्

गायूस बोला । हे भाइयो मेरी बुद्धि में ऐसा आता है कि हम लोगों की यह सभा जो प्रभु यसू खीष्ट के नाम पर स्थापित हुई उस धन्य प्रभु के आश्चर्य पराक्रम और दैवीय शक्ति का एक प्रसिद्ध लक्षण ठहरता है क्योंकि उस में हम भिन्न २ जाति और देश के लोग सब के सब एक ही हो जाते हैं और उस को अपना प्रभु और महाराजाधिराज आनन्द से ग्रहण करते हैं। देखो हमारा भाई स्तीफान जो जात का यवन है सो यवनों ने कई बार यहूदियों को सङ्ग्राम में जीत लिया है । फिर हम जो रूमी हैं हमारे समजातियों ने यहूदी और यवन दोनों को जीत लिया है और इन दिनों सब के ऊपर राज्य करते हैं । परन्तु अब हम यवन और रूमी भाई आनन्द से अंगीकार करते हैं कि एक जो यहूदिन से उत्पन्न हुआ अर्थात् यसू खीष्ट ने हम दोनों को जीत लिया है और हम यहूदी यवन रूमी सब के सब उस में एक ही हो आपस में भाइयों की रीति प्रेम रखते हैं । इस के अनुसार सम्पूर्ण जातिगण केवल उसी प्रभु पर विश्वास लाकर उस में संयुक्त हो जावें तो परस्पर सब के सब भाई हो सकते हैं ॥

पुलूस बोला । सच है भाइयो कि जितनों ने प्रभु पर विश्वास ला अपने पुरातन स्वभाव और व्यवहारों को उतार फेंक नवीन प्रकृति को जो अपने सृजनहार के स्वरूप पर ज्ञान में नवीन बनती जाती है

पहिन लिया सो सब के सब उस प्रभु में एक ही हो जाते हैं क्योंकि उस में न यवन न यहूदी न खतना न खतनाहीन न म्लेच्छ न स्कूती न दास न निर्बन्ध हैं अर्थात् ऐसे २ सारे लौकिक और शारीरिक भेद और संबन्ध भी यसू खीष्ट में लोप हो जाते हैं। क्योंकि वह किसी जाति का पक्ष नहीं करता है वह सभों का प्रतिनिधि हो सभों के लिये मुआ और यों सभों का बड़ा भाई और मुक्तिदाता ठहरता है। फिर यद्यपि वह ईश्वर का पुत्र हो सभों का सृष्टिकर्त्ता और स्वामी भी है तथापि अपने प्रेम के बल से वह आप ही मनुष्य का पुत्र और सभों का दास भी बना॥

अकिला बोला। गायूस ने जो अभी कहा अर्थात् कि वह आप रूमी हो और यवन भाई स्तीफान भी दोनों एक यहूदिन के पुत्र के आधीन हो गये और कि यह प्रभु का एक बड़ा जय है सो मैं जानता हूं कि हम यहूदियों के पक्ष को आधीन करना उस से भी बड़ा जय है। देखो प्रभु का बिशेष प्रेरित पुलूस और सीलास भाई और मैं सब के सब पक्के यहूदी थे और अपनी जात के बल से पक्षपाती और उपद्रवी थे और समस्त अन्य जातियों को तुच्छ जानते थे परन्तु अब एक कोमल दीन दयावन्त प्रभु ने अपने प्रेम की प्रबलता से हम को जीत लिया और हमारे अभिमान और पक्ष को दबा लिया है॥

पुलूस बोला। यह तो निःसन्देह प्रभु के पराक्रम

का एक विशेष प्रमाण है कि प्रेम के बल से वह समस्त भावनाओं और तरकों को और प्रत्येक ऊंची वस्तु को जो ईश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उभरती है खण्डन कर समस्त बिचारों को भी अपने आधीनता में कर लेता है। सच है कि सम्पूर्ण सृष्टि में प्रेम के तुल्य कोई वस्तु बलवन्त नहीं है और ईश्वर आप प्रेम है और यसू ख्रीष्ट उस की महिमा का झलकता हुआ तेज है। और उस की आज्ञा है कि जिस प्रकार से मैं ने तुम को प्यार किया है तुम भी परस्पर प्रेम रखो। फिर इस विषय में उस ने एक पवित्र नियम भी ठहराया है कि जिस से हमारा उस में और आपस में एक ही होना अत्यन्त योग्य रीति से प्रकाशित होता है। सो ख्रिष्टीय भाई उस को प्रभु की बियारी कहते हैं॥

स्तीफान बोला। हे गुरु जी वह नियम किस प्रकार का है और प्रभु ने उस को किस रीति से और किस अभिप्राय से स्थापन किया। दया करके इस का वृत्तान्त कहिये॥

पुलूस बोला। जो बात कि मैं ने प्रभु से पाई सो अब मैं तुम को भी सोंपता हूं कि प्रभु यसू ने जिस रात कि वह पकड़वाया गया रोटी लिई और धन्यवाद करके तोड़ी और कहा लेओ खाओ यह मेरी देह है यह तुम्हारे लिये तोड़ी जाती है तुम लोग मेरे स्मरण के लिये यह किया करो। उसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा यह

कटोरा वह नया नियम है जो मेरे लहू से है जब २ तुम पीओ तब २ मेरे स्मरण के लिये यों करो॥

स्तीफान बोला। प्रभु किस रात पकड़वाया गया और उस समय उस की क्या दशा थी। आप बतलाइये॥

पुलूस बोला। रात वह थी जिस में प्रभु अपने बारह प्रेरितों के संग यरूसलम में पार जाने का पर्व्व मानता था। बारह प्रेरितों में एक यहूदा इसकरयूती ने लोभ के मारे उस को बैरियों के हाथ में पकड़वाया। जब पर्व्व का भोजन हो चुका था तब प्रभु ने उस को जता दिया और वह अपना दुष्ट कर्म करने को उन में से बाहर निकल गया। तब प्रभु ने जो रोटी और कटोरा मञ्च पर था यों जैसा मैं ने बतलाया लेके उस पवित्र नियम को ठहराया। उसी के दूसरे दिन पर प्रभु बलिदान हुआ॥

स्तीफान बोला। ऐसा देख पड़ता है कि यह नया नियम जो प्रभु ने यों करके ठहराया पार जाने के पर्व से कुछ सम्बन्ध रखता होगा ऐसा है कि नहीं॥

पुलूस बोला। हां वह उस के संग एक मूल सम्बन्ध रखता है क्योंकि प्रभु यों प्रगट करता है कि मैं आप परमेश्वर का वह पवित्र मेमना हूं जो जगत के आरंभ से पाप के प्रायश्चित्त में बलिदान होनेवाला था। यों उस पर्व के मेमने केवल प्रभु के चिन्ह थे और वह पर्व प्रभु ही में समाप्त होता है। फिर इस पवित्र

नियम से यह भी विदित होता है कि प्रभु का मांस आत्मिक रूप से जीवन की रोटी और उस का लहू स्वर्गीय सत्य पान है जिन के भोग करने से शिष्यों का आत्मिक प्रतिपालन होता है। फिर जो शिष्य आत्मिक स्वभाव से इस नियम पर चलते हैं वे प्रभु में और आपस में एक ही होते हैं क्योंकि वे एक ही रोटी को जो प्रभु के पवित्र मांस का और एक ही कटोरे को जो प्रभु के पवित्र लहू का चिन्ह है लेते हैं॥

गायूस बोला। हे गुरु क्या कोई ऐसा कारण है जिस से हम लोगों के लिये इस पवित्र लाभदायक आनन्दपूर्वक नियम को अभी मान्ना अनुचित होवे॥

पुलूस बोला। कोई ऐसा कारण तो नहीं है बहुत उचित भी है कि जिस के मन में ऐसी इच्छा हो प्रभु की आज्ञा पर चलके अभी उस का स्मरण करे। परन्तु यह एक ऐसा कर्म है जो बड़ी गंभीरता और सत्य बिश्वासता के संग करना चाहिये। इस कारण प्रत्येक मनुष्य अपने को परखे और इस रीति से इस रोटी से खावे और इस कटोरे से पीवे क्योंकि जो अनुचित रीति से खाता और पीता है सो जब कि प्रभु की देह का बिशेष नहीं मानता है तो खाने पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है॥

इतने बचन सुन खिष्टीय भाई जो उपस्थित थे बड़े गंभीर और ध्यानी हो कुछ बिलंब लों ऐसे ही बैठे रहे और दो एक प्रार्थना करने को एकान्त में भी गये

इतने में प्रिसकिला दूसरी कोठरी में जाके प्रभु की बियारी के लिये समस्त सामग्री अर्थात् रोटी और कटोरा और दाखरस सिद्ध कर लाई। तब पुलूस प्रेरित ने उपदेश और प्रार्थना कर सभों को खिलाया पिलाया इस के उपरान्त उन्होंने दाऊद का एक गीत गाया और सांझ लों वे सब के सब सत्सङ्ग करते रहे। फिर गायूस और स्तीफान अपने २ घर को सिधारे और अकिला और उस के तीन पाहुन सांझ का भोजन और भजन कर अपनी २ कोठरी में बिश्राम करने को गये॥

छठा अध्याय ।

यहूदियों का वैर खिष्टीय मण्डली का स्थापन और पवित्र आत्मा का दान ।

दूसरे दिन अर्थात सोमवार के भोर को पुलूस सीलास और तिमोदेउस छप्पर के ऊपर संवाद करने को जा बैठे और पुलूस ने अपने भाइयों से उन की यात्रा का वृत्तान्त और खिष्टीय भाइयों का सम्पूर्ण समाचार पूछा और जो कुछ उस पर भी जब से वे अलग हुए बीत गया था बतलाया । उन के प्रेमसंयुक्त संवाद के कारण और रबिवार के आनन्दपूर्वक कर्मों के हेतु से उस का जी अत्यन्त हर्षित और बलवन्त हो गया था यहां लों कि उस के भाइयों ने देखके कहा कि प्रभु के अनुग्रह से एक नवीन बल आप को प्राप्त हुआ । इस के उत्तर में

पुलूस बोला । हमारे प्रभु की स्तुति हो कि उस ने दया करके मुझ को बड़ी दुर्बलता से चंगा किया । उस की कृपा और अनुग्रह उस के दासों के संग नित्य रहा करते हैं और उस का बल हमारी दुर्बलता में समाप्त और परिपूर्ण होता है । आसरा है कि अब तुम दोनों और नवीन भाइयों की संगत और सहायता से हम यहूदी भाइयों पर जो मण्डलीघर में आते परन्तु प्रभु पर बिश्वास नहीं लाते हैं उस की साक्षी भली भांति और स्पष्ट रूप से दे सकेंगे । आज का दिन भी भजनमण्डली का दिन है सो वहां जाना अवश्य आन

पड़ता है क्योंकि मेरा मन आत्मा के बस हो उभरता है कि यहूदियों को प्रभु यसू के खीष्ट होने की साक्षी दूं॥

जब इतना कह चुका तब एक चाकर यह समाचार देने को आया कि कृस्पुस नामे एक मनुष्य भेंट करने चाहता है पुलूस ने उस के पास प्रणाम दे कहला भेजा कि आइये बड़े आनन्द से संवाद करेंगे इस पर वही कृस्पुस जिस का थोड़ा सा वर्णन ऊपर हुआ उन के पास आया और नमस्कार करके कहने लगा॥

कृस्पुस बोला। ईश्वर का धन्यबाद आप लोगों पर होवे हे ईश्वर के सेवक और खिष्टीय धर्मोपदेशक मैं विशेष करके आप के संग दो एक बचन कहने को आया हूं कदाचित ये दो मनुष्य आप के मित्र हों तो उन के सुनते कहना कुछ अनुचित न होगा॥

पुलूस बोला। आप कहिये ये तो मेरे परम मित्र हैं और जो कुछ मुझ से सम्बन्ध रखता हो वे उस को अपना ही जान लेते हैं॥

कृस्पुस बोला। भला जी मेरा समाचार यह है कि जब से कल के दिन हमारे दो एक यहूदी भाई खिष्टीय शिष्य हो गये तो शेष यहूदियों में इस बात की बड़ी चरचा हो रही और कितनों ही में बड़ा ही क्रोध भी उपजा है विशेष करके मण्डलीघर का मेरा संगी प्रधान सोस्थनीज अत्यन्त क्रोधित हो गया और यहां लों ज्वलित है कि यदि मण्डलीघर में उपदेश

करते समय आप पर झपट कर कुछ उपद्रव भी करे तो आश्चर्य नहीं॥

पुलूस बोला। यह बात आप को किस प्रकार से विदित हुई और क्या कारण है कि सोस्थनीज ऐसा क्रोधित हो गया॥

कृस्पुस बोला। मैं यह दशा इस रीति से जानता हूं कि कल सोस्थनीज ने जब सुन लिया कि गायूस स्तीफान और अकिला खिष्टीय जलसंस्कार लेने को गये हैं तो मेरी कोठी पर झुंझलाते और यह कहते आया कि तुम भी इस बात में दोषी हो। इस कारण कि मैं ने आप को मण्डलीघर में उपदेश करने को बुलाया था और उस ने यह भी कहा जो वह मनुष्य पुलूस फिर मण्डलीघर में उपदेश करने पावे तो अवश्य मैं उस को वहां से निकाल दूंगा। मैं ने तो उस को बहुत मनाया समझाया परन्तु उस ने तनिक भी न माना वरन औरों के पास जो आप के उपदेश से अप्रसन्न हैं जाके उन को उभारा कि वे भी उस के संग आप की विरुद्धता में यत्न करें। ऐसा कि मैं बहुत डरता हूं कि यदि आप फिर मण्डलीघर में उपदेश करने को खड़े हों तो कदाचित अनुचित हुल्लड़ भी मचे। इस कारण मैं ने एक मित्र अर्थात् रूमी युस्तुस से इस विषय में निवेदन किया है कि अपनी कोठी जो मण्डलीघर के निकट है आप के उपदेश करने के लिये दे देवे। वह तो एक बुद्धिमान धर्मी आदरयोग्य सज्जन है और

आप की शिक्षा पर बहुत ध्यान करता है बरन हम दोनों उस के विषय में परस्पर संवाद किया करते हैं और अनेक और भी मनुष्य इस रीति से उस पर ध्यान करते हैं। फिर युस्तुस की कोठी में बड़ी मण्डली के लिये स्थान भी विस्तृत है आप इस उपाय से सन्तुष्ट हों तो आसरा है कि इस रीति से हम जो सत्य जीवते ईश्वर के सेवक हैं उस के धर्म और भजन को मूर्त्ति-पूजकों की अपनिन्दा से बचावें इस कारण मैं शीघ्र यहां आया हूं कि कदाचित आज के दिन आप मण्डलीघर में जाते होंगे॥

पुलूस बोला। ऐसा देख पड़ता है कि सोस्थनीज की दशा वैसी है जैसी अगिले दिनों में मेरी दशा थी मैं ने उस के संग दो एक बार संवाद किया है और मेरी समझ में वह एक सत पुरुष है। परन्तु उस के मन पर पक्ष और अज्ञानता का तम एक घोर अंधकार की नाईं छाय रहा है। हम को चाहिये कि उस के लिये प्रभु से प्रार्थना करें क्योंकि जब मैं प्रथम खिष्टीय साक्षी स्तीफान के घात करने में सहायता करता था तो उस ने अपने घातकों के लिये इस रीति से प्रार्थना किई कि हे प्रभु यह पाप उन पर लगाया न जावे। मैं ने यह दशा देख और सुन तुरन्त अपने मन में मान लिया कि यह एक सत पुरुष और दैवीय जन है और उस काल से मेरे हृदय में एक प्रकार का कांटा लग गया जिस पर लात मारना बड़ा कठिन था। कुछ

आश्चर्य नहीं सोस्थनीज भी मेरे समान प्रभु का दास हो जावे। परन्तु जो उपाय आप ने युस्तुस की कोठी का निर्माण किया है ईश्वर की इच्छा हो तो पीछे उस से कुछ बन पड़े केवल यह है कि जब लों मैं मण्डलीघर से निकाला न जाऊं अथवा वहां जाने में ईश्वर और प्रभु का अपमान न होवे उचित नहीं देख पड़ता है कि मैं आप ही आप वहां जाना छोड़ दूं। आसरा है कि वहां जाके सम्पूर्ण दशा भली भांति देख लूंगा। क्या जाने ईश्वर के अनुग्रह से प्रभु का मङ्गलसमाचार पवित्र आत्मा के पराक्रम से प्रचारके कितने यहूदी भाइयों की मुक्ति निश्चय करा सकेंगे॥

कृस्पुस बोला। निःसन्देह आज बहुत लोग वहां एकट्ठे होंगे क्योंकि कल के कर्म की बड़ी ही चर्चा सम्पूर्ण नगर में हो रही है और समस्त लोग इस की बाट जोहते हैं कि आप और नये खिष्टीय शिष्य आज मण्डलीघर में उपस्थित होंगे॥

पुलूस बोला। ईश्वर की इच्छा हो तो हम सब वहां जायेंगे परन्तु हे भाई इस प्रकरण में जिस के कारण से सोस्थनीज ऐसा क्रोधी हो गया आप का क्या बिचार है। दो एक संवादों से जो आप से मैंने किये हैं मेरे मन में आशा थी कि अन्य भाइयों के समान आप भी प्रभु यसू खीष्ट पर बिश्वास लाते हैं क्या ऐसा है कि नहीं॥

कृस्पुस बोला। जो मैं आप से अपने मन की दशा

सच कहूं तो जो समाचार और बर्णन आप यसू ख्रीष्ट के विषय में सुनाते हैं सो सत्य प्रमाणिक देख पड़ते हैं फिर भी किसी हेतु से मैं उस प्रभु पर अपने मुक्ति-दाता की रीति सत्य बिश्वास नहीं लाता हूं। कदाचित इस के दो एक कारण होवें एक तो यह कि अपने पितरों के धर्म और व्यवहारों को त्याग नये मत पर चलना मुझे निपट बुरा लगता है फिर मैं मण्डलीघर का प्रधान हूं और सारे यहूदी भाई मेरा आदर करते हैं और जो मैं यसू ख्रीष्ट का शिष्य होजाऊं तो इस में बड़ी अपनिन्दा क्या जाने बड़ा कष्ट भी होगा। ऐसे विषयों पर ध्यान करते २ मेरा मन दुबधे में फंस जाता है और मेरा मित्र सोस्थनीज भी बड़ी बरबस्ती से प्रमाण ला लाके मुझ को समझाता है कि यसू ख्रीष्ट का शिष्य होना और भ्रष्ट हो जाना दोनों एकही हैं॥

पुलूस बोला। हे भाई ऐसे भारी प्रकरण में चौकसी करना अवश्य तो है नहीं तो अपने प्राण को भ्रष्ट और नष्ट करना कुछ अनहोना नहीं है क्योंकि सत्य ज्ञान के बिरुद्ध केवल पक्ष का तम तो नहीं है जैसे सोस्थनीज की दशा है परन्तु इस जगत का रज भी सत से सङ्ग्राम करता है। जो अपनी मान्यता अथवा लौकिक सुख और राज्याभिलाष के निमित्त ईश्वर के सत्य को त्याग करता अर्थात ग्रहण नहीं करता है ऐसों के विषय में आप तो जानते होंगे कि सुलेमान अपने दृष्टान्तों में क्या कहता है अर्थात जिस किसी ने बुद्धि को मानो

ईश्वर के सत्य को पाया उस ने जीवन को पाया और वह परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करेगा परन्तु जो उस के विरुद्ध पाप करता है सो अपने प्राण का बैर करता है वे सब जो उस से बैर रखते हैं मृत्यु से प्रेम करते हैं इति । परन्तु हे मेरे मित्र एक और बात ध्यान के योग्य है अर्थात यदि आप यसू खीष्ट का जो वृत्तांन्त मैं सुनाता हूं सत्य प्रमाणिक जानते तो उस ने हम पापियों से प्रीति कर उस प्रेम के बलात्कार से हमारी मुक्ति के लिये अपना प्राण दे दिया । फिर क्या आप की बुद्धि में इस भाव का प्रेम ऐसा हलुक पदार्थ है कि कोई भला मनुष्य उस पर ध्यान करके केवल अपने लौकिक अथवा पारलौकिक लाभ की चिन्ता करेगा। जो ऐसा करे तो इस से निश्चय है कि उस ने उस प्रेम का भाव तनिक भी नहीं समझा । प्रभु का अनमोल प्रेम जब अन्तःकरण पर उदय होता है तो इस प्रकार की स्वार्थदृष्टि को नष्ट कर देता है॥

कृस्पुस बोला । हे गुरु मेरा मन अब लों आपके समान ईश्वरीय प्रेम से परिपूर्ण नहीं हुआ आप मेरे लिये भी सोस्थनीज के समान प्रार्थना कीजिये कि हम को वही अनुग्रह प्राप्त हो जो एक २ के लिये विशेष अवश्य है । ईश्वर की इच्छा हो तो मैं भी भजन के समय मण्डलीघर पर उपस्थित होऊंगा और यदि युस्तुस की कोठी पर जाना उचित हो तो मैं आप के लिये उस को बताऊंगा . नमस्कार ॥

इतना बचन कह कृस्पुस चला गया और थोड़ी देर पीछे पुलूस और उस के दो साथी और अकिला और प्रिसकिला मण्डलीघर को चले गये वहां पहुंचतेही उन्हों ने देखा कि एक बड़ी भीड़ एकट्ठी हो गई है। पुलूस अपनी पहिली रीति के अनुसार धर्मोपदेश के आसन पर जा बैठा। उस दिन का पाठ वह था जो यूएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक के २ पर्ब्ब में लिखा है अर्थात वह धर्माचार्य्य यहूदियों से जब कि वे ईश्वर की ताड़ना के कारण पछतावेंगे ईश्वर की ओर से यों कहता है कि तुम बहुताई से खाओगे और तृप्त होओगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम की स्तुति करोगे जिस ने तुम से आश्चर्य्यित व्यवहार किया और मेरे लोग कभी लज्जित न होंगे और तुम जानोगे कि मैं इस्रायेल के मध्य में हूं और कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं और दूसरा कोई नहीं और मेरे लोग कभी लज्जित नहीं होवेंगे और इस के पीछे ऐसा होगा कि मैं सारे मनुष्यों पर अपना आत्मा डालूंगा और तुम्हारे बेटे बेटियां भविष्य कहेंगी तुम्हारे पुरनिये स्वप्न निहारेंगे और तुम्हारे युवा दर्शन देखेंगे और उन्हीं दिनों में मैं अपने आत्मा को दासों और दासियों पर बरसाऊंगा और ऐसा होगा कि जो कोई परमेश्वर के नाम की दोहाई देगा बच जायगा क्योंकि सैहून पर्बत पर और यरूसलम में बचाव होगा जैसा कि परमेश्वर ने कहा है और बचे हुओं में जिन्हें परमेश्वर बुलावेगा इति॥

जब यह पाठ हो चुका तो पुलूस उस का अर्थ खोलने के लिये खड़ा हो गया । पाठ के पढ़ने सुनाने के समय वह अति गम्भीर और ध्यानी बैठ रहा था और जितने मनुष्य मण्डली में उपस्थित थे अपने २ मन के ज्वलन और व्याकुलता को नाना प्रकार से दिखाते थे कि अब देखा चाहिये क्या होनहार है । जितनों ने खिष्टीय जलसंस्कार पाया था स्त्रियों और बालकों को छोड़ उपस्थित हो धर्मोपदेशक के आसन के निकट बैठते थे । पुलूस के खड़े होने पर सभों ने देखा कि एक आश्चर्य प्रकार का आत्मिक दैवीय पराक्रम उस के स्वरूप और आंखों की चमक में प्रकाशित होता है। इस कारण कुछ बेर लों पाठ का अर्थ खोलने में उपदेश इस रीति से करने पाया अर्थात कि जिस समय का बर्णन यूएल आचार्य्य ने किया सो यही समय है जिस में अब हम तुम जीते हैं और उस की भविष्यद्वाणी के अनुसार उसी प्रकार के लक्षण अनेक नगरों में विशेष करके हमारे पवित्र नगर यरूसलम में प्रगट हो चुके और होते जाते हैं और जिस २ स्थान में सत पुरुष और ईश्वर के भक्त उस के बचन पर बिश्वास लाके प्रभु यसू खीष्ट के शरणागत होवेंगे वहां ऐसे २ लक्षण दिखाई देंगे । फिर इसके सम्बन्ध में वह उन मनुष्यों का जिन्हों ने जलसंस्कार पाया था बर्णन करने और इस रीति से पुकारने लगा कि मण्डली के सारे लोग उसी प्रकार से परमेश्वर के नाम की दोहाई देके

मुक्ति पावें। इतने में मण्डली के कितने मनुष्य और धीरज न कर सके और इधर उधर खड़े हो पुलूस के बिरुद्ध बड़ी प्रचण्डता से वार्त्ता करने लगे। विशेष करके सोस्थनीज प्रधान जो पुलूस के निकट था उस की बांह पकड़के उस पर बरबस्ती और उस का और यसू का धिक्कार करने लगा। निदान मण्डली में बड़ी व्याकुलता हुई और एक भयानक हुल्लड़ मचता गया॥

यह दशा देख पुलूस चुप हो बैठ गया और कृस्पुस को सैन किया कि जिस रीति से हो सके मण्डली को धीमा कर देवे। जब हुल्लड़ मचानेवालों ने देखा कि पुलूस चुप हो बैठा है और मण्डलीघर का प्रधान नम्रता के संग वार्त्ता करने चाहता है तो होते २ वे भी चुप हो गये और कृस्पुस उन से यों बात करने लगा॥

कृस्पुस बोला। हे भाइयो इस रीति से ईश्वर के भजनघर में हुल्लड़ मचाना किसी प्रकार से उचित नहीं हो सकता है जो समाचार यह मनुष्य हम को सुनाता है सो अथवा धर्म्मपुस्तक के बचन के अनुसार है अथवा उस के बिरुद्ध है। यदि बिरुद्ध है तो प्रमाण लाके उस को खण्डन करना चाहिये। परन्तु प्रमाण लाने के लिये गम्भीर रूप से ध्यान करना अवश्य है क्योंकि मनुष्य का क्रोध ईश्वर के धर्म को नहीं निबाहता है। फिर यदि धर्म्मपुस्तक के अनुसार है तो उस को ग्रहण करना चाहिये। सो मैं तुम से कहता हूं इस मनुष्य से हाथ उठाओ क्योंकि यह बिचार और यह काम यदि

मनुष्यों की ओर से है तो लोप हो जायगा परन्तु यदि ईश्वर से है तो तुम उसे लोप नहीं कर सकते हो ऐसा न हो कि तुम ईश्वर से लड़नहारे ठहरो इति ॥

इस पर पुलूस दोबारा उपदेश करने को खड़ा हो गया परन्तु जब लोगों ने यह देखा तो फिर हुल्लड़ मचाने लगे इस पर पुलूस साहस करके बड़े शब्द से कहने लगा ॥

पुलूस बोला । ईश्वर का बचन पहिले तुम से कहना अवश्य था परन्तु तुम उसे दूर करते हो और अपने तईं अनन्त जीवन के अयोग्य ठहराते हो तुम्हारा लहू तुम्हारे सिरों पर मैं निर्दोष हूं अब से मैं अन्य-देशियों के पास जाऊंगा ॥

यह कहके उस ने उन के सन्मुख अपना बस्त्र झाड़ दिया और आसन पर से उतरके द्वार की ओर चलने लगा । यह दशा देख अकिला स्तीफान गायूस इत्यादि जो खिष्टीय शिष्य हो गये थे और मण्डलीघर का प्रधान कृस्पुस और रूमी युस्तुस भी और कितने और मनुष्य जो मुक्ति के खोजक थे उठके उस के संग मण्डलीघर में से निकलके युस्तुस की कोठी को चले गये ॥

इस मनुष्य अर्थात युस्तुस का वृत्तान्त सम्पूर्णरूप से विदित नहीं होता है परन्तु अनुमान की रीति से सम्भव है कि वह रूमी था और जो योद्धा शतपति भी था तो कुछ आश्चर्य्य नहीं क्योंकि उन दिनों अनेक ऐसे मनुष्य यहूदी शिष्य हो गये थे और वे बहुधा निर्पक्ष

साहसी धर्ममय भी थे। यदि यह मनुष्य रूमी शतपति अथवा सहस्रपति था तो सम्भव है कि उस की कोठी रूमियों के डौल पर बनी थी और रूमी कोठियों में एक बिस्तारपूर्बक आंगन था जिस के ऊपर छप्पर भी बना था और उस में एक बड़ी मण्डली समा सकती थी। इस दशा में युस्तुस की कोठी खिष्टीय शिष्यों की मण्डली के लिये अत्यन्त योग्य ठहरती कदाचित इसी कारण से कृस्पुस ने मन किया था कि जब पुलूस और खिष्टीय शिष्य यहूदियों के मण्डलीघर से अलग हो जावें तो उस कोठी में भजन के लिये एकट्ठे हों। ऐसा देख पड़ता है कि पुलूस अपने पहिले मित्र अकिला और प्रिसकिला के घर में रहा करता था परन्तु खिष्टीय भजन की मण्डलियां आगे को युस्तुस की कोठी में हुआ करती थीं निदान इसी अनुभव पर बर्णन लिखा जाता है॥

यहूदियों के मण्डलीघर से अलग हो खिष्टीय शिष्यों का एक दूसरे स्थान में भजन के लिये एकट्ठे होना दो एक प्रकारों से लाभदायक प्रबन्ध ठहरा क्योंकि इस रीति से उपदेशकों की सामर्थ थी कि शिष्यों की दशा के अनुसार भजन की रीति और शिक्षा का अनुक्रम और अभिप्राय ठहरावें। फिर केवल वे मनुष्य जो अपनी इच्छा से आते थे उपस्थित हो गये और किसी का अधिकार नहीं था कि मण्डली को बैर वा बिरोध करके सतावें यों उपदेशक अपनी शिक्षा की रीति और

धर्म नियमों का प्रबन्ध सभों के लाभ के लिये कर सकते। फिर बड़े आंगन के मध्य में छप्पर आकाश की ओर खुला था और उस छेद के नीचे पत्थरों का एक छोटा पोखर बना था जिस में बरषा का जल गिरता था और यह पोखर जलसंस्कार देने के लिये काम आता॥

जब पुलूस और उसके मित्र यहूदी मण्डलीघर को छोड़ युस्तुस की कोठी पर जाते थे तो अनेक नगर निवासी जो यह नई दशा देखने को आये थे उन के पीछे हो लिये और जितने चाहते थे आंगन के अन्दर भी आये। इस रीति से एक अच्छी मण्डली हो गई और जब वे सब बैठ गये थे तो पुलूस ने उन के बीच में खड़ा हो ईश्वर का बड़ा धन्यवाद किया कि अब कोरिन्तुस नगर में पहिले ख्रिष्टीय मण्डली की नेव डाली जाती है और प्रार्थना भी किई कि वह प्रभु जिस के नाम पर वे एकट्ठे हो गये थे अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन के बीच उपस्थित हो अपने पवित्रात्मा का बल और अनुग्रह सभों के मन में प्रेरणा करे। इस के उपरान्त सीलास और तिमोदेउस ने धर्मोपदेश की रीति पर प्रभु यसू ख्रीष्ट का कुछ वृत्तान्त अर्थात उस का आश्चर्य्य जन्म और कर्म उस की दैवीय शिक्षा और व्यवहार उस का दुःख सहन और मरण उस का अद्भुत पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण इत्यादि समस्त सुननेहारों के लिये बतलाया। उन का वर्णन सुनने में सब लोगों

के मन अत्यन्त प्रवृत्त और लौलीन हो रहे और ऐसा देख पड़ा कि बड़े आनन्द से वे दिन भर बैठके यह वृत्तान्त सुनते। जब यह वर्णन हो चुका था तब पुलूस फिर खड़ा हो उस वृत्तान्त का ईश्वरीय अभिप्राय और धर्मसंयुक्त सिद्धान्त प्रकाशित और प्रमाणिक करने लगा अर्थात कि श्री यसू खीष्ट परमेश्वर का एकलौता पुत्र और पूर्णब्रह्म का अकेला अवतार था और जगत के पाप के प्रायश्चित्त में बलि हो सारे जातिगणों का अकेला मुक्तिदाता ठहरता है और सारे मनुष्यों को उचित और अवश्य है कि उसही पर विश्वास लाके पापमोचन और मुक्ति पावें और केवल इसही रीति से किसी का मन पवित्र और शुद्ध हो सकता है। और यही यसू जो जी उठा अन्त के समय अपने सारे शिष्यों को मृतकों में से जिलाके आप जगत का न्याय करने को दोबारा प्रगट हो जायगा। इस रीति का उपदेश और शिक्षा कर उस ने बड़े आत्मिक बल और दैवीय प्रेम से सब सुन्नेहारों को उभारा कि अब जो मुक्ति का समय है उस प्रभु पर विश्वास लाओ और उस की आज्ञा के अनुसार पाप से पछतावा कर खिष्टीय जल-संस्कार लेओ तब पवित्र आत्मा का गुणदायक अनुग्रह तुम्हारे मनों में आवेगा॥

जब कि पुलूस इस रीति से उपदेश कर रहा था तो समस्त सुन्नेहारों को ऐसा प्रगट हुआ कि वही गुणदायक अनुग्रह हम सभों के मनों में प्रबल हो रहा

है और अब एक अत्यन्त अद्भुत दशा उपस्थित होने लगी कि कृस्पुस मण्डलीघर के प्रधान ने सभों के सन्मुख खड़ा हो स्पष्ट रूप से अंगीकार किया कि मैं और मेरा घराना प्रभु के शिष्य होने चाहते हैं हमारा खिष्टीय जलसंस्कार होवे। सो पुलूस ने उन की इच्छा के समान किया और उन को और उन सभों को जिन्हों ने पहिले जलसंस्कार पाया था अपने सन्मुख पंक्ति में खड़ा कर अपना हाथ उन के शिर पर रख उन के लिये प्रार्थना किई कि पवित्र आत्मा का दान उन को प्राप्त होवे। इस पर वे सब के सब होते २ और ही प्रकार के मनुष्य बन गये कि उन की आत्मा ईश्वरावेश से परिपूर्ण हो गई और वे अनिच्छापूर्वक रीति से दैवीय तत्वज्ञान की अद्भुत वार्त्ता और नाना प्रकार की भाषा बोलने लगे विशेष करके वे ईश्वर और यसू खीष्ट का धन्यबाद और उन के गुणों और कर्मों का वर्णन और उन की प्रशंसा और भजन स्वर्गीय सुवक्तृता के संग करने लगे। यह दशा देख समस्त सुन्नेहारे बिस्मित हो गये और कितनों ने मान लिया कि हमारे मन की बातें प्रगट हो जाती हैं और मुंह के बल गिरके ईश्वर को प्रणाम करने और यह कहने लगे कि ईश्वर निश्चय इन लोगों के बीच में है। यों यूएल आचार्य्य की भविष्यद्वाणी जिस का वर्णन ऊपर हुआ उन्हीं के विषय में सम्पूर्ण हुई और इस दशा की थोड़ीसी चर्चा आगे के अध्याय में होगी॥

सातवां अध्याय।

आत्मिक दानों का फल प्रभु का दर्शन और मनुष्यजाति के पुनरुत्थान का विचार॥

पवित्र आत्मा का दान जिस का कुछ थोड़ासा वर्णन ऊपर के अध्याय में लिखा है एक बड़ा आश्चर्य जनक वृत्तान्त देख पड़ता है। कुछ आश्चर्य तो नहीं था कि प्रभु यसू ख्रीष्ट जो पूर्णब्रह्म का अकेला अवतार और सकल ईश्वरीय शक्ति से परिपूर्ण था अपनी इच्छा-मात्र के बल से सृष्टि के सारे तत्वों को अपनी आधीनता में रक्खे अथवा कि दैवीय प्रेम से व्याप्त हो उस शक्ति को केवल मनुष्य के कल्याण और कुशल के निमित्त आश्चर्य कर्मों के द्वारा प्रकाशित करे। इस के अनुसार ऐसी कोई शारीरिक अथवा आत्मिक विपत्ति मनुष्य को नहीं लगती है जिस को उस दयासागर त्राणकर्त्ता ने अनेक बार अपनी इच्छा के बलमात्र से दूर नहीं किया और कोई ऐसा आश्चर्य कर्म उस से प्रगट नहीं हुआ जिस को उस ने अपने किसी निज स्वार्थ के निमित्त प्रगट किया। उस के चरित्रों का संक्षेप किन्तु अति स्पष्ट भी वर्णन मंगलसमाचार पुस्तक में लिखा है ध्यानी बुद्धिमान धर्म्मी मनुष्य अपने मन की संतुष्टता के लिये उस वर्णन की परीक्षा भली भांति करे तो अवश्य वह मान लेगा कि अतुल्य है। परन्तु आश्चर्य

यह था कि दोषी निर्बल मनुष्य उस की दया और अनुग्रह से ऐसी शक्ति पावे कि उस ही प्रकार के आश्चर्य कर्मों को प्रगट कर सके ॥

जब प्रभु शारीरिक रूप से इस संसार में था तो उन आश्चर्य कर्मों को छोड़ जो उस ने आप किये उस ने अपने बारह प्रेरितों को और कितने और शिष्यों को भी ऐसेही कर्म करने की शक्ति दिई । फिर उस के स्वर्गारोहण के पश्चात उस के प्रेरितों ने भी यह अधिकार पाया कि जिस के सिर पर वे अपना हाथ रखें उस ने आश्चर्य कर्म करने की शक्ति पाई परन्तु वह शक्ति किसी दूसरे को न दे सका । इस रीति ईश्वरीय सत्य धर्म के स्थापन करने में ईश्वरीय शक्ति शिष्यों के द्वारा उस प्रथमकाल के लिये प्रकाशित हुई परन्तु जब वह धर्म स्थापन हो चुका था तो उस शक्ति का इस रीति से प्रकाशित होना प्रयोजन न था। इस के बदले में पहिले आश्चर्य्य कर्मों का और विशेष करके प्रभु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण का प्रमाणिक वृत्तान्त सभों के निश्चय विश्वास के लिये लिखा गया और आज लों उपस्थित है जिस्तें जो कोई चाहे उस की परीक्षा कर जान लेवे कि सत्य प्रमाणिक है कि नहीं। परन्तु प्रथमकाल में यह लिखे हुये वृत्तान्त पश्चातगामी कालों की रीति पर प्रचलित न थे इस कारण उस काल में यह दैवीय शक्ति प्रकाशित हो रही थी जब लों कि प्रेरितों के मरने से लोप नहीं हो गई ।

उसही प्रथम प्रमाणिक लिखे हुये वृत्तान्त के अनुसार इस पुस्तक का वर्णन लिखा जाता है ॥

प्रभु के चरित्रों में केवल दैवीय शक्ति प्रकाशित नहीं हुई बरन इस को छोड़ ईश्वर के और भी गुण अर्थात सर्वज्ञता पवित्रता सत्यता दया प्रेम इत्यादि साक्षात थे । फिर वे कर्म सब के सब उस प्रकार के थे कि उन के द्वारा प्रभु का विशेष आत्मिक धार्म्मिक मुक्तिदायक कर्म मानो एक शारीरिक दृश्यमान रूप से प्रसिद्ध और प्रकाश हुआ । क्योंकि अन्धे को दृष्टि लंगड़ों को गमन रोगियों को चंगाई कोढ़ियों को शुद्धता मृतकों को जीवन देना ये सब के सब विशेष करके दृष्टान्तपूर्वक कर्म थे जिन से उदाहरण की रीति प्रगट हुआ कि आत्मिक दृष्टि बल चंगाई शुद्धता और जीवन उस ही प्रभु की दयापूर्वक शक्ति से प्राप्त हो सकती है । प्रेरितों और शिष्यों के आश्चर्य्य कर्म प्रभु के दैवीय चरित्रों की अपेक्षा न्यून और अधम थे और सम्भव है कि वे उन को सर्वदा निरन्तर प्रगट न कर सके केवल उस दशा में करते थे जब ईश्वरावेश से ऐसा करने का सैन उन को मिला । इस क्रम के अनुसार आत्मा के दान प्रेरितों के काम में नाना प्रकार के थे पवित्र आत्मा के द्वारा एक को बुद्धि की बात एक को ज्ञान की बात एक को विश्वास एक को चंगा करने की शक्ति एक को भविष्यद्वाक्य एक को आत्माओं की पहिचान एक को अनेक प्रकार की भाषा एक को भा-

पाओं का अर्थ दिया गया और यह सब कार्य वही पवित्र आत्मा करवाता था और अपनी इच्छा के अनुसार हर एक मनुष्य को पृथक २ करके बांट देता था। निदान इन्हीं आत्मिक दानों के कारण कोरिन्तुस की पहिली खिष्टीय मण्डली में पुलूस प्रेरित के हाथ धरने के द्वारा शिष्यों की वह दशा हो गई जो ऊपर के अध्याय में वर्णित हुई ॥

शिष्यों के मनों में एक फल इन दानों का यह था कि वे हर्षित मोहित हो गये और उन का बिश्वास अति दृढ़ और उन का साहस और आत्मिक बल महा स्थिर और अटल हो गये। फिर दैवीय प्रेम उन के सकल स्वभाव पर प्रबल हुआ यहां लों कि बिश्वासी भाइयों के कल्याण के निमित्त और अबिश्वासियों की मुक्ति के लिये वे बड़े आनन्द से समस्त प्रकार का परिश्रम और कष्ट भी उठाने पर सिद्ध थे। इस के अनुसार वे अपने निकटबासियों और मित्रों के बीच उन का उपकार करने की इच्छा से नित्य जाया करते थे उन के कष्टों और बिपत्तियों में उन के समदुखी और सहायक थे और उन सभों को प्रभु यसू खीष्ट के अद्भुत अकथ्य प्रेम का मंगलसमाचार अत्यन्त आह्लाद और कोमलता के संग सुनाते थे। इस रीति से वह समाचार चारों ओर बड़ी शीघ्रता से फैलता गया और बहुतेरे अन्यदेशी मनुष्य इस नवीन आश्चर्य दशा को देखने और जांचने के लिये खिष्टीय मण्डली में युस्तुस

की कोठी पर आया करते थे। कुछ बिलम्ब के पीछे शिष्यों ने इन दानों का अनुचित रीति से व्यवहार किया और इस कारण पुलूस ने जब दूसरे नगर को गया उन के पास शिक्षापत्र लिख भेजे परन्तु उस समय में जिस का वर्णन अब लिखा जाता है कुछ ऐसा गड़बड़ उपस्थित नहीं हुआ॥

एक और फल यह था कि कितने मनुष्य जो कुछ दिनों से पुलूस के समाचार पर ध्यान करते थे अब शिष्य होने का स्थिर मन करने लगे। उन में वह युस्तुस था जिस के घर में मण्डलियां एकट्ठी होती थीं उस के संग बहुत और मनुष्य भी जलसंस्कार पाने के लिये निवेदन करने लगे ऐसा कि पुलूस को अवकाश न मिला कि आपही सभों को देवे और सीलास और तिमोदेउस उस के बदले यह काम करते थे। फिर जिस भाव से प्रभु का कार्य्य बढ़ता चला जाता था उस के अनुसार बैरियों का द्वेष भी बढ़ताही गया। ये बैरी विशेष करके यहूदी थे जो प्रयत्न से प्रेरित को सताते और उस के उद्योगों की विरुद्धता करते रहे। उन दिनों पुलूस ने थसलोनिकी के भाइयों के पास एक शिक्षापत्र लिख भेजा और उस में वह उन बैरियों का थोड़ा सा वर्णन करता है कि वे हम को अन्यदेशियों से उन के त्राण के लिये बात करने से बरजते हैं और यह भी कहता है कि हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो कि प्रभु का बचन शीघ्र फैले और तेजोमय ठहरे

और कि हम अविचारी और दुष्ट मनुष्योंसे बच जावें क्योंकि बिश्वास सभों को नहीं है इति ॥

वे मनुष्य जो उन दिनों बिश्वासी खिष्टीय शिष्य हो गये सो बहुधा करके नगरनिवासी अन्यदेशी थे उन में कितने यवन कितने रूमी कितने अन्यजाति थे सो विदित नहीं होता है परन्तु यह निश्चय है कि उन में बहुत ज्ञानवान बहुत सामर्थी बहुत कुलीन न थे सम्भव है कि बहुतेरे दास और अविद्वान और कंगाल थे क्योंकि यह बात ईश्वर के मंगलसमाचार का एक प्रसिद्ध लक्षण है कि वह कंगाल और दुःखी और अधम लोगों को प्रचारा जाता और उन से ग्रहण भी होता है। इस में परमेश्वर की अनन्त बुद्धि का प्रमाण है क्योंकि इस रीति से वह मूर्खों के द्वारा ज्ञानवानों को और जगत के निर्बलों के द्वारा शक्तिमानों को और अधमों और तुच्छों के द्वारा अहंकारियों को लज्जित और उन का लोप करता है जिस्से कोई प्राण ईश्वर के आगे घमंड न करे। और जब कि इस संसार में शक्तिमान और ज्ञानवान थोड़े और अधम कंगाल अज्ञानी बहुत हैं तो ईश्वर के योग्य देख पड़ता है कि सारे मनुष्यों को अपना सन्तान जानके बहुतों के लिये न कि थोड़ों के लिये निर्बलों अनाथों के लिये न कि भाग्यमानों के लिये चिन्ता करके उपाय ठहरावे जैसे यसू खीष्ट ने कहा कि उन को जो भले चंगे हैं वैद्य का प्रयोजन नहीं पर रोगियों को प्रयोजन है ॥

परन्तु इस दशा में यह एक बात थी कि ऐसे लोगों की शिक्षा और अगुवाई करनी पुलूस को और उस के संगियों को एक भारी काम हो गई और जब कि मनुष्यजाति का व्यवहार नहीं है कि अचानक अपने अगले दुष्ट कर्मों और रीतों को त्यागकर क्षण भर में शुद्ध और सुशील बन जावें तो सन्देह नहीं है कि नवीन शिष्यों के विषय में पुलूस को बड़ीही चिन्ता हो रही थी। फिर बैरियों की विरुद्धता के कारण उस को और भी क्लेश और पीड़ा हुई होगी और उस की प्रकृति स्वभाव अत्यन्त ध्यानी और समदुःखी भी था ऐसा कि वह निरन्तर अन्य ख्रिष्टीय मण्डलियों के शिष्यों के लिये भी जो अन्य नगरों में रहते थे चिन्ता करता और प्रतिदिन प्रार्थना करता रहा। इस के संग वह तम्बू बनाने में भी परिश्रम करता था क्योंकि उस का स्थिर मन था कि अपने को नीचा कर अन्य मण्डलियों से उपकार ले कोरिन्ती शिष्यों की सेवा करे और उन्हें सेंत में मंगल-समाचार सुनावे और जब उस को घटी भी थी तब भी उन पर बोझ न डाले। फिर इन सारी चिन्ताओं और कष्टों और परिश्रमों को छोड़ उस के देह की निर्बलता भी थी जिस के कारण ऐसा बोझ उठाना उस के लिये अत्यन्त कठिन था इस के अनुसार उस ने आप कहा कि परमेश्वर ने अपनी आत्मिक सम्पत्ति को मट्टी के बरतनों में रखा है कि सामर्थ्य की अधिकाई ईश्वर की ठहरे मनुष्य की ओर से नहीं॥

ऐसी दशाओं में प्रभु यसू खीष्ट अपने बिश्वासी सेवकों के लिये सर्बदा योग्य समय पर एक बिश्वासी उपकारक प्रगट होता है। एक सांझ को ऐसा हुआ कि पुलूस जो दिन भर परिश्रम उपदेश संवाद और प्रार्थना कर रहा था अत्यन्त थका और दुर्बल हो गया था और उस के दयावान मित्र अकिला और प्रिसकिला और उस के संगी सीलास और तिमोदेउस चिन्ता भी करने लगे कि यदि प्रेरित इस भाव से परिश्रम करता रहे तो अवश्य रोगी हो सर्वथा सामर्थहीन हो जायगा। परन्तु दूसरे दिन जब भोर को उस के संग भेंट हुई तो उन्हों ने देखा कि नवीन बल और हर्ष उस के मुंह से प्रकाशित होता है और जब उस की कुशल क्षेम पूछी तो उस ने अति आह्लादित हो उत्तर दिया॥

पुलूस बोला। हे प्रिय मित्रो मेरे संग हमारे प्रभु का सहस्र धन्यबाद करो कि ठीक समय पर जब मेरा जीव दब जाने पर था उस ने मुझे एक और बार दर्शन दिया है और अब मैं उस की सेवा के लिये समस्त प्रकार से सिद्ध और बलवन्त हूं। सच है कि जब मैं आपही आप निर्बल हूं तब प्रभु की सहायता से मैं बलवन्त हो जाता हूं। बीती रात को प्रभु मुझ पर प्रगट हुआ और उस ने मुझ से कहा कि हे पुलूस मत डर परन्तु बातें करता जा और चुप मत रह क्योंकि मैं तेरे संग हूं और कोई तुझ पर चढ़ाई न

करेगा कि तुझे दुःख देवे क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं इति ॥

अकिला बोला। हे गुरु जी मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उस ने आप को हमारे पास पहुंचाया इस में हमारी और हमारे घर की बड़ी भाग्यमानी है कि आप हमारे छत तले आवें क्योंकि यों महिमा का प्रभु भी यहां बिराजमान हुआ। उस के इस दर्शन से यद्यपि हम सभों ने उस को नहीं पाया तथापि उस के आत्मिक लाभ में हम सब साझी होते हैं। निःसन्देह हम को अब उचित है कि पहिले से अधिक उस के पवित्र और धन्य सेवा में लौलीन रहें उस का अनुग्रह हम सभों को अधिकाई से प्राप्त होवे कि तन मन धन से उस के कार्य्य में प्रवृत्त रहें ऐसा देख पड़ता है कि आप का जीवन और प्रभु का जीवन आश्चर्य्य रूप से एक ही है ॥

पुलूस बोला। हे भाई प्रभु की स्तुति हो कि यह बात तो सच है क्योंकि यद्यपि मैं जीता हूं तथापि मैं तो नहीं पर ख्रीष्ट मुझ में जीता है और मैं शरीर में अब जो जीता हूं सो ईश्वर के पुत्र के बिश्वास में जीता हूं जिस ने मुझे प्यार किया और मेरे लिये अपने को सौंप दिया ॥

अकिला बोला। आप क्षमा कीजिये कि इस प्रकार का वर्णन जो आप करते हैं अब लों मेरे लिये गुप्त-ज्ञान का एक भेद देख पड़ता है। ऐसा तो नहीं कि

मैं आप के बचन पर तनिक भी सन्देह करता हूं क्योंकि मुझ को साक्षात है कि आप का सम्पूर्ण जीवन शारीरिक और आत्मिक दोनों उसही रीति से जैसे आप कहते हैं प्रभु से संयुक्त रहता है। यहां लों कि उस के बिना आप कुछ नहीं करते और कुछ करने भी नहीं चाहते हैं। परन्तु भेद यह है कि ऐसी तेजस्वी उत्तम दशा मनुष्य को किस रीति से प्राप्त हो सकती है। मुझ को क्या करना चाहिये कि आप के तुल्य इसही रीति से प्रभु में लौलीन हो जाऊं॥

पुलूस बोला। हे मित्र इस में भेद केवल यह है कि मनुष्य अपनी इच्छा को त्याग सदा निरन्तर सकल विषयों में प्रभु की इच्छा पर चलने को प्रसन्न नहीं होते हैं और इस के बिना यह दशा किसी को प्राप्त नहीं हो सक्ती है। क्योंकि हमारा प्रभु एक बड़ा तेजस्वी महाराजा हां परमेश्वर का तिरमिराता हुआ तेज है और उस का अधिकार है कि प्रत्येक छोटी बड़ी बात में उस की इच्छामात्र शिष्यों के मनों में प्रबल होवे। परन्तु कितने शिष्य ऐसी भावना करते हैं कि अमुक २ बातों में हम प्रभु को प्रसन्न करेंगे और शेषों में अपनी इच्छा पर चलेंगे। ऐसे चंचल मन शिष्यों को प्रभु दया करके बचावे तो बचावे परन्तु उस का विशेष आत्मिक जीवन जिस से कुशल आनन्द और बल प्राप्त होते हैं उन के आत्माओं पर कभी विदित नहीं हो सक्ता है। यदि वे खाते पीते सब कुछ करते हुए उस

ही की इच्छा पर ध्यान कर सब कुछ करते तो वह अवश्य उन में निरन्तर बास कर महिमा की आशा और कार्य्य करने की सामर्थ्य होता । क्योंकि जो कोई अपना क्रूश उठा प्रभु का पीछा कर अपने सांसारिक जीवन को खो देता है सो सत्य आत्मिक जीवन को पाता है । परन्तु जो कोई अपने निज जीवन से प्रेम रख उस का खोज करता है सो उसे खो देता है ॥

अकिला बोला । हे गुरु मेरी बड़ी अभिलाषा है कि जैसे आप कहते हैं मैं वैसाही करूं परन्तु मेरे मन में रज और तम दोनों सत्व से सङ्ग्राम करते हैं और यह सङ्ग्राम कभी २ ऐसा कठिन होता है कि जो मैं चाहता हूं सोही नहीं करता हूं परन्तु जिस से मैं घिनाता हूं सोही करता हूं । कभी २ सांसारिक सुख विलास का रज कभी २ पक्ष और अज्ञानता का तम प्रबल हो जाता है फिर भी जब प्रभु का स्मरण कर मैं उस से सहायता मांगता हूं तो उस के अनुग्रह से सत्व भी जय पाता है । आप मेरे लिये प्रार्थना कीजिये कि मैं सर्वथा प्रभु ही का हो जाऊं और केवल उस की सेवा के लिये जीता रहूं ॥

इतने बचन कह अकिला अपने उद्यम का कार्य्य करने को गया और पुलूस ने तिमोदेउस से कहा कि पत्र लिखने की सामग्री ले आवे । तब उस ने तिमोदेउस के हाथ से थस्सलोनिकी के खिष्टीय भाइयों के पास वह शिक्षापत्र लिखा जो अब मंगलसमाचार पुस्तक में

संयुक्त है। फिर दो एक मनुष्य उस से संवाद करने को आये और इस रीति से सांझ तलक दिन वीत गया। सांझ को भजन के लिये ख्रिष्टीय शिष्यों की मण्डली युस्तुस की कोठी पर हुई और उस समय प्रेरित ने उपदेश करके प्रभु के दोबारा आने का समाचार दिया और इस का कारण यह था कि भजन के आरंभ में उस ने दाऊद के गीतों में से छियानवेवां गीत पढ़के सुनाया। फिर सारी मण्डली के लोगों ने सुर मिलाके उस को गाया। उस का तात्पर्य यह है अर्थात

परमेश्वर के लिये नया गीत गावो।
सारी पृथिवी पर परमेश्वर के लिये गावो॥
परमेश्वर के लिये गावो उस के नाम का धन्य मानो।
प्रतिदिन उस की मुक्ति को प्रगट करो॥
अन्यदेशियों में उस की महिमा प्रगट करो।
सारे लोगों में उस के आश्चर्य कर्म॥
क्योंकि परमेश्वर महान है और अत्यन्त स्तुति के योग्य।
वह सारे देवों के ऊपर भयमान है॥
क्योंकि जातिगणों के सारे देव तुच्छ हैं।
और परमेश्वर ने स्वर्ग को बनाया॥
प्रतिष्ठा और महिमा उस के आगे है।
बल और सुन्दरता उस के धर्म्मधाम में॥
परमेश्वर को हे जातिगणों के परिवारो।
परमेश्वर को प्रतिष्ठा और बल दो॥
परमेश्वर को उस के नाम की प्रतिष्ठा दो।
भेंट लाके उस के आंगनों में आवो॥

पवित्रताई की सुन्दरता के संग परमेश्वर की दंडवत करो।
हे सारी पृथिवी उस के आगे कांपो॥
अन्यदेशियों में कहो कि परमेश्वर राज्य करता है।
हां जगत स्थिर रहेगा और न टलेगा॥
वह खराई से जातिगणों का विचार करेगा।
स्वर्ग आनन्द करे और पृथिवी मगन हो॥
समुद्र और उस की भरपूरी गरजन करे।
खेत और सब जो उस में है आनन्दित होवें॥
तब बन के सारे पेड़ आनन्द करेंगे।
परमेश्वर के आगे क्योंकि वह आता है॥
क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने को आता है।
वह धर्म्म के साथ जगत का और अपनी सच्चाई के साथ जाति-
गणों का न्याय करेगा॥

जब मण्डली यह गीत गा चुकी थी तो सीलास ने सभों के लिये परमेश्वर से प्रार्थना किई। इस के पीछे पुलूस खड़ा हो उपदेश करने लगा और उस गीत के अन्तवाले तात्पर्य का कि ईश्वर न्याय करने को आता है वर्णन करके बतलाया कि ईश्वर ने एक दिन ठहराया है जो प्रभु का बड़ा दिन कहलाता है जिस में प्रभु यसू खीष्ट के द्वारा वह सारे जगत का विचार करेगा। और वह ऐसा दिन होगा जिस के समान सृष्टि के आरम्भ से उस दिन लों इस संसार में कभी नहीं हुआ। क्योंकि उस में प्रभु जो पहिले एक दीन दुर्बल मनुष्य के स्वरूप में जगत के पाप के प्रायश्चित्त के लिये आया औरही प्रकार से प्रगट होगा अर्थात आकाश के मेघों

पर जैसे सिंहासन पर बैठके और स्वर्ग के अति तेजस्वी दूतों को संग लेके बड़ी धूमधाम और विभव के संग प्रकाशमान होगा। और एक अति महान दूत नरसिंगा फूंकके सारे मृतकों को जो जगत के आरम्भ से उस दिन लों परलोक को गये बुलावेगा और वे सब जी उठके अपना २ लेखा देने के लिये प्रभु के सिंहासन के सन्मुख खड़े हो जायेंगे। तब उन का बिचार किया जायगा और एक २ की अन्तवाली दशा क्या भली क्या बुरी सर्वदा के लिये ठहराई जायगी। फिर उस ने यह भी कहा कि उस दिन के आने का ठीक समय ईश्वर को छोड़ कोई नहीं जानता है। परन्तु यह निश्चय है कि वह अचानक से आवेगा। इस कारण सारे मनुष्यों को उचित है कि उस के आने की बाट जोहते और चौकसी करते रहें। विशेष करके खिष्टीय शिष्यों को चाहिये कि अपने प्रभु की महिमा के संग आने का आसरा अपने मन में रखते रहें क्योंकि उसही दिन उन की परमगति पूरी होगी॥

इस आश्चर्य्य समाचार के कारण सारे सुननहारों के मन बहुतही बिस्मित और दंग हो गये और कितने मनुष्य अपनी मुक्ति के विषय में चिन्ता करने लगे कि उस बड़े दिन में हमारी कैसी दशा होगी। परन्तु इस बिरियां उन का वृत्तान्त लिखा नहीं जाता है केवल एक मनुष्य का थोड़ा सा वर्णन किया जाता है जो भजन के पीछे पुलूस के संग संवाद करने को अक्किला के घर

पर आया। सो यह पुरुष यवन स्तीफान था और उसके आने का कारण यह था कि यद्यपि यसू ख्रीष्ट के पुनरुत्थान पर निश्चय बिश्वास रखता था तथापि उस को सांसारिक विद्या के कारण सारे जातिगणों का जी उठना अत्यन्त असम्भव और अन्होना भी देख पड़ा। निदान वह और पुलूस इस भारी प्रकरण का बिचार करने के लिये अकिला के घर की एक कोठरी में बैठ गये और उन का संवाद इस रीति से हुआ अर्थात

स्तीफान बोला। हे गुरु आप के उपदेश और समाचार की दो एक बातें जो इससे पहिले भी मैं ने आप की शिक्षा में सुनीं भली भांति मेरी बुद्धि में नहीं आती हैं सो मैं आप से पूछने चाहता हूं दया करके मेरा सन्देह दूर कीजिये। अर्थात यह किस प्रकार से हो सक्ता है कि मृतकों की देह जो सर्वथा सड़ गई अथवा भस्म हुई और उन के कण पृथिवी के अन्य कणों में मिल गये फिर ऐसे एकट्ठे होवें कि पहिली दशा के अनुसार स्वरूप धरके जी उठें। मैं तो जानता हूं कि ईश्वर की सामर्थ्य असीम है परन्तु उस की बुद्धि भी अनन्त है और वह कोई विरुद्ध काम नहीं करेगा। परन्तु यह कि हमारे देह के कण जो सर्वथा छिन्न भिन्न हो गये और कदाचित और देहों में मिल गये ऐसी रीति पर फेर एकट्ठे हो जावें कि पृथक देह पहिली दशा के अनुसार कल्पित होवे यह तो एक विरुद्ध बात

देख पड़ती है। निदान जो मृतक जी उठें तो किस प्रकार की देह धरके उठेंगे॥

पूलूस बोला। सच है कि परमेश्वर कोई बिरुद्ध अथवा बेअर्थ काम कभी नहीं करेगा। परन्तु ध्यान करने से मनुष्य के पुनरुत्थान में किसी प्रकार की विरुद्धता देख नहीं पड़ती है क्योंकि सृष्टि के अनुक्रम में भी इस रीति का आश्चर्य्य कर्म साधारण लोगों पर विदित होता है। जैसे एक दाना जो बोया जाता है पहिले वह मर जाता है और उस के कण मिट्टी में मिल जाते हैं। फिर उस में से एक नवीन कली निकलती है जो पहिले के समान परन्तु उससे भिन्न भी देख पड़ती है। यह तो ईश्वर की शक्ति से प्रति बरस होता जाता है और मनुष्य के पुनरुत्थान का एक ठीक दृष्टान्त ठहरता है। फिर इस में एक और बात यह है कि ईश्वर की शक्ति से एक२ दाना ईश्वर की इच्छा के अनुसार अपना २ नया स्वरूप लेता है और ईश्वर जैसे चाहे एक २ को स्वरूप दे सक्ता है। यूं सृष्टि में अनगणित स्वरूप देख पड़ते हैं और एक २ स्वरूप का भिन्न २ तेज होता है सूर्य्य का एक चंद्रमा का एक तारों का एक इत्यादि और स्वरूप के बदल जाने से मूल प्रकृति का तत्व बदल नहीं जाता है। मनुष्य का पुनरुत्थान वैसाही है यह हमारी देह पृथिवी की बनी हुई नाशमान दुर्बल और अनादरता के संग सर के बीज के समान बोई जाती है पुनरुत्थान में

वह आत्मिक अविनाशी तेजस्वी सामर्थवान उठाई जायगी। फिर इस रीति से हमारे स्वरूप का बदल जाना अवश्य भी है क्योंकि शारीरिक मांस और लहू ईश्वर के आत्मिक राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते हैं॥

स्तीफान बोला। इस दृष्टान्त के द्वारा निःसन्देह मृतकों का पुनरुत्थान ऐसा असम्भव नहीं देख पड़ता है परन्तु सारे जातिगणों का एकही समय जी उठना और प्रभु के सिंहासन के सन्मुख एकट्ठा होना यह तो एक ऐसी दशा है कि उस पर ध्यान करने से मन विस्मित हो जाता है। कितनी पीढ़ियों और कालों से यह जगत मनुष्यजाति से बसा हुआ है और यह सब के सब मर गये हैं और कितने और काल लों यह जगत मनुष्यों से बसित होता रहेगा। क्या इतने प्राणियों के लिये सारे संसार में भी कोई ऐसा विस्तार पूर्वक स्थान कहीं मिल सकेगा जिस में वे सब के सब एकट्ठे हो सकें॥

पुलूस बोला। आप ने जो अभी कहा कि ईश्वर की सामर्थ्य असीम है सो सच है और उस अद्भुत दशा के लिये निःसन्देह वह यथायोग्य प्रबन्ध सिद्ध करेगा। उस का पूरा वृत्तान्त मैं नहीं कहता हूं कदाचित इस शारीरिक व्यावहारिक दशा में इस का ठीक बिचार करना हमारे लिये अन्होना होता। ईश्वरावेश से मैं इतना कह सकता हूं कि जब प्रभु आप जयजयकार

से महादूत के शब्द के संग परमेश्वर का नरसिंघा फूंकते हुये स्वर्ग पर से उतरेगा तब जो लोग ख्रीष्ट में होके मुये हैं पहिले उठेंगे । उस पर जो जीते छुटेंगे उन्हों समेत मेघों में अचानक उठाये जायेंगे कि आकाश में प्रभु से भेंट करें सो हम प्रभु के संग सर्बदा रहेंगे । निःसन्देह यह सारा समाचार ऐसा है जो मनुष्य के बुद्धिमात्र से ज्ञात नहीं हो सकता परन्तु ईश्वर ने अपने पवित्र आत्मा से हम को इस का ज्ञान दिया है और बिश्वासी शिष्य उस को प्रतीत कर बड़ी शान्ति पाता है ॥

स्तीफान बोला । इस के प्रतीत करने में प्रभु का पुनरुत्थान निःसन्देह एक बड़ी सहायक बात है क्योंकि यदि वह मनुष्य होके जी उठा है तो वैसीही शक्ति से और भी मनुष्य उसही रीति से उठाये जा सकते हैं और प्रभु का पुनरुत्थान मेरी बुद्धि में ऐसे प्रमाणों से जो खण्डन नहीं हो सकते हैं सिद्ध और स्थापित है । फिर उस का मृत्यु के पंजे से छूटके अपनी शक्ति से जी उठना स्पष्ट रूप से ऐसा अतुल्य अद्भुत दैवीय कर्म है कि जो यह कर सकता है अवश्य सब कुछ कर सकेगा । आगे को मैं मृतकों के पुनरुत्थान पर सन्देह न करूंगा ।

पुलूस बोला । प्रभु के मनुष्य होके जी उठने में एक और बात भी है अर्थात कि इस में जैसे कि अपने मरण में वह मनुष्यजाति का प्रति निधि ठहरता है

और जिस प्रकार से कि आदि पुरुष अर्थात आदम के पाप से उस के सारे सन्तान पापी हो मरते जाते हैं इसी प्रकार से इस द्वितीय आदम अर्थात प्रभु यसू खीष्ट के द्वारा उस के सारे बिश्वासी शिष्य उस के पुनरुत्थान में साक्षी होते हैं। इस कारण जो इस जीवन में उस पर बिश्वास लाके आत्मिक रूप से उस के संग जी उठे हैं उन को चाहिये कि लौकिक बस्तुओं पर नहीं बरन स्वर्गीय बस्तुओं पर अपना चित्त लगावें। क्योंकि प्रभु पर बिश्वास ला और उस में संयुक्त हो वे उस के संग मर भी गये और जी भी उठे और उन का जीवन प्रभु के संग परमेश्वर में गुप्त है और जब प्रभु जो उन का जीवन है अन्तकाल में प्रगट होगा तो वे भी उस के संग ऐश्वर्य में प्रगट हो जायेंगे॥

निदान इसही प्रकार से पुलूस और स्तीफान पुनरुत्थान के भारी प्रकरण में कुछ बिलम्ब लों संवाद करते रहे। उन के सम्पूर्ण प्रश्न उत्तर का बर्णन यहां लिखा नहीं जाता है परन्तु जो कोई इस का तात्पर्य और भी परखना चाहे तो पुलूस के शिक्षापत्रों में जो मंगलसमाचार पुस्तक में संयुक्त हैं उस का खोज करे तब उस का वृत्तान्त और प्रमाण जितना चाहिये उस पर प्रगट हो जायगा॥

आठवां अध्याय ।

खिष्टीय शिष्यों का व्यवहार यहूदियों की कुमंत्रणा और रूमी अध्यक्ष का न्याय ।

इतने में अनेक मास बीत गये थे जब से कि पुलूस पहिले कोरिन्तुस में आया और पवित्रात्मा के गुण-दायक अनुग्रह से उस के उपदेश के कारण बहुतेरे मनुष्य जिन में थोड़े यहूदी और बहुधा अन्यदेशी थे खिष्टीय शिष्य हो गये और होते जाते थे। इस रीति से प्रभु यसू खीष्ट का मुक्तिदायक कर्म जिस से मनुष्य पाप के फल और बल से छुटकारा पाता है उस के शिष्यों के द्वारा कोरिन्तुस के निवासियों में प्रकाशित होने लगा क्योंकि कितने मनुष्य जो पहिले अन्य नगर निवासियों की रीति पर सुखबिलास और राग रङ्ग के पापसागर में डूब मरे थे अब यसू खीष्ट के बचन और प्रेम के कारण नवीन जीवन प्राप्त कर और ही प्रकार के मनुष्य बन गये। और खिष्टियों का शुद्ध प्रेमपूर्वक व्यवहार और परस्पर पवित्र सम्बन्ध नगर के छली कामातुर स्वार्थदृष्टि मूर्त्तिपूजकों को अत्यन्त आश्चर्य्य जनक देख पड़े क्योंकि खिष्टीय शिष्य सत्यबादी कोमल मन उपकारी थे और समस्त अपने मित्रों और जानपहिचानों में जाके नित्य उद्योग किया करते थे कि प्रभु पर बिश्वास लाके वे भी कुशल आनन्द और मुक्ति

पावें। फिर वे केवल नगर निवासियों के बीच नहीं बरन आसपास के गांवों बस्तियों और नगरों में भी मंगलसमाचार प्रचारने को जाते थे और पुलूस भी उन सारे सिवानों में खिष्टीय भाइयों के संग ईश्वर के राज्य का बचन सुनाता रहा॥

इस नवीन अनोखी दशा में अनेक ऐसे प्रकरण उपस्थित हुए जिन में नये शिष्यों की अगुवाई करनी कि यसू खीष्ट की व्यवस्था के अनुसार चलें पुलूस को अवश्य पड़ा। क्योंकि जब किसी यवन या रूमी या अन्यदेशी के घराने में दो एक जन शिष्य हो गये और उन के कुटुम्बदारी उन को सताते थे अथवा उन को देवताओं और मूर्त्तों की पूजा में ले जाने चाहते थे किम्वा अपने किसी अनुचित कर्म में साझी करते थे तो इस दशा में वे कभी २ भली भांति नहीं जानते थे कि उन से कैसा व्यवहार रखना चाहिये। जब पुलूस उन के संग था तो उसने एक २ प्रकरण का प्रबन्ध खिष्टीय व्यवस्था के अनुसार उन के लिये किया और पीछे जब उन से विदा हुआ तो उस ने ऐसे २ विषयों का ठिकाना शिक्षापत्र लिखके उन के लिये ठहराया। दो ऐसे पत्र जिन को उस ने अन्य नगरों में होके कोरिन्ती भाइयों के पास लिखा मंगलसमाचार पुस्तक में संयुक्त हैं और उन से प्रगट होता है कि पुलूस ने ऐसे २ प्रकरणों का कैसा प्रबन्ध ठहराया। उन पत्रों में एक आश्चर्य्यरूप दैवीय बुद्धिमानी देख पड़ती है क्योंकि

वे ईश्वरावेश से लिखे गये और उन का तात्पर्य्य सारे खिष्टीय शिष्यों के लिये ईश्वर का बचन ठहरता है॥

एक ऐसा प्रकरण यह था कि क्या व्यभिचारियों की संगत करनी उचित है कि नहीं। सो पुलूस ने उन को बतलाया कि इस जगतके व्यभिचारियों वा लोभियों वा उपद्रवियों वा मूर्त्तिपूजकों की सर्वथा संगत न करने की आज्ञा नहीं है नहीं तो जगत में से निकल जाना अवश्य होता। परन्तु आज्ञा यह है यदि कोई जो भाई अर्थात खिष्टीय शिष्य कहलाता है व्यभिचारी वा लोभी वा मूर्त्तिपूजक वा निन्दक वा मद्यप वा उपद्रवी होवे तो उस की संगत न करना हां उस के संग भोजन भी न करना और पुलूस ने एक ऐसे मनुष्य को उन में से निकालने की आज्ञा भी दिई॥

फिर मूर्त्तों के प्रसाद खाने के विषय में उस ने यह आज्ञा दिई कि मूरत तो जगत में कुछ बस्तु है नहीं और एक को छोड़ कोई परमेश्वर नहीं है। जितने और परमेश्वर और देवते कहलाते हैं सो व्यर्थ हैं इस दशा में प्रसाद का बस्तुतः कुछ दोष नहीं हो सक्ता है और उस के खाने में भी कुछ दोष नहीं है। फिर भी कितने अज्ञान निर्बल शिष्य कदाचित इतना ज्ञान नहीं रखते हैं और उनके लिये प्रसाद खाना बुरा है और ऐसे दुर्बल भाइयों के मन को घायल न करने के निमित्त प्रसाद न खाना और शिष्यों के लिये भी भला है॥

निदान नाना प्रकार के ऐसे प्रकरण थे जिन में नये शिष्यों के लिये पुलूस की अगुवाई अवश्य थी और कितने ऐसे भी थे जिन के कारण से यवन आदि नगरनिवासी और यहूदी लोग भी जो खिष्टीय शिष्यों की कुटुम्बदारी में थे परन्तु बिश्वास नहीं लाते थे उन से अप्रसन्न हो गये। क्योंकि यहूदी लोग कठिन पक्ष के मारे उन को अपने बैरियों के समान मानते थे और जब यवन आदि अन्यदेशी शिष्य अपने पुरातन देवपूजा की रीतों पर नहीं चलते थे तो क्या आश्चर्य्य था कि उन के समजातीय मित्र खेदित होवें। उन दिनों पोस्साइडौन देवता की पूजा में प्रति बरस का वह बड़ा मेला लगता था जिस में सम्पूर्ण यवन देश के भिन्न २ भागों से उस कुल के मनुष्य लीला क्रीड़ा करने को कोरिन्तुस नगर में आते थे और रूमी महाराजाधिराज ने उस देश के राज्यकार के लिये एक नवीन रूमी अध्यक्ष को भेज दिया था और इस कारण से कोरिन्तुस के निवासी एक भारी मेले की बाट जोहते थे। क्योंकि यह नवीन अध्यक्ष जिस का नाम गलियून था महाराजा के एक विशेष मित्र और प्रसिद्ध रूमी विद्यावान सेने का नामक का भाई था और सब लोगों ने ऐसा समझा कि निश्चय करके बड़ी धूमधाम के संग मेले में आवेगा। इस कारण से दो एक यवन नवीन शिष्य दुबधे में पड़े थे क्योंकि उन का पुरातन व्यवहार सदा मेले में जाने का था और उन के मित्र

उन को मनाने लगे कि अवश्य इस मेले में आना तो चाहिये। परन्तु जब उन्हों ने पुलूस से शिक्षा और परामर्श लिया तो उस ने उन को बतलाया कि किसी प्रकार की मूर्त्तिपूजा में साझी होना सत्य खिष्टीय शिष्य को अन्होनी बात है इस कारण उन्हों ने मेले में जाना ग्रहण न किया और यों उन के मित्र अत्यन्त अप्रसन्न हुए। इन कारणों से अन्यदेशियों में भी जैसा यहूदियों में खिष्टीय शिष्यों पर कुछ कठिन द्वेष और घिन उपजने लगा॥

रूमी अध्यक्ष गलियून का थोड़ा सा वर्णन उस के भाई सेनेका के पुस्तक में जो आज लों उपस्थित है लिखा है कि उस का स्वभाव अत्यन्त कोमल और मीठा था और उस का शिष्टाचार और सुशीलता सब लोगों में प्रसिद्ध थे। कदाचित यही कारण था कि यहूदी बैरी उस के आने से औसर पाके खिष्टीय मण्डली की और विशेष करके पुलूस प्रेरित की विरुद्धता में कुमंत्रणा करने लगे। क्योंकि उन्हों ने समझा कि यह नया अध्यक्ष जो ऐसा सुस्वभाव है अवश्य अपनी प्रजाओं को प्रसन्न करने चाहेगा और केवल हम यहूदी ही नहीं परन्तु समस्त अन्यजाति भी इन घिनित खिष्टियानों से अत्यन्त दुःखी और खेदित होके रिसियाते हैं। सो यदि हम अध्यक्ष के बिचारस्थान में इन लोगों के कुकर्मों का अपवाद लगावें तो निश्चय वह न्याय करके उन को दण्ड देगा। इस बिचार पर उन्हों ने

पुलूस का अपवादपत्र लिखके अध्यक्ष के आगे धर दिया और उस की आज्ञा से इस प्रकरण की परीक्षा के लिये एक दिन स्थापित हो गया ॥

रूमी अध्यक्ष अपना विचारस्थान नगर के एक बड़े चौक अथवा चौगान में रखते थे वहां एक चबूतरे के ऊपर न्याय का आसन लगा था जिस पर अध्यक्ष न्याय करने को बैठ जाता था उस के निकट रूमी योद्धा कोतवाल चपरासी लेखक उत्तरवादी इत्यादि कचहरी के अधिकारी खड़े वा बैठे थे । उस के सन्मुख अपवादी और प्रतिवादी खड़े हो गये और चारों ओर सुन्नेहारे नगरनिवासियों की एक बड़ी भीड़ एकट्ठी हो जाती थी । स्थापित दिन पर यहूदी मण्डलीघर का प्रधान सोस्थनीज अपवादी और पुलूस प्रतिवादी अपने २ स्थान पर अध्यक्ष के आगे उपस्थित थे और अनेक यहूदी साक्षी देने के निमित्त सोस्थनीज के पीछे बड़ी उग्रता से दबाते थे । पुलूस के संग सीलास अकिला गायूस आदि खिष्टीय भाई भी वहां उपस्थित थे । जब अपवादपत्र सुनाया गया तो सोस्थनीज बड़े उत्साह से बोलने लगा कि यह तो एक बड़ा अपराधी है क्योंकि वह लोगों को भरमाता है कि हमारी व्यवस्था की विपरीत परमेश्वर का भजन करें फिर जब वह अपवाद कर चुका तो पुलूस उत्तर देने को सिद्ध था परन्तु ज्योंही वह अपना मुंह खोलने पर था त्योंही गलियून अध्यक्ष ने यहूदियों से कहा ॥

गलियून बोला । हे यहूदियो यदि यह कोई कुकर्म अथवा बुरी कुचाल की बात होती तो उचित था कि मैं धीरज करके तुम्हारी सुनता । परन्तु यह जो तुम्हारी शिक्षा और नामों और तुम्हारी व्यवस्था का विषय है तो तुम्हीं जानो क्योंकि मैं ऐसी बातों का न्यायकर्त्ता होने नहीं चाहता हूं ॥

जब अध्यक्ष इतना बचन कह चुका था तो सोस्थनीज और अन्य यहूदी विस्मित और उदास हो गये क्योंकि उन का सारा परामर्श और यत्न इस रीति से वृथा ठहरा और सोस्थनीज ने इस बिचार से कि क्या जाने अध्यक्ष के दबाने से कुछ बन पड़ेगा दोबारा बोलने का बड़ा यत्न किया परन्तु इस रीति से भी कुछ नहीं बना क्योंकि ज्योंही वह बोल उठा त्योंही कचहरी के अधिकारियों ने उस को चुप करके बरबस्ती से अध्यक्ष के आसन के सन्मुख से हटाया और जब वह चिल्लाने पुकारने लगा तो यवन लोग जो उपस्थित थे उस के इस निरादर से निपट अप्रसन्न हो उस को मारने लगे और अध्यक्ष ने भी यह देख और कदाचित बिचार कर कि ऐसे उपद्रवी को कुछ दंड होना उचित है उन को नहीं रोका सम्भव है कि यह दशा देख और अपने बिरोधी के दुःख पर दया कर पुलूस ने उस के मारनेवालों से बिन्ती किई होगी कि उस को छोड़ दें क्योंकि जिस के मन में प्रभु यसू का प्रेम प्रबल है सो उस की आज्ञा के अनुसार अपने बैरियों को प्यार करता है

जो उस को साप देवें उन को आशीष देता है जो उस से बैर करते हैं उन से भलाई करता है जो उस को सतावें और अपमान करें उन के लिये प्रार्थना करता है । यह तो एक ऐसा स्वभाव और व्यवहार है जो सांसारिक शारीरिक लोगों की बुद्धि में भली भांति नहीं आता है क्योंकि वह मूल दैवीय और खिष्टीय है और यदि यवनों ने पुलूस की बिन्ती के कारण सोस्थनीज को छोड़ दिया और उस को मारने से हाथ उठाया तथापि उन्हों ने अवश्य उस का अभिप्राय भली भांति नहीं समझा होगा । सोस्थनीज ने उस को किस प्रकार से मान लिया सो नहीं लिखा है परन्तु पुलूस के पत्रों में सोस्थनीज एक खिष्टीय शिष्य का नाम आता है और जो वह यही मनुष्य था तो कुछ आश्चर्य्य नहीं। कदाचित पुलूस के प्रेमसंयुक्त व्यवहार के कारण उस का मन प्रभु के अनुग्रह से बदल गया ॥

अध्यक्ष के इस बिचार में दो एक बातें ध्यान के योग्य देख पड़ती हैं । एक तो यह है कि उस के अनुसार धर्म्म विशेष प्रकरण सांसारिक राज्य विशेष से भिन्न है क्योंकि धर्म्म का विषय आत्मिक और ईश्वरीय है परन्तु सांसारिक राज्यकार केवल उन विषयों से सम्बन्ध रखता है जो मनुष्य के सांसारिक जीवन से संयुक्त है । राजा का विशेष कर्म है कि अपनी प्रजा का लौकिक न्याय करे और उन के धर्म्म में हाथ न लगावे। केवल यह है कि यदि प्रजा धर्म्म का नाम लेके किसी पर

अन्धेर करें तो उस अन्धेर का दण्ड ठहराना राजा का अधिकार है इस को छोड़ सम्पूर्ण धर्म्म विशेष पुरषार्थों को छोड़ देना राजा का न्याय है। क्योंकि धर्म्म के विषय में प्रत्येक मनुष्य को राजा के तो नहीं बरन ईश्वरही के सन्मुख उत्तर देना पड़ेगा। यों धर्म्म के कारण प्रजा को सताना राजा का साक्षात अन्याय है इस के अनुसार प्रभु यसू खीष्ट ने आज्ञा दिई कि जो कैसर का अर्थात राजा का है सो राजा को दो और जो ईश्वर का है ईश्वर को दो॥

परन्तु निश्चय नहीं होता है कि रूमी अध्यक्ष ने ऐसा समझके यह बिचार किया क्योंकि वह एक मूर्त्तिपूजक था और ऐसे लोग बहुधा धर्म्म का इस से भिन्न बिचार करते हैं। साधारण रूप से किसी धर्म्म के विषय में उन का यह बिचार नहीं है कि सत्य है कि असत्य परन्तु यह है कि क्या सनातन का अथवा बाप दादों का किम्बा देश का अथवा राजा का है कि नहीं। इस रीति से मिथ्या धर्म्म का भी सहन करना जो देश का अथवा पित्रों का हो उन के लिये कुछ कठिन नहीं है। इस के अनुसार रूमी लोग समस्त अन्यदेशों के देवताओं को ग्रहण करके अपने सर्वदेवालय में पूजते थे और प्रभु यसू खीष्ट की मूर्त्ति भी बनाके उस की पूजा करते। परन्तु सत और तम में मेल नहीं हो सकता है और ईश्वर का सत्य धर्म्म किसी मिथ्या धर्म्म का सहन नहीं कर सकता

नहीं तो वह ईश्वरीय क्योंकर ठहरता । क्या कोई राजा अपने राज्य में किसी दूसरे को राजा होने देगा। इस दशा में यदि ख्रिष्टीय शिष्य मिथ्या धर्म्मों के संग ईश्वरीय सत्य धर्म्म का मेल कराने चाहते तो केवल अपने धर्म्म की सत्यता को नष्ट करते और ईश्वर की अपनिन्दा करते। फिर जब मिथ्या मतावलम्बी ख्रिष्टीय धर्म्म का यह विशेष गुण देख लेते हैं तो वे उस को अपना बैरी जानके उस की बिरुदता करते और उस के शिष्यों को सताने लगते हैं । इस के अनुसार प्रथम काल में रूमी लोगों ने पहिले निर्पक्ष हो ख्रिष्टीय धर्म्म का सहन किया परन्तु पीछे से जब देख लिया कि वह मिथ्यता का सहन नहीं करता है तो उसके शिष्यों को बहुत सताया । इस रीति से सत और तम का सङ्ग्राम सनातन से चला आया है और इस बात की चितौनी प्रभु ने पहिले से अपने शिष्यों को दिई कि वह समय आता है जिस में जो कोई तुम्हें मार डालेगा सो समझेगा कि मैं ईश्वर की सेवा करता हूं और वे तुम से इस लिये यह करेंगे कि उन्हों ने न पिता को न मुझ को जाना है ॥

फिर जब प्रभु ने इस दशा की भविष्यद्वाणी अपने शिष्यों को दिई तो इस का अभिप्राय और कारण और फल भी उन की शान्ति के लिये बतलाया कि इस रीति से शिष्य अपने व्यवहार और बचन के द्वारा समस्त प्रकार के लोगों के सन्मुख प्रभु की साक्षी देने

पावेंगे। और यों उस का मुक्तिदायक मंगलसमाचार सारे संसार में प्रचलित होगा और इस के संग उस ने उन की सहायता और रक्षा करने की प्रतिज्ञा भी किई। क्योंकि प्रभु सारी सृष्टि का महाराजा होके इस जगत की दशा पर और विशेष करके अपने विश्वासी शिष्यों की आपत्तियें और खटकाओं पर प्रेमपूर्वक दृष्टि किया करता है और उन के समस्त वृत्तान्त का प्रबन्ध ठहराता है। इस दशा में वे उस को अपना संगी समदुःखी जानके बड़े साहसी और बलवन्त होते हैं क्योंकि उस ने यों कहा है अर्थात कि लोग तुम पर अपने हाथ बढ़ावेंगे और तुम्हें सतावेंगे और मेरे नाम के कारण मण्डलीघरों और बन्दीगृहों में रखवावेंगे और राजाओं और अध्यक्षों के आगे ले जावेंगे पर इस से तुम्हारे लिये साक्षी हो जायगी। सो अपने २ मन में ठहरा रखो कि हम उत्तर देने के लिये आगे से चिन्ता न करें क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बचन और ज्ञान देऊंगा कि तुम्हारे सब बिरोधी उस का खण्डन अथवा सामना नहीं कर सकेंगे। तुम्हारे माता पिता भाई और कुटुम्ब और मित्र लोग तुम्हें पकड़वावेंगे और तुम में से कितनों को घात करवावेंगे और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे परन्तु तुम्हारे शिर का एक बाल भी नष्ट न होगा अपनी धीरता से अपने प्राणों की रक्षा करो इति॥

वह वृत्तान्त जो सोस्थनीज के द्वारा पुलूस पर बीत

गया सो दो एक प्रकारों से बड़ा लाभदायक ठहरा अर्थात इस रीति से यहूदियों पर प्रकाशित हो गया कि खिष्टीय शिष्यों के सताने में न तो रूमी अध्यक्ष न तो यवन नगरनिवासी साझी होवेंगे और अपनी कुमंत्रणा को वृथा देखके उन्हों ने उस को कुछ बेर लों छोड़ दिया। फिर जब यवनों ने अध्यक्ष के बिचारस्थान में पुलूस का अति योग और महिमापूर्वक व्यवहार देखा तो वे अपने मन में बिचार करने लगे कि यह मनुष्य एक सज्जन सतपुरुष देख पड़ता है और यों वे उस के अन्य समाचार सुन्ने पर आगे से अधिक सिद्ध और प्रसन्न हुये। इस वृत्तान्त से पुलूस ने भी एक और बार अपने प्रिय प्रभु की सत्यता का लक्षण पाया और उस के अनुग्रह से साधारण लोगों में सन्मान प्राप्त कर बचन के प्रचारने में और भी साहसी और आश्वित हो गया। इन कारणों से जब भाइयों के संग अकिला के घर पर लौट आया और फिर जब युस्तुस की कोठी पर खिष्टीय मण्डली में भजन करने को गया तो बड़े आह्लाद के संग ईश्वर का धन्यवाद कर सभों के मन को उभारा कि प्रभु की सेवा में तन मन धन से लौलीन रहें॥

नवां अध्याय ।

मित्रों का अफसुस नगर को सिधारना और कैसरिया और यरूसलम नगरों का वर्णन ।

जब पुलूस डेढ़ बरस अथवा दो बरस के लगभग प्रभु का काम करते २ कोरिन्तुस नगर में रहा था तो उस के मन में आया कि अब ईश्वर के अनुग्रह से खिष्टीय मण्डली की नेव इस नगर में भली भांति लग गई है इस कारण दूसरे सिवानों में इसही अभिप्राय से प्रस्थित होना चाहिये । फिर उन्हीं दिनों उस के दो मित्र अकिला और प्रिसकिला किसी हेतु से कदाचित अपने व्योपार करने के निमित्त बड़े प्रसिद्ध नगर अफसुस को जाने पर थे और पुलूस ने ठहराया कि उन के संग सिधारिये । क्योंकि उस की यह इच्छा भी थी कि पवित्र नगर यरूसलम में यहूदियों के एक बड़े पर्ब्ब के समय उपस्थित होवे और इस के लिये अफसुस से होके जाना भला था ॥

यहूदी लोगों के प्रति बरस तीन बड़े पर्ब्ब थे जिन के मान्ने के लिये उस देश के सारे पुरुषों को यरूसलम में उपस्थित होने की आज्ञा थी । एक तो पार जाने का पर्ब्ब जिस का थोड़ा सा वर्णन ऊपर हुआ । दूसरा पन्तिकोस्त अर्थात पचासवें दिन का पर्ब्ब जिस में भूमि के पहिले फल की भेंट मन्दिर में चढ़ाते थे । तीसरा

तम्बुओं का पर्व्व जिस में वे मिसर देश से छूटके अरण्य में यात्रा करने का स्मरण करते थे। सम्भव है कि पुलूस दूसरे अर्थात पन्तिकोस्त के पर्व्व में जाने चाहता था क्योंकि उस से पहिले नौका में सागर के पार जाने की ऋतु ठीक न थी॥

पुलूस का कोरिन्तुस के खिष्टीय भाइयों से बिदा होना अवश्य उस को और सभों को एक बड़ा खेदजनक वृत्तान्त ठहरा होगा। उस दशा का तो कुछ वर्णन नहीं लिखा है परन्तु उस के समान एक और वृत्तान्त वर्णित है जिस की दो एक बातें इसी दशा के बहुत योग्य देख पड़ती हैं क्योंकि इस के कितने बरस पीछे पुलूस इसही रीति से अफसुस के भाइयों से बिदा हुआ और उस समय उस ने उन के संग प्रार्थना करके यों कहा कि तुम जानते हो कि पहिले दिन से कि मैं यहां आया क्योंकर मैं हर समय तुम्हारे बीच में रहा कि बड़ी दीनताई से और रो रोके और उन परीक्षाओं में जो मुझ पर यहूदियों की कुमंत्रणा से पड़ीं मैं प्रभु की सेवा करता रहा और क्योंकर मैं ने लाभदायक बातों में से कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई और लोगों के आगे और घर २ तुम्हें न सिखाई। कि यहूदियों और यूनानियों को भी मैं साक्षी देके ईश्वर के आगे पश्चात्ताप करने की और हमारे प्रभु यसू खीष्ट पर बिश्वास करने की वार्त्ता करता रहा। इस लिये मैं आज के दिन ईश्वर को साक्षी रखके तुम से कहता हूं कि मैं

सभों के लोहू से निर्दोष हूं क्योंकि मैं ने ईश्वर के सारे मत में से कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई। सो तुम जो मण्डली के उपदेशक हो अपने विषय में और सारे झुंड के विषय में जिस के बीच में पवित्र आत्मा ने तुम्हें रखवाले ठहराये हैं सचेत रहो कि तुम ईश्वर की मण्डली की चरवाही करो जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है। क्योंकि मैं यह जानता हूं कि मेरे जाने के पीछे क्रूर हुंडार तुम्हों में प्रवेश करेंगे जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारेही बीच में से भी मनुष्य उठेंगे जो शिष्यों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी बातें कहेंगे इस लिये मैं ने जो डेढ़ बरस रात दिन रो रोके हर एक को चिताना न छोड़ा इस का स्मरण करते हुए जागते रहो। और अब हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वर को और उस के अनुग्रह के बचन को सौंप देता हूं जो तुम्हें सुधारने और सब पवित्र लोगों के बीच में अधिकार देने सकता है। मैं ने किसी के रूपे अथवा सोने अथवा बस्त्र का लालच नहीं किया तुम आपही जानते हो कि इन हाथों ने मेरे प्रयोजन की और मेरे संगियों की टहल किई मैं ने सब बातें तुम्हें बताईं कि इस रीति से परिश्रम करते हुए दुर्बलों का उपकार करना और प्रभु यसू की बातें स्मरण करना चाहिये कि उस ने कहा कि लेने से देना अधिक धन्य है इति॥

जब पुलूस इतना बचन कह चुका था तो उन सभों

ने घुटना टेका और पुलूस ने उन के संग परमेश्वर से प्रार्थना किई। इस के पीछे कितने मनुष्य पुलूस और उस के समयाचियों के साथी हो उन को कङ्क्रिया के मार्ग में कुछ दूर लों ले चल बड़े स्नेह और शोक सहित उन से बिदा हुए। कङ्क्रिया बस्ती कोरिन्तुस नगर का पूर्वी बन्दर उस से आठएक मील दूर थी और उस के मार्ग की दोनों ओर यवनों के समाधिस्थान और सरो वृक्षों के बन लगे थे। उस का बन्दर दो बड़ी भीतों से जो सागर में दौड़ गई थीं बना था दोनों भीतों के सिरे पर नेपच्यून देवता के मन्दिर और उन के बीच चटान के ऊपर उस की एक बड़ी मूरत बनी थी। बन्दर में अनेक पूर्वी देशों की नौका लंगर डाल रहे थे उन में से एक पर अफ़सुस को यात्रा करने का भाड़ा उन्हों ने चुकाया परन्तु नौका पर चढ़ जाने से पहिले उन में से एक अथवा पुलूस अथवा अक्विला ने अपना शिर मुड़ाया क्योंकि उस ने मन्नत मानी थी। विदित नहीं है कि इस का क्या कारण और क्या अभिप्राय था। यहूदियों की यह रीति थी कि कष्ट और विपत्ति की दशा में वे छुटकारा के लिये ईश्वर से प्रार्थना करके मन्नत भी मानते थे कि कुछ बेर लों एक प्रकार की तपश्या करके अपने शिर के बाल न काटेंगे और जब वह समय बीत जाता था तो अपना शिर मुड़वाके उस के बाल ईश्वर के मन्दिर में भेंट चढ़ाते थे। कदाचित पुलूस ने अपनी दुर्बलता की दशा में ऐसा किया हो

और यह भी एक कारण हुआ हो कि वह यरूसलम के मन्दिर में जाने चाहता था। परन्तु यदि उस ने ऐसा किया तो उस का कारण यह नहीं था कि वह ऐसे शारीरिक रीतों और उपायों पर कुछ भरोसा रखता था केवल अपने यहूदी भाइयों को प्रसन्न करने के निमित्त किया होगा। क्योंकि ऐसे अधम और समपक्षी प्रकरणों में जिन में न पाप न पुण्य है उस का वह व्यवहार था जिस का वर्णन उस ने कोरिन्तियों के शिक्षापत्र में लिखा है। अर्थात कि सभों से निर्बन्ध होके मैं ने अपने को सभों का दास बनाया कि मैं अधिक लोगों को प्राप्त करूं और यहूदियों के लिये मैं यहूदी सा बना कि यहूदियों को प्राप्त करूं दुर्बलों के लिये मैं दुर्बल सा बना कि मैं दुर्बलों को प्राप्त करूं मैं सभों के लिये सब कुछ बना हूं कि अवश्य मैं कई एक को बचाऊं इति। परन्तु कितने बुद्धिमान बिचार करते हैं कि मन्नत का यह वर्णन न कि पुलूस के विषय में बरन अकिला का लिखा है॥

सीलास और तिमोदेउस का वर्णन इस यात्रा में नहीं लिखा है परन्तु सम्भव है कि वे भी पुलूस अकिला और प्रिसकिला के संग थे। अफसुस नगर जिस की वे यात्रा करते थे यूरप महाखण्ड में न था वह एशिया महाखण्ड के जिस की पूरब दिशा में भारतवर्ष उपस्थित है पश्चिम भाग का प्रधान नगर था। उस का स्पष्ट वर्णन आगे लिखा जायगा जब पुलूस का वहां दो बरस

लों रहना वर्णित होगा। इस स्थान पर केवल इतना लिखा जाता है कि उस के आदि निवासी एशिया खण्ड वाले थे और यद्यपि पीछे से यवन रूमी इत्यादि यूरप खण्ड वाले उस में बस गये तथापि उस के बहुधा निवासी सदा एशिया वाले थे। कङ्क्रिया और अफ-सुस के बीच यवन का छोटा सागर पड़ा था और उस के पार जाने की दस बारह दिन की यात्रा थी। अफ-सुस नगर एक छोटी नदी कैस्तर नामे के तट पर यवन सागर के निकट बना था और नगर का बन्दर उस नदी के मुंह पर था। जब नगर और देश रूमियों के राज्य में संयुक्त हो गया तब उन्हों ने उस देश का एशिया नाम से एक चकला बनाया और अफसुस नगर को चकलेदार की राजधानी ठहराया। फिर अपने व्यवहार के अनुसार उन्हों ने दो बड़े राजमार्गों को एक तो नगर से उत्तर पूर्व की ओर एक दक्खिन पूर्व के कोने को बनाया। इस रीति से अफसुस नगर बहुतेरे पूर्वी देशों के लिये व्योपार करने का बन्दर हो गया और उस के और कोरिन्तुस के बीच नौकाओं का गमनागमन बहुत हो रहा॥

जब यात्री अफसुस में पहुंचे तो अकिला और प्रिसकिला व्योपार करने के निमित्त वहां रहने लगे परन्तु पुलूस उस समय उन के संग रह न सका केवल नगर में जा शनिवार अर्थात यहूदियों के विश्रामदिन पर मण्डलीघर में गया और जैसे कोरिन्तुस में किया

था यहूदियों के भजन में साझी हो उन का उपदेश कर यसू ख्रीष्ट का मंगलसमाचार उन को सुनाया। उन्हों ने सुनके उस से बिन्ती किई कि हमारे संग कुछ दिन और रहिये। परन्तु उस ने यह कहके न माना कि आनेवाला पर्ब्ब यरूसलम में करना मुझे बहुत अवश्य है परन्तु ईश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर लौट आऊंगा। यह कहके वह उन से बिदा हुआ और नौका पर चढ़के फिर यरूसलम नगर की यात्रा करने लगा परन्तु अब उस यात्रा को छोड़ दो एक और बातों का वर्णन करना अवश्य पड़ता है॥

विदित हो कि प्राचीन रूमियों ने जो उस काल में उन सारे देशों के ऊपर प्रबल थे अपने बड़े राज्य का अत्यन्त ठीक प्रबन्ध ठहराया था। प्रत्येक पराजित प्रदेशों को चकला करके उन्हों ने उन के लिये चकलेदार और राजधानी ठहराया। इस के अनुसार यवन देश के दक्खिनी भाग का एक चकला अखाया नामे था और उस की राजधानी वह कोरिन्तुस नगर थी जिस का वर्णन हो चुका है। फिर अफसुस नगर एक और ऐसे चकले की राजधानी थी और उस चकले का नाम एशिया था। परन्तु उस में वह सारा महाखण्ड जो इन दिनों एशिया कहलाता है संयुक्त न था। केवल उस के पश्चिम भाग का जो सागर के तट पर है थोड़ी सी भूमि संयुक्त थी। उस चकले की दखिन पूरब कोन में एक और चकला सूरिया नामे था और उस की राज-

धानी अन्ताकिया नगर थी । सूरिया चकले की दक्खिनी भाग में यहूदिया देश जिस की प्राचीन राजधानी और पवित्र नगर यरूसलम था पहिले उपस्थित था। परन्तु पीछे से यहूदियों के विशेष व्यवहार और धर्म्म के कारण रूमी महाराजा ने यहूदिया देश को एक अलग चकला बनाया और चकलेदार की राजधानी के लिये कैसरिया नगर को ठहराया। यह नगर कैसरिया भूमध्यस्थ सागर के तट पर बना था और यरूसलम के लिये जो सागर से कुछ दूर था बन्दर की रीति पर ठहरा। यों यरूसलम को जाने में पुलूस को कैसरिया से होके जाना पड़ा॥

खिष्टीय धर्म्म के बिस्तृत होने के वृत्तान्त में कैसरिया नगर का वर्णन कई बार आता है। जब यहूदिया देश सूरिया के चकले में संयुक्त था तो रूमी महाराजा के आधीन देशी राजा उस देश पर राज्य करते थे। उन में एक हेरोदीस प्रथम ने जो बड़ा कहलाता है कैसरिया नगर को बड़ा धन व्यय करके संवारा और महाराजा की प्रतिष्ठा के निमित्त उस का नाम कैसरिया अर्थात महाराजिया ठहराया। उस के बन्दर के लिये एक अति बड़ी अर्धगोल भीत जिस में चालीस हाथ के पत्थर जोड़े थे और उस का मुंह उत्तर की ओर को था सागर में बनाई। उस के निकट एक मन्दिर रूमी महाराजा और रूम नगर की पूजा के लिये था। यहूदी लोगों को आधीन रखने के निमित्त रूमी योद्धाओं की एक बड़ी पलटन कैसरिया में रहा करती थी उस

पलटन का एक प्रसिद्ध शतपति कुरनेलियुस नामे इस ही नगर में पथरस प्रेरित के द्वारा खिष्टीय शिष्य हो गया। इस के उपरान्त हेरोदीस दुतिय नामे देशी राजा अति भयानक रीति पर वहां मर गया। कितने और बरस पीछे पुलूस आप बंधुआ होके रूमी अध्यक्ष के बिचारस्थान में उत्तर देने के लिये एक और बार उस नगर में आया और दो बरस वहां बंधुआ रहा। अन्त को वहां से सिधारके उसही दशा में रूम नगर को गया। परन्तु अबके बार उस के वहां टिकने का कुछ वर्णन नहीं लिखा है केवल उसी से होके यरूसलम को गया॥

यहूदिया देश जिस की यरूसलम प्राचीन राजधानी थी उत्तर दखिन डेढ़ सौ मील से कुछ न्यून लम्बा और पूर्ब पश्चिम साठ एक मील चौड़ा था। परन्तु समस्त प्राचीन और प्रसिद्ध राज्यों के मध्य में उपस्थित हो वह छोटा देश उन सभों के इतिहास से सम्बन्धी और एक दूसरे के पीछे उन के आधीन भी हो गया। पहिले पूरबी बाबुलवाला बड़ा राज्य उस पर प्रबल हुआ। फिर प्राचीन फारस के प्रसिद्ध महाराजा कौसरो नामे के वह देश आधीन हुआ। और दखिन में प्राचीन मिसरियों के राजाओं से उस का बहुधा सङ्ग्राम होता रहा। इस के उपरान्त प्रसिद्ध यवनी महाराजा सिकन्दर ने उस देश को जीत लिया और जब उस का राज्य अन्त हुआ रूमियों ने उस के ऊपर अपनी प्रबलता

सिद्ध किई । यह वही देश था जिस को परमेश्वर ने यहूदी कुल के आदि पिता अबिरहाम को और उस के सन्तान को दे दिया और मूसा के द्वारा उस सन्तान को अर्थात इसराएलियें को मिसर देश से छुड़ाके यहूशूअ नामे सेनापति के द्वारा उस में बसाया । सन इस्वी से एक सहस्र बरस आगे उन के एक प्रसिद्ध राजा दाऊद ने यरूसलम को अपनी राजधानी ठहराई और उस के पुत्र सुलेमान ने उस में परमेश्वर का एक बड़ा मन्दिर बनाया । जब तक यहूदी लोग परमेश्वर की व्यवस्था पर जो मूसा के द्वारा उन को मिली थी चलते रहे तब तक परमेश्वर ने उन की रक्षा किई परन्तु जब वे उस व्यवस्था को भंग करके आस पासवाले देशों की मूर्त्तिपूजा में फंस गये तो परमेश्वर ने उन को दण्ड देके उन देशों के आधीन कर दिया ॥

वह देश बहुधा पहाड़ी है क्योंकि दो बड़ी श्रेणियां पहाड़ों की उत्तर दखिन हो उस के मध्य में चलती हैं उन श्रेणियों के बीच यरदन नदी बहके खारा पानी के एक छोटे सागर में जो दखिन ओर को है और मृत्यु का सागर कहलाता है जा गिरती है । पश्चिम श्रेणी के दक्खिनी सिरे के ऊपर यरूसलम नगर और उस में परमेश्वर का प्रसिद्ध मन्दिर बना था । इन दिनों वह देश पैलस्टाइन नाम से भी जाना जाता है और यूरप खण्ड के सारे देशों में वह पवित्र देश के नाम से अति प्रसिद्ध है । और यरूसलम इस कारण पवित्र

नगर कहलाता है कि उस के निकट बैतुलहम की बस्ती में श्री यसू खीष्ट ने जन्म पाया और यरूसलम में अपना आश्चर्य कर्म्म दिखा और दैवीय उपदेश कर अन्त को वहां सारे संसार के पाप के लिये प्रायश्चित की रीति बलिदान हो फिर जी उठा और उस के एक परबत पर से स्वर्गारूढ़ हुआ ॥

यसू का घात होना और जी उठना और स्वर्गारोहण होना राजा बिक्रमादित के सन के नवासीवें बरस में और अशोक शालिबाहन के तैंतालीस बरस आगे उपस्थित हुआ । उन दिनों पन्तस पिलातूस नामे यहूदिया देश का रूमी अध्यक्ष और चकलेदार था । और जब कि यहूदी लोग यरूसलम में पार जाने का पर्ब्ब मानते थे उन के प्रधानों और याजकों ने अध्यक्ष से आज्ञा पाके यसू को काठ पर हाथ पांव में कील गाड़के घात किया और उस की समाधि पर रूमी योद्धाओं का पहरा बैठाया । परन्तु तीसरे दिन वह जी उठा और चालीसवें दिन अपने शिष्यों के देखतेही स्वर्ग पर चढ़ गया और पचासवें दिन जब यहूदी लोग पन्तिकोस्त का पर्ब्ब मानते थे उस की आज्ञा से उसी नगर में पवित्रात्मा आश्चर्य रूप से खिष्टीय शिष्यों पर उतरा और उस के दैवीय दान उन को प्राप्त हुये । इस पर यसू के घातकों में से तीन सहस्र मनुष्य उसी दिन उस के बिश्वासी शिष्य हो गये और उसी दिन से यसू खीष्ट का मुक्तिदायक धर्म्म संसार में प्रचलित होने लगा ॥

उस वृत्तान्त से बीस एक बरस बीत गये थे जब कि पुलूस कैसरिया से होके यरूसलम में आया । इस के आगे उस ने कई बार उस नगर को देखा था क्योंकि जब वह युवा था एक प्रसिद्ध गुरू गमालिएल नामे से व्यवस्था में शिक्षा पाने के लिये अपने नगर तरसुस को छोड़ यरूसलम में आ रहा था । फिर जब यसू ख्रीष्ट का पहिला साक्षी शिष्य स्तीफान यरूसलम में पथराव किया गया उस समय पुलूस वहां उपस्थित था। इस के उपरान्त प्रधान याजकों से आज्ञापत्र प्राप्त कर कि दमिश्क नगर में जाकर ख्रिष्टीय शिष्यों को सतावे वहीं से सिधारा परन्तु मार्ग में प्रभु का दर्शन पाके उस का शिष्य हो गया । इस के तीन बरस पीछे प्रभु के अन्य प्रेरितों और शिष्यों से भेंट करने के निमित्त वह फिर यरूसलम में आया । फिर दो और बार वहां आने पड़ा था एक तो अन्यदेशी भाइयोंका चन्दा दरिद्री यहूदी भाइयों को देने के निमित्त दूसरे अन्यदेशी भाइयों को मूसारचित रीतों से छुड़ाने के लिये । यों जब से पुलूस ख्रिष्टीय शिष्य हो गया था यह चौथी बार थी कि यरूसलम में आया । इतने में ख्रिष्टीय शिष्यों की एक बड़ी मण्डली उस नगर में हो गई थी। कितने सहस्र शिष्य हुए थे सो ठीक समाचार नहीं मिलता यदि दस बारह सहस्र हों तो कुछ आश्चर्य्य नहीं और उन में अनेक यहूदी याजक भी मिल गये थे । और वे सब के सब जन्म के यहूदी थे और मूसा

की व्यवस्था पर अति स्थिर और तनिक पक्षपाती भी थे और बहुधा मन्दिर के यहूदी भजन में साझी भी होते थे। प्रभु के अन्य ग्यारह प्रेरित विशेष करके यहूदी शिष्यों से और यरूसलम की मण्डली से सम्बन्ध रखते थे और उन में से एक अर्थात युहन्ना का भाई याकूब हेरोदीस की आज्ञा से यरूसलम में बध किया गया और एक पथरस वहां बन्दीगृह में डाला गया था। उन दिनों प्रभु का भाई याकूब उस मण्डली का प्रधान उपदेशक और अगुआ था। वह मूसा की व्यवस्था में यहां लों स्थिर और निर्दोष था कि अविश्वासी यहूदी भी उस को धर्म्मी जानके धर्म्ममय याकूब कहते थे। यह वही याकूब था जिस का शिक्षापत्र मंगल-समाचार पुस्तक में संयुक्त है॥

इस दशा में कुछ आश्चर्य की बात देख नहीं पड़ती है कि यरूसलम की खिष्टीय मण्डली के बहुधा शिष्य जो सब के सब जन्म के यहूदी और मूसा की व्यवस्था में स्थिर थे पुलूस से जो विशेष करके अन्यदेशियों का प्रेरित था बहुत प्रसन्न न थे और उस के व्यवहारों और कर्मों को भली भांति न समझते थे। क्योंकि सत्य विश्वासी शिष्यों के मन में भी पक्ष का तम कुछ बेर लों सत्व के उजियाले से सङ्ग्राम करता है। कदाचित यही एक कारण था कि पुलूस और यरूसलम के भाइयों के बीच अधिक मेल और संवाद नहीं हुआ जब वह एक और बार उन के पास आया तो अविश्वासी

यहूदियों ने उस अनमेल से दांव पाके उस पर अपबाद किया और ऐसा हुल्लड़ मन्दिर में मचाया कि रूमी शतपति ने पुलूस को पकड़के बन्दीगृह में डाला और अन्त को कैसरिया और रूम में भेज दिया। परन्तु यह वृत्तान्त पांच सात बरस पीछे हुआ और इस के दस बारह और बरस पीछे सारे और यहूदियों ने रूमी सरकार के बिरुद्ध बलवा मचाया और महाराजा ने सेना भेजके उन को दबाया और उन की राजधानी और मन्दिर को ढा दिया और उन का राज्य सर्वथा नष्ट कर डाला। इस रीति से परमेश्वर के आश्चर्य प्रबन्ध में मूसारचित धर्म्म नियम पूरा हुआ और यहूदी कुल बेराज और बिना देश आज लों सारे संसार में तितर बितर हो रहे हैं। परन्तु पुलूस निरन्तर अपने खिष्टीय भाइयों के पक्ष को धीमा करने के लिये उद्योग करता रहा और दो एक बार जब वे कष्ट में पड़े थे उन के लिये अन्यदेशी शिष्यों से चन्दा करके उन के पास ले गया। और अब के बार भी उन के पास जा मण्डली को नमस्कार कर सीलास को वहां छोड़ तिमोदेउस को संग ले अन्ताकिया को गया और उस रीति से उस की यह यात्रा अन्त हो गई। परन्तु अन्ताकिया नगर और उस की खिष्टीय मण्डली का वर्णन दूसरे अध्याय में लिखा जायगा॥

दसवां अध्याय।

अन्ताकिया नगर और उस की खिष्टीय मण्डली का और पुलूस की पहिली बड़ी यात्रा का संक्षेप।

अब पुलूस के इस यात्रा को तनिक छोड़के दूसरी बातों का वर्णन करना अवश्य है क्योंकि खिष्टीय धर्म्म के विस्तृत होने के वृत्तान्त में अन्ताकिया नगर और उस की खिष्टीय मण्डली का इतिहास समझ लेना अति प्रयोजन है। इस का कारण यह है कि जिस प्रकार से यरूसलम में यहूदी शिष्यों की प्रथम और बड़ी मण्डली थी उसी प्रकार से अन्यदेशी शिष्यों की प्रथम और बड़ी मण्डली अन्ताकिया में स्थापित हुई। और जिस भाव से यरूसलम की मण्डली की प्रबलता घटती गई और नगर और मन्दिर के नष्ट होने और मूसारचित धर्म्म नियम के समाप्त होने पर अन्त हो गई उसही भाव से अन्ताकिया की मण्डली का बल और प्रताप बढ़ताही गया। फिर यरूसलम के शिष्यों के कष्ट उठाने और तितर बितर होने के कारण अन्ताकिया में खिष्टीय मण्डली की नेव डाली गई परन्तु अन्ताकियावाली मण्डली की बढ़ती और भागवानी के द्वारा यसू खीष्ट का मंगलसमाचार सारे अन्यदेशियों में प्रचारा गया॥

सूरिया चकले की राजधानी अन्ताकिया नगर का

स्थान यरूसलम से तीन सौ मील दूर उत्तर ओर को था। वहां भूमध्यस्थ सागर का तट जो सीधे उत्तर ओर को जाता था पश्चिम दिशा को फिरके एक कोन कर देता है। तट के समानान्तर पहाड़ की दो श्रेणी भूमि में भी वैसाही कोन बनाती हैं ओर पहाड़ पर से एक नदी ओरन्तीज नामे बहके सागर में जा गिरती है। सागर से तीस मील दूर पहाड़ की जड़ पर ओर नदी के तट सन ईस्वी से तीन सौ बरस आगे सिकन्दर महाराजा के एक प्रतिनिधि के हाथ से नगर की नेव डाली गई ओर डालनेवाले ने अपने पिता अन्ताकियूस के नाम से नगर का नाम अन्ताकिया ठहराया। होते २ वह एक बड़ा प्रसिद्ध ओर सुन्दर नगर हो गया ऐसा कि रूमियों के बड़े राज्य में रूम ओर स्कंदरिया के पीछे यही बड़ा नगर गिना जाता था। कितने अलग २ राजाओं ने उस के अलग २ भागों को बनाया ओर रूमी महाराजाओं ने उस को संवारके ओर भी शोभायमान कर दिया। उस के बीच एक चौड़ा मार्ग उसारों की छावनी से ढंपा हुआ चार मील लम्बा चला गया ओर बर्षा ओर धूप के समय नगरनिवासी वहां कुशल से संवाद करने को चलते बैठते थे। उस देश का जल वायु अत्यन्त मीठा ओर सुखदायक था ओर धनी रूमियों ओर यवनों ने अपने बिश्राम सुख बिलास के लिये अति सुन्दर राजभवन स्नानागार क्रीड़ागृह इत्यादि नगर के पड़ोस

में बनाये थे। नगर की दखिन ओर को चार एक मील दूर यवनी देवता अपल्लो नामे के लिये एक बहुत बड़ा मन्दिर बना था। यह देवता कई एक बातों में हिन्दू देवता सूर्य्य के समान था और वह उस नगर का इष्ट देवता था। उस की पूजा के लिये एक स्थान पर जिस का नाम डेफनी था अनेक सुन्दर मन्दिर मूरतें जलयंत्र और तेजपात और सरो वृक्षों के बन एक बड़ी रमना में जिस का घेरा दस मील था लगे थे और वहां उस देवता और डेफनी देवी की पूजा में समस्त प्रकार के अपवित्र कर्म होते रहे। नगरनिवासियों में यवनों और रूमियों को छोड़ यहूदियों की एक बस्ती भी थी और एशिया महाखण्ड के भिन्न २ देशवाले व्यापार वा सुखबिलास की इच्छा से भीड़ २ होके उस में आ बसे थे। इस रीति से नगरनिवासियों में जो दो लाख से कम न थे समस्त प्रकार की दुराचारी अभिचार टोना मिथ्याधर्म्म मूर्त्तिपूजा मंत्रमोहन इत्यादि बहुत प्रचलित हो रहे थे॥

इन लोगों के बीच यसू खीष्ट का मंगलसमाचार का वचन पहिले उस समय आया जब कि पहिला खिष्टीय साक्षी शिष्य स्तीफान के घात होने के कारण यरूसलम के अन्य शिष्यों पर क्लेश आया और वे तितर बितर होके अन्ताकिया और उस के सिवानों में आये। आरम्भ में तो ये शिष्य केवल यहूदियों को और अन्यजाति यहूदी शिष्यों को बचन सुनाते थे क्योंकि

उन्हों ने भली भांति नहीं समझा कि यह बचन सारे जातिगणों के लिये है। परन्तु परदेशी यहूदी और अन्यजाति शिष्य यह मंगलसमाचार ग्रहण कर सब अन्यजातियों को भी सुनाने लगे और प्रभु के अनुग्रह से बहुत लोग बिश्वास करके प्रभु की ओर फिरे। उन में विशेष करके अन्ताकिया के यवन लोग थे इस रीति से प्रभु के दैवीय प्रबन्ध के अनुसार उस प्रसिद्ध नगर में खिष्टीय मण्डली की नेव डाली गई। यसू के अन्तर्ध्यान होने के पांच एक बरस पीछे यह वृत्तान्त उपस्थित हुआ। इस के दो एक और बरस पीछे इस दशा का संदेशा यरूसलम की मण्डली को मिला कि अन्यजाति भी प्रभु का बचन ग्रहण करके बिश्वास लाती हैं। इस पर वहां के भाइयों ने अपने में से एक ध्यानी सुस्वभाव सज्जन बर्णबा नामे को यह दशा देखने के लिये भेजा। वह कुपरस टापू का जो अन्ताकिया के सामने यवन सागर में पड़ा है एक परदेशी यहूदी निवासी और जात का याजक भी था। उस टापू के अन्य निवासियों ने जो खिष्टीय शिष्य हो गये थे पहिले यवनों को प्रभु का बचन सुनाया था। जब बर्णबा अन्ताकिया में पहुंचा और ईश्वर के अनुग्रह को देखा तब आनन्दित हो सभों को उपदेश दिया कि मन की अभिलाषा सहित प्रभु से मिले रहें क्योंकि वह भला मनुष्य और पवित्रात्मा और बिश्वास से परिपूर्ण था और बहुत लोग प्रभु से मिल गये॥

इतने में पुलूस पर वह वृत्तान्त दमिश्क के मार्ग पर उपस्थित हुआ जिस के कारण से वह खिष्टीय शिष्य हो गया। फिर वह तीन एक बरस अरब देश में रहके अन्य प्रेरितों से भेंट करने के निमित्त यरूसलम को गया और उसही बर्णबा ने जो पीछे अन्ताकिया को भेजा गया मिलनसारी करके उस की भेंट खिष्टीय मण्डली के अन्य शिष्यों से कराई। क्योंकि पुलूस की पहिली क्रूरता और कठिन विरुद्धता के कारण वे उस पर सन्देह करते थे। इस के पीछे पुलूस अपने जन्मभूमि नगर तरसुस को लौट गया और वहां और उस के पड़ोस में प्रभु का बचन सुनाने लगा। फिर जब बर्णबा अन्ताकिया में आया तो वह पुलूस को ढूंढ़ने के लिये तरसुस में गया और उस को वहां पाके अन्ताकिया में लाया और वे दोनों जन बरस भर मण्डली में एकट्ठे हो बहुत लोगों को उपदेश देते रहे। इस में सन्देह नहीं है कि उन दिनों अन्ताकिया की मण्डली के शिष्य बहुतही बढ़ गये होंगे यहां लों कि यहूदियों से भिन्न वे एक बड़ी धर्म्मसभा बन गये थे जिस में थोड़े यहूदी सहित बहुधा मनुष्य अन्यदेशी थे। और जब कि यह अन्यदेशी शिष्य अन्य नगरनिवासियों के कुटुम्ब थे तो क्या आश्चर्य कि उन के बतलाने के निमित्त एक विशेष नाम उन पर लगाया जावे इस के अनुसार वर्णित है कि शिष्य लोग पहिले अन्ताकियाही में खिष्टीय कहलाये गये।

कदाचित अविश्वासियों ने ठट्ठा की रीति यह नाम उन को दिया हो क्योंकि जब यसू खीष्ट अपराधी के समान काठ पर टांका जाके बध किया गया उन्हों ने समझा कि उस के शिष्यों पर उसी का नाम लगाना बड़ी अपनिन्दा की बात होगी। परन्तु उस के शिष्यों ने इस से भिन्न बिचार किया क्योंकि उन्हों ने समझा कि इस के समान प्रतिष्ठापूर्वक नाम हम को मिल नहीं सकता है और बड़े आनन्द से उस नाम को ग्रहण करके यसू खीष्ट के शिष्य आज लों खिष्टीय अथवा क्रिस्तियान कहलाते हैं॥

इतने में यरूसलम के खिष्टीय शिष्यों की बड़ी दुर्दशा हो गई थी क्योंकि यहूदियों का देशी राजा हेरोदीस द्वितीय जो रूमी महाराजा के आधीन था उन को कठिन रूप से सताने लगा और युहन्ना के भाई याकूब प्रेरित को खड्ग से मार डाला और पथरस प्रेरित को बन्दीगृह में डाला। इस को छोड़ उन सारे देशों में अकाल पड़ा और खिष्टीय शिष्य बहुधा करके कंगाल थे इन समस्त कारणों से उन को बड़ाही कष्ट हो गया। इस दशा का समाचार पाके अन्ताकिया के अन्यदेशी भाइयों ने अपनी २ सम्पत्ति के अनुसार उन के उपकार के लिये कुछ भेजने को ठहराया और उस को बर्णबा और पुलूस के हाथ यरूसलम की मण्डली के प्रधानों के पास भेज दिया। पुलूस के खिष्टीय शिष्य होने के पीछे यही दूसरी बार थी कि यरूसलम को गया और जब

उस ने और बर्णबा ने वह सेवकाई पूरी किई थी तो वे दोनों एक और भाई अर्थात बर्णबा के भांजे युहन्ना मरकुस को संग लेके अन्ताकिया में लौट आये। उन्हीं दिनों हेरोदीस राजा कैसरिया नगर में मर गया और उस का प्रतिनिधि एक रूमी अध्यक्ष यहूदिया चकले का चकलेदार ठहरा॥

इस के उपरान्त अन्ताकिया की ख्रिष्टीय मण्डली की बढ़ती यहां लों हुई कि उस में अनेक ऐसे मनुष्य थे जो पवित्रात्मा और बिश्वास से परिपूर्ण हो भविष्यद्वक्ता और उपदेशक के काम करने के योग्य थे। तौभी उन्हों ने प्रभु की आज्ञानुसार सारे जातिगणों में मंगलसमाचार प्रचारने का कोई यथायोग्य उपाय और प्रबन्ध नहीं ठहराया था। सम्भव है कि कितनों के मन में इस बात की कुछ चिन्ता हो रही थी क्योंकि विदित है कि वे किसी विशेष रूप से उपवास सहित प्रभु की सेवा करते थे। इतने में पवित्रात्मा ने एक दैवीय रूप से उन्हें कहा कि जिस कार्य के लिये मैं ने बर्णबा और सुलूस अर्थात पुलूस को बुलाया है उस काम के निमित्त उन्हें मेरे लिये अलग करो। सो कार्य वही था जिस का वर्णन ऊपर हुआ अर्थात प्रभु की अपने शिष्यों को अन्तवाली आज्ञा कि तुम सारे संसार में जाके प्रत्येक प्राणी को मंगलसमाचार सुनाओ। जो बिश्वास लावेगा सो मुक्ति पावेगा जो बिश्वास न लावेगा उस पर दण्ड की आज्ञा होगी इति। फिर जब प्रभु ने दमिश्क के मार्ग में सुलूस

को दर्शन दिया तो इसी विशेष काम के लिये उस को विशेष आज्ञा दिई। अब पवित्रात्मा की इस नई आज्ञा के अनुसार अन्ताकिया के भाइयों ने वर्णबा और पुलूस पर हाथ रखके और उपवास और प्रार्थना करके उन्हें बिदा किया। इस रीति से सारे जातिगणों में मंगल-समाचार प्रचारने के लिये खिष्टीय शिष्यों की पहिली बड़ी यात्रा अन्ताकिया की अन्यजाति खिष्टीय मण्डली से आरम्भ हुई॥

विदित हो कि पुलूस की तीन बड़ी यात्रा वा भ्रमण थे जिन में वह देश २ नगर २ जाके यहूदियों और अन्यदेशि-यों को मंगलसमाचार सुनाता गया और तीनों का आरंभ अन्ताकिया से हुआ और तीसरी को छोड़ सभों का अन्त भी वहां था। पहिली यात्रा केवल एशिया महाखण्ड के देशों में थी और उस का संक्षेप वर्णन अब लिखा जायगा। दूसरी बड़ी यात्रा में वह एशिया महाखण्ड को छोड़ यूरप महाखण्ड में प्रवेश कर कोरिन्तुस नगर में पहुंचा जैसा ऊपर के अध्यायों में वर्णन है। तीसरी बड़ी यात्रा कर वह दोबारा अफसुस प्रसिद्ध नगर में आके तीन एक बरस लों वहां रहा और अन्त को यरूसलम से होके रूम नगर को गया। इस का कुछ वर्णन आगे लिखा जाय-गा। इस अध्याय में केवल पहिली यात्रा का संक्षेप और अन्ताकिया की मण्डली का थोड़ा और वृत्तान्त काल के अनुक्रम से लिखा जाता है॥

अन्ताकिया से पश्चिम ओर को तीस मील दूर

ओरन्तीज नदी के मुंह पर सिलूकिया नगर बना था जो सागर के तीर पर हो अन्ताकिया के लिये बन्दर ठहरा। जब खिष्टीय भाइयों से बिदा हुये तो पुलूस बर्णबा और मरकुस सलूकिया को जा नौका पर चढ़ पहिले बर्णबा की जन्मभूमि कुपरस टापू को गये और सलामीस और पाफस नगरों में मंगलसमाचार प्रचार फिर नौका पर चढ़ उत्तर ओर को पंफुलिया देश के पर्गा नगर को जा उतरे। वहां से मरकुस लौट गया परन्तु पुलूस और बर्णबा आगे बढ़के चार नगरों में अर्थात पिसीदिया देश के अन्ताकिया और इकोनियुम और लिस्तरा और दरबे में बचन सुनाते गये। दरबे से लौटके उन्हीं नगरों में दोबारा प्रभु का बचन प्रचार अटालिया से हो सूरिया के अन्ताकिया में जहां से सिधारे थे लौट आये। इस यात्रा में दो बरस के लगभग बीत गया और अनेक आश्चर्यजनक और उपदेशपूर्वक वृत्तान्त उपस्थित हुये जैसे पाफस में बरयसू टोन्हे को अन्धा करना लिस्तरा में पुलूस का एक लंगड़े को चंगा करना फिर पथराव किया जाना इत्यादि जिन का वर्णन खिष्टीय धर्म्मग्रन्थ के प्रेरितों की क्रिया में लिखा है परन्तु इस संक्षेप में उन की दशा वर्णित नहीं हो सकती है। अन्ताकिया में पहुंचके और मण्डली को इकट्ठा करके उन्हों ने बताया कि ईश्वर ने उन के साथ कैसे २ बड़े काम किये थे और अन्यदेशियों के लिये बिश्वास का द्वार खोला

था और उन्हों ने वहां शिष्यों के संग बहुत दिन बिताये ॥

जब कि वे अन्ताकिया में थे कितने शिष्य यहूदिया से आके भाइयों को सिखलाने लगे कि यदि तुम मूसा के धर्मनियम के अनुसार खतना न पाओगे तो तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी । इस वृत्तान्त में यहूदियों का वह पक्ष देख पड़ता है जो तमः के समान उन के मन पर छाय रहा था । मूसारचित धर्मनियम का मूल अभिप्राय यह था कि यसू त्राणकर्त्ता के आने लों यहूदी कुल को अन्यजातियों की मूर्त्तिपूजा और कुव्यवहारों से अलग कर रखे । जब त्राणकर्त्ता आ गया तो उस नियम का प्रयोजन लोप हो गया । परन्तु मनुष्य बहुधा परमेश्वर का प्रबन्ध उलटी रीति से समझके उस के भले गुणों को बिगाड़ डालते हैं। इस प्रकार से यहूदी लोग आपस्वार्थी हो यह अभिमान करने लगे कि परमेश्वर ने हम को समस्त अन्यजातियों से श्रेष्ठ और उत्तम जानके उन से अलग कर रखा है । ऐसा अहंकार मनुष्यजाति के स्वभाव में बहुत है और उस के कारण अनगणित हानियां उन के सम्बन्ध में आ जाती हैं क्योंकि इस रीति से उन की बुद्धि टेढ़ी उन के मन अन्धकार और उन के अन्तःकरण कठोर हो जाते हैं । और यद्यपि सारे मनुष्यजाति एकही ईश्वरीय पिता के संतान और आपस में भाई हैं तथापि इस विशेष वरण के द्वारा परस्पर विरोधी और ईश्वर

से बैरी हो जाते हैं। प्रभु यसू ख्रीष्ट में सम्पूर्ण ऐसी विस्तुता और बैर और अन्मेल लोप हो जाता है क्योंकि वही हमारा मिलाप है जो पहिले पिता परमेश्वर से फिर परस्पर मेल मनुष्यजाति में स्थापन करता है। वह सभों को एक करता है और रुकाव की सारी बिचली भीतों को गिरा देता है॥

इस दैशा में उन यहूदिया के शिष्यों को अत्यन्त अनुचित था कि इस प्रकार का बिगाड़ भाइयों में डाल देवें और इस प्रकरण में पुलूस और बर्णबा ने उन से और भाइयों से बहुत बादबिवाद किया। फिर जब इस रीति से इस का परिणाम ठीक नहीं ठहरा तो भाइयों की इच्छा के अनुसार वे यरूसलम की मण्डली के प्रधानों और प्रेरितों के पास इस का ठीक प्रबन्ध ठहराने के लिये गये। वहां पहुंचतेही मंडली में वैसा ही विवाद हुआ अन्त को प्रेरितों और प्रधानों और मंडली के समस्त भाइयों ने पवित्रात्मा की अगुआई से यह ठहराया कि अन्यजाति शिष्यों को मूसारचित धर्मनियम पर चलना अवश्य नहीं है केवल मूर्त्तिपूजकों की कुरीतों से अलग रहना प्रयोजन है। और इस तात्पर्य की पत्री लिखके बर्णबा और पुलूस और दो और मनुष्य अर्थात बरसबा और सीलास के हाथ से अन्ताकिया और उस के पड़ोस की मंडलियों के पास भेज दिया इस रीति से यसू ख्रीष्ट का सतगुण यहूदी पक्ष के तमोगुण से सङ्ग्राम कर उस पर प्रबल

हुआ । और अन्ताकिया के अन्यदेशी भाई पत्री को पढ़के उस की शान्तिदायक बातों से आनन्दित हुये और बरसबा और सीलास ने जो उपदेशक थे बहुत बातों से भाइयों को समझाके स्थिर किया । फिर जब बरसबा यरूसलम को लौट गया तो सीलास वहां रहना अच्छा मानके पुलूस बर्णबा और बहुत औरों के संग प्रभु के बचन का उपदेश करते और मंगल-समाचार सुनाते हुये अन्ताकिया में रहा ॥

ग्यारहवां अध्याय ।

पुलूस का अपनी बड़ी दूसरी यात्रा कर यूरप महाखण्ड में पहिली बार आना ।

जब पुलूस और उस के समयात्री कोरिन्तुस नगर से सिधारे तो वे कितने प्रसिद्ध नगरों में गये जिन का थोड़ा सा वर्णन लिखना अवश्य था । उन में अन्ताकिया नगर वह था जिस की अन्यजाति खिष्टीय मंडली के संग अन्यजातियों के विशेष प्रेरित पुलूस का विशेष सम्बन्ध था और वह अन्यदेशियों में मंगलसमाचार प्रचारने के लिये अपनी तीन बड़ी यात्राओं का उसही नगर से आरंभ करके गया । इस कारण ऊपर के दो अध्यायों में इन बातों की थोड़ी चर्चा हुई और अब उस यात्रा का जिसे करके वह कोरिन्तुस में आया अर्थात उस की दूसरी बड़ी यात्रा कोरिन्तुस में आने लों का वृत्तान्त काल के अनुक्रम से लिखना चाहिये । तब आगे को उस दैवीय पुरुष का शेष वर्णन बिस्तार पूर्वक अथवा संक्षेप सीधा लिखा जायगा ॥

जब पुलूस और बर्णबा अन्ताकिया नगर और उस के पड़ोस में प्रभु का काम करते हुये कुछ दिन रहे थे तो पुलूस ने बर्णबा से कहा कि जिस २ नगर में हम पहिले प्रभु का बचन सुनाते गये हम वहां के भाइयों की कुशल क्षेम पूछने को जावें । फिर जब बर्णबा ने

चाहा कि अपने भांजे मरकुस को संग ले जावें और पुलूस इस पर प्रसन्न न था तो वे अलग हुये और बर्णबा और मरकुस फिर कुपरस को गये और पुलूस सीलास को संग लेके सूरिया और किलिकिया की मंडलियों में शिष्यों को स्थिर करता गया । इतने में वे दूसरे मार्ग से होके उन्हीं नगरों अर्थात दरबे और लिस्तरा में आये जो पहिली यात्रा के सब से दूर नगर थे। उस पहिली यात्रा में जब पुलूस ने लिस्तरा के एक लंगड़े को चंगा किया था तो नगरनिवासी उस को देवता जान उस की पूजा करने लगे और उस ने कठिन से उन को उस कुकर्म से रोक रखा । पीछे उन्हों ने पक्षपाती यहूदी बैरियों के उसकाने से पुलूस को पथराव किया परन्तु वह बच निकला । अब वह फिर उसही नगर में सीलास के संग आके अपने पहिले परिश्रम और कष्ट का फल देखता है कि यहां एक खिष्टीय मंडली लग गई है और उस में एक अति आदरमान बुद्धिमान बिश्वासी युवा तिमोदेउस नामे उपस्थित है । उस का थोड़ा सा वर्णन ऊपर के अध्याय में लिखा है अब वह लिस्तरा से पुलूस और सीलास का समयाची हो प्रभु का काम करने को गया ॥

एशिया महाखंड का वह भाग जिस में पुलूस सीलास और तिमोदेउस यात्रा करने को गये एक प्रायद्वीप है जो इन दिनों छोटा एशिया के नाम से प्रसिद्ध है । वह पूरब पश्चिम छः सौ एक मील लम्बा और

उत्तर दखिन चार सौ एक मील चौड़ा है और उन दिनों उस के दस एक अलग २ चकले थे। इन में से तीन एक चकलों का जिन में गलातिया एक था दौरा कर वे चाहते थे कि पश्चिम की दिशा को फिरें परन्तु पवित्रात्मा ने उन को बरजा। फिर उन्हों ने उत्तर की ओर जाने का उपाय किया परन्तु पवित्रात्मा ने उन को जाने न दिया। यों बेबस हो वे पश्चिम उत्तर के कोन के त्रोआस नामे नगर में आये और वहां पवित्रात्मा का उन्हें रोकने का अभिप्राय उन पर प्रगट हो गया। क्योंकि रात को पुलूस पर एक दर्शन दिखाई दिया कि सागर के पार यूरप महाखंड के यवन देश के मकदूनिया नामे उत्तर भाग का एक पुरुष खड़ा हो पुलूस से बिन्ती कर रहा है कि पार मकदूनिया में आके हमारा उपकार करिये। इस पर उस ने और उस के समयात्रियों ने निश्चय जाना कि प्रभु ने हम को उन लोगों के पास मंगलसमाचार सुनाने को बुलाया है इस कारण वहां जाने का उन्हों ने तुरन्त प्रबन्ध किया॥

अब इस प्रकरण पर अर्थात कि पुलूस और उस के समयात्री एशिया महाखंडवाले देशों को छोड़ पहिली बार यूरप महाखंड में आते हैं तनिक ध्यान करना चाहिये क्योंकि यह न केवल यूरप के लिये बरन सारे जगत के लिये अत्यन्त भारी वृत्तान्त ठहरता है। सन्देह नहीं है कि इस यात्रा के कारण सम्पूर्ण यूरप-

खंड की दशा सर्वथा बदल गई और जब कि यूरप वाले इन दिनों शेष जगत पर प्रबलता रखते हैं तो वह भी उन के द्वारा उसी रीति से होते २ बदलता जाता है । बीस एक बरस बीत गये थे जब से यसू ख्रीष्ट ने अपने शिष्यों को आज्ञा दिई थी कि सारे संसार में जाके प्रत्येक प्राणी को मंगलसमाचार सुनाओ परन्तु उस समय लों कोई शिष्य इस आज्ञा के कारण एशिया को छोड़ यूरप में नहीं गया था । कदाचित कितने यहूदी विश्वासी शिष्य अपने व्यापार के निमित्त रूम आदि नगरों में गये होंगे और यसू ख्रीष्ट के वृत्तान्त का कुछ सन्देश उन नगरों में पहुंचा होगा। परन्तु प्रभु के बचन के प्रचारक और उपदेशक वहां नहीं गये थे और पुलूस के मन में भी वहां जाने की इच्छा न थी । यदि प्रभु उस की दूसरी ओर की यात्रा को न रोकता तो कदाचित वह वहां न जाता । परन्तु प्रभु ने सम्पूर्ण संसार का महाराजा होके ठहराया कि अब यूरप खंडवालों को मेरा मंगलसमाचार सुनाना चाहिये फिर अन्त को उन के द्वारा से समस्त अन्यजातियों को सुनाया जायगा । इस कारण उसी समय यह वृत्तान्त होही गया । उस समय थोड़े यहूदियों को छोड़ जो नगर २ में तितर बितर हो गये थे सम्पूर्ण यूरप खंड के सारे निवासी देवपूजक मूर्त्तिपूजक थे अब यूरप खंड के २४ करोड़ निवासियों में एक भी देवपूजक मूर्त्तिपूजक न मिलेगा और थोड़े यहूदियों और

महम्मदियों को छोड़ वे सब के सब नाम के ख्रिष्टीय हैं ॥

एक और बात यह है कि इस यात्रा के इतिहास में जो लूकारचित प्रेरितों की क्रिया नामे पुस्तक में लिखा है इसी स्थान पर ग्रन्थकर्त्ता वर्णन करके अस्मत्कर्त्ता सर्वनाम लिखता है अर्थात कि हम ने निश्चय जाना कि प्रभु ने हम को बुलाया इति । इस से विदित है कि वह ग्रन्थकर्त्ता भी त्रोआस से पुलूस का समयात्री हो गया सो यह वही लूका है जिस ने उसी नाम के मंगलसमाचार को भी लिखा । परम्परा की बात से सम्भव है कि वह अन्ताकिया का निवासी और वैद्य था फिर पुलूस के शिक्षापत्र से जो उस ने पीछे से गलातियावाले शिष्यों के पास लिखा जाना जाता है कि जब वह उन के संग था तो कुछ रोगी हो गया था और इस दशा में वैद्य को संग लेना उस के लिये भला था । फिर वह लूका बहुधा पुलूस के संग उस की यात्राओं और कष्टों में उस का समदुःखी उपकारक ठहरा । फिर यवनी विद्या में निपुण और विद्यामान हो और पुलूस की सम्पूर्ण दशा को भली भांति जान वह उस का अति योग्य और बिश्वासी इतिहासवेत्ता ठहरता है ॥

अब चार मनुष्य अर्थात पुलूस सीलास तिमोदेउस और लूका यूरप महाखंड में प्रवेश करने को कि वहां यसू ख्रीष्ट का मंगलसमाचार सुनावें त्रोआस नगर से

सिधारे। नौका पर चढ़के वे सागर के पार मकदूनिया चकले के एक बन्दर निआपोलिस नामे में उतरे और वहां से फिलिपी नामे नगर में जाके कुछ दिन वहां रहे। फिलिपी उस देश का पहिला नगर था जो निआपोलिस के मार्ग से होके उन को मिला और वह रूमियों की एक विशेष बस्ती भी थी वहां पुलूस के काम के द्वारा ऐसा आश्चर्य वृत्तान्त उपस्थित हुआ कि उस का तनिक वर्णन करना चाहिये॥

जब याची पहिले वहां पहुंचे तो अवश्य उन के मन में नाना प्रकार के ध्यान आ गये होंगे कि अब हम प्रभु का कर्म किस रीति से इस नये जगत में आरम्भ करें क्योंकि उस के सारे निवासी परदेशी थे और याची भी उन के लिये परदेशी थे। परन्तु एक बात यह थी कि उन दिनों बहुधा मनुष्य यवनी भाषा कुछ जानते तो थे। फिर देश का स्वरूप और वृक्ष और नगर और मनुष्यों के डौल और बस्त और व्यवहार सब के सब उन के लिये नवीन और अनोखे थे और वहां उन का कोई मित्र न मिलता था। ऐसी दशा में बहुधा मनुष्य तनिक निरास और निर्बल हो जाते हैं। फिर याची यह भी जानते थे कि इस देश के सारे निवासी सत्य परमेश्वर से अज्ञान हो देवों और मूरतों की पूजा करते हैं और यहूदी लोगों को तुच्छनीय जानते हैं और राज्य करनेवाले रूमी बहुधा कठोरमन और उपद्रवी हैं। सो जब पुलूस और उस के संगी ऐसे

लोगों को यसू ख्रीष्ट का मंगलसमाचार सुनावें तो वे उस को कैसे मानेंगे। परन्तु अपने प्रिय विश्वासी प्रभु पर आसरा धरके वे निर्भय थे और पहिले पूछने लगे कि यहां कोई यहूदी है कि नहीं। ऐसा देख पड़ता है कि वहां यहूदी थोड़े थे और उन का कोई मण्डलीघर वहां नगर में नहीं बना था परन्तु नगर के बाहर नदी के तीर पर एक स्थान था जिस में प्रार्थना करने को एकट्ठे होते थे। निदान बिश्रामवार को याची लोग वहां गये और उन्हों ने देखा कि कई एक स्त्री भजन करने को एकट्ठी हैं सो उन को प्रभु का बचन सुनाने लगे। उन में एक स्त्री थी जिस का नाम लीदिया था। वह एशिया चकले के थियातिरा नगर की निवासी और अन्यजाति की यहूदी शिष्य थी जो बैगनी बस्त्र बेचने के लिये फिलिपी में आ रही थी। जब वह पुलूस की बात सुनती थी तो प्रभु ने उस का मन खोला कि उन बातों पर चित्त लगाके वह विश्वासिनी हो गई और उस ने और उस के घराने ने जलसंस्कार पाया। सम्भव है कि वह कुछ धनवान भी थी क्योंकि जब लों पुलूस और उस के साथी फिलिपी में ठहरे वे उस के यहां रहा करते थे फिर जब बैरियों के उपद्रव के कारण उन पर बड़ा क्लेश आया वह फिर भी उन की रक्षा करती रही॥

इस वृत्तान्त से देख पड़ता है कि परमेश्वर के बड़े कार्य्य में स्त्री लोग क्योंकर उपकार कर सकती हैं

और प्रभु यसू ख्रीष्ट के मुक्तिदायक कर्म्म में वे बहुधा बड़ी सहायक और साहसी भी ठहरी हैं। जब कि प्रभु इस संसार में एक दरिद्री मनुष्य था वे अपनी सम्पत्ति से उस की टहल करती थीं और जब वह बध किया जाता था और उस के अन्य शिष्य और प्रेरित भी भय के मारे भाग गये थे तो कई एक स्त्रियां निर्भय हो उस के क्रूस के पास खड़ी रहीं और उस की लोथ को समाधि में रखके फिर जी उठने के दिन सब और से पहिले सुगन्ध लेके वहां उपस्थित थीं और प्रभु ने भी जी उठने के पीछे सब से पहिले एक स्त्री को दर्शन दिया। फिलिपी नगर की एक और स्त्री का वर्णन है जिस के कारण प्रभु की महिमा बहुत लोगों पर प्रगट हो गई वह एक दासी थी जिसे भूत लगा था और अपल्लो देवता की पूजा में याजनी की रीति पर थी अर्थात उस देवता के पुरोहित और पण्डे उस के द्वारा अज्ञान लोगों को आगम की बात बोलने के छल से ठगके बहुत धन कमाते थे। मंगलसमाचार पुस्तक से विदित होता है कि अपवित्र आत्मा और पिशाच जो पहिले परमेश्वर के पवित्र दूत थे परन्तु पाप में पतित होके भ्रष्ट हो गये कभी २ इसी रीति से पापी मनुष्यों को सताने पाते हैं और जब कि मुक्तिदाता यसू मनुष्य की मुक्ति के लिये इस संसार में आया तो उस के विरुद्ध में यह अपवित्र पिशाच अत्यन्त चतुर और उपद्रवी थे और प्रभु अपना बल उन पर सदा प्रगट करता था

अर्थात उन मनुष्यों से जिन्हें वे लगे थे अपने वचनमात्र से निकालता रहा। अनुमान की रीति से सम्भव देख पड़ता है कि जितने देवपूजा मूर्त्तिपूजा इस संसार में प्रचलित हैं सो इन्हीं पिशाचों से संयुक्त हैं और वे सब के सब ऐसी पूजा के पक्ष पर हैं क्योंकि उस से सत्य परमेश्वर की अपनिन्दा होती है। परन्तु वे यसू ख्रीष्ट और उस के प्रेरितों का बल मान और कभी २ उस की प्रशंसा भी कर विन्ती करते थे कि हम को न निकालना। इस के अनुसार यह दासी पुलूस और उस के साथियों का पीछा कर कई दिन पुकारती रही कि यह मनुष्य अति महान ईश्वर के दास हैं जो हमें मुक्ति का मार्ग बतलाते हैं। इस पर पुलूस ने अप्रसन्न हो मुंह फेर उस भूत से कहा कि मैं तुझे यसू ख्रीष्ट के नाम से आज्ञा देता हूं कि उस में से निकल आ। और वह उसी घड़ी निकल आया इस रीति से प्रभु का पराक्रम उस के सेवक के द्वारा सब लोगों पर प्रकाशमान हुआ॥

यह दशा देख उस के स्वामियों को उचित था कि प्रभु पर विश्वास लाते परन्तु जिन के मन पर चैन का रज और लोभ का तम छाय रहा है ऐसे लोग सत्य के उजियाला से सङ्ग्राम करते हैं। और जब उन मनुष्यों ने देखा कि हमारी कमवाई की आशा टूट गई है तो उन्हों ने पुलूस और सीलास को रूमी अध्यक्षों के पास [क्योंकि उस विशेष बस्ती के दो अध्यक्ष थे] विचार करने की चौकी पर खींचके उन पर अपवाद

किया कि ये यहूदी लोग हमारे नगर के लोगों को अत्यन्त सताते हैं और हम रूमियों के व्यवहारों की बिपरीत शिक्षा करते हैं। उन के संग नगर के बहुत निवासी भी उन पर चढ़ आये और अध्यक्षों ने आज्ञा दिई कि पुलूस और सीलास के कपड़े फाड़के उन को बेंत से मारें। निदान पियादों ने उन को बहुत घायल करके बन्दीगृह की भीतरी कोठरी में डाला और उन के पाओं को काठ में ठोंका॥

अब देखा चाहिये सत्य खिष्टीय बिश्वास का क्या गुण है क्योंकि जब ये दो मनुष्य पुलूस और सीलास इस प्रकार का उपद्रवपूर्बक क्लेश पाके घायल हो बन्दीगृह में डाले गये थे तो वे तनिक निरास अथवा उदास न हुए बरन अपने प्रभु को जिस के निमित्त उन्हों ने यह दुःख पाया था अपने संग जान उस से प्रार्थना करने और उस की स्तुति का गीत गाने लगे और अन्य बंधुवे उन की सुनते थे। इतने में प्रभु का पराक्रम और भी प्रकाश होने लगा क्योंकि एक बड़ा भुंईडोल हुआ और बन्दीगृह की नेवें हिल गईं और सब द्वार और बंधुओं के बंधन खुल गये। यह दशा देख बन्दीगृह का प्रधान यह समझके कि सब बंधुवे भाग गये होंगे खड्ग खींच अपने को मार डालने पर था परन्तु पुलूस ने यह पुकारके उस को रोका कि अपनी कुछ हानि न करना क्योंकि हम सब यहां हैं। इस पर प्रधान कांपते थरथराते हुए भीतर कूद गया और पूछने लगा कि हे

प्रभुओ मुक्ति पाने के लिये मैं क्या करूं। उन्हों ने उत्तर दिया कि प्रभु यसू ख्रीष्ट पर बिश्वास ला और तू और तेरा घराना मुक्ति पावेगा। निदान वह और उस का घराना बिश्वास लाके और जलसंस्कार पाके ख्रिष्टीय शिष्य हुए और पुलूस और सीलास के घाओं को धोके उन की टहल करने लगे॥

बिहान को जब रूमी अध्यक्षों ने इस दशा का समाचार पाया तो उन्हों ने कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ देना परन्तु पुलूस ने उत्तर दिया कि उन्हों ने तो हम को जो रूमी पदवी वाले हैं न्याय बिना किये लोगों के आगे मारा और बन्दीगृह में डाला और अब क्या चुपके से हमें निकाल देते हैं सो नहीं परन्तु आपही आके हमें बाहर ले जावें। अध्यक्ष यह सुनके डर गये और उन के पास आके उन्हें मनाया और बाहर लाके बिन्ती किई कि नगर से निकल जाइये सो वे पहिले लीदिया के घर में गये और वहां ख्रिष्टीय भाइयों को उपदेश देके उन से बिदा होके चले गये। प्राचीन रूमी कभी २ आधीन देशवालों को रूमी होने का अधिकार देते थे और ऐसे लोगों को बिना न्याय किये दण्ड देना बर्जित था। इस कारण जब फिलिपी के अध्यक्षों ने सुना कि पुलूस इस पदवी का अधिकारी है तो वे डर गये कि उस को ऐसे दण्ड देने के कारण हमें भी कुछ दण्ड होवेगा॥

इस रीति से यूरप के पहिले नगर में पुलूस प्रेरित और

उस के साथियों के द्वारा खिष्टीय मण्डली की नेव डाली गई। उस मण्डली में कितने मनुष्य उस समय साझी हो गये सो नहीं लिखा है परन्तु वहां के भाई बिश्वास प्रेम और उद्योग के कारण अन्य मण्डलियों के भाइयों से श्रेष्ठ ठहरे। विशेष करके वे पुलूस से अति प्रेम रखते थे और कई बार उस के उपकार के लिये उन्हों ने उस के पास कुछ भेजा और उस ने उन के पास वह शिक्षापत्र लिख भेजा जो उन के नाम पर मंगलसमाचार पुस्तक में संयुक्त है। परन्तु उस कष्टपूर्वक वृत्तान्त से जो वहां उपस्थित हुआ उस को स्पष्ट और निश्चय ज्ञान हो गया कि यूरप के नगरों में भी प्रभु का कर्म करने से कैसा दुःख और क्लेश सहना होगा फिर भी वह तनिक निरास नहीं हुआ। और यद्यपि बार २ उस को ऐसीही अपनिन्दा और अन्धेर होता गया तथापि वह वैसाही उद्योग भी करता गया और उस के द्वारा उन सारे सिवानों में रज वा तम से सत्व का सङ्ग्राम प्रभु के पुण्यप्रताप से तेजस्वी जय में अन्त हुआ॥

फिलिपी से सिधारके पुलूस और सीलास दो छोटे नगरों से होके थिसलोनिकी में आये। सम्भव है कि लूका फिलिपी में रह गया होगा। थिसलोनिकी मकदूनिया चकले की राजधानी था और वहां अधिक यहूदी थे और उन का मण्डलीघर भी नगर में बना था। वहां जाके पुलूस तीन बिश्रामवार को मंगलसमाचार

प्रचारता गया और बहुत लोग सुनके बिश्वासी शिष्य हो गये। इस संक्षेप में केवल इतना वर्णन लिखा जाता है कि पीछे से अबिश्वासी यहूदियों ने नगर में हुल्लड़ मचाके पुलूस को निकाल दिया परन्तु वहां भी एक मास के बीच शिष्यों की वह मण्डली स्थापित हो गई जिस के पास पुलूस ने पीछे जब वह कोरिन्तुस में था वे दो शिक्षापत्र लिख भेजे जो मंगलसमाचार पुस्तक में संयुक्त हैं। फिर वहां से जाके भाई बिरिया में आ गये और जब उन्हों ने वहां भी वैसाही काम किया तो थिसलोनिकी के बैरी यहूदियों ने उन का पीछा कर नगरनिवासियों को उन के बिरुद्ध उसकाया। तब भाइयों ने पुलूस को समुद्र के मार्ग से अथेनी नगर में पहुंचाया परन्तु तिमोदेउस और सीलास वहां रह गये। यों प्रभु का प्रेरित और प्रचारक पुलूस अकेला होके उस अति प्रसिद्ध नगर अथेनी में आया और थोड़ी देर पीछे वहां से सिधारके कोरिन्तुस नगर को गया जैसे इस पुस्तक के पहिले अध्याय में वर्णित हुआ। परन्तु अथेनी में जो वृत्तान्त हुआ उस का संक्षेप वर्णन दूसरे अध्याय में लिखना चाहिये॥

बारहवां अध्याय ।

अथेनी नगर का वृत्तान्त और पुलूस का वहां उपदेश करना और कोरिन्तुस और अन्ताकिया में पहुंचना ।

ऊपर के अध्यायों में प्राचीन यवनों के प्रकृतसिद्ध गुण धर्म्मसंयुक्त कथा और प्रख्यात मनुष्यों का तनिक वर्णन हुआ । अब कि पुलूस उन के सब से प्रसिद्ध नगर में और उन की अद्भुत विद्या और प्रवीणता के प्रकाशमान लक्षणों के बीच प्रवेश करता है इन विषयों का कुछ और वृत्तान्त लिखना उचित देख पड़ता है । क्योंकि यवन लोग सब अन्य प्राचीन और नवीन जातियों से बुद्धि और विद्या और एक आश्चर्य्यजनक सुन्दरता के लिये प्रख्यात थे और अथेनी नगर यवन देश की आंख और शिल्पविद्या और सुवक्तृता की माता कहलाता था । यवन देश का जल वायु सुन्दर यवन लोगों का डौल सुन्दर उन के मुख सुन्दर उन की भाषा सुन्दर उन की भावना सुन्दर और हाथ और बुद्धि के कार्य सम्पूर्ण रूप से सुन्दर और मनोहर थे । यद्यपि उन की धर्म्मसंयुक्त कथायें सब के सब मनकल्पित और निःप्रमाण थीं तथापि यह अद्भुत सुन्दरता इन में भी देख पड़ती थी और इस के अनुसार उन के मन्दिर और मूरतें इस सुन्दरता के निमित्त यहां लों अतुल्य थे कि इन दिनों उन के टुकड़े २ उपमा और सांचा की रीति दूर देशों में पहुंचाये जाते हैं ॥

अथेनी नगर यवन लोगों के सब से उत्तम और श्रेष्ठ कार्यों का अद्भुत समूह और संहिता ठहरा। उस का राज्य बहुधा प्रजाकृत और लोकोपयोगी हो रहा था और उस के सेनापति और अध्यक्ष अन्य यवनों में प्रख्यात और यशवंत थे। उस का बन्दर सलामीस की खाड़ी पर पैरियस नाम से प्रसिद्ध था। और उस बन्दर से छः मील दूर पर अथेनी नगर बना था। बन्दर से नगर लों दो लम्बी भीत चालीस हाथ ऊंची और उन के बीच आवागमन का चौड़ा मार्ग बना था। इस मार्ग से होके जो नगर में प्रवेश करता तो अनेक देवताओं और देवियों की अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा चारों ओर दृष्टि आतीं पल्लास देवी की जो बुद्धि की देवी और अथेनी नगर की इष्टदेवी जानी जाती थी। पोसाईडौन और वृहस्पति और अपल्लो और हरमीज इत्यादि देवताओं की मूरतें और डाइ-नुसुस देवता का एक मन्दिर और जाते २ और भी मूरतें और वेदियां और मन्दिर देखने में आते। और एक लम्बा मार्ग जिस की दोनों ओर खंभों के उसारे बने थे और भीड़ २ मनुष्य संवाद करने को खड़े रहते अथवा आया जाया करते थे। उस मार्ग के अन्त पर बायें ओर को एक मार्ग समाधिस्थानों में और विद्या-वानों के उपवनों और बाटिकों में गया। दहिनी ओर एक और मार्ग एक बड़े चौक ऐगोरा नामे को गया जिस में अथवा उस के पड़ोस में नगरनिवासियों के

विशेष कर्म्म अर्थात राजकाज के शिल्पविद्या के न्याय के लीला क्रीड़ा के लेन देन के होते जाते थे। उस के चारों ओर पत्थर के अत्यन्त सुन्दर गृह मन्दिरादि और उस के चौगान में अनेक मूरतें और वेदियां बनी थीं। गृह बहुधा सर्वसाधारण सर्वलोकोपयोगी अथवा राजसम्बन्धी थे और अनेक उसारों से बने और सुन्दर रंग बिरंग चित्रों और मरमर की मूरतों से विभूषित थे। उन गृहों के पीछे पश्चिम ओर को नुक्स नाम एक छोटी झुकी हुई पहाड़ी थी जिस के ऊपर राजकाज के लिये सर्वलोकसम्बन्धी सभा होती थी। उत्तर दिशा को एक और पहाड़ी जिस पर आरीज देवता का जो कार्त्तिक्य के समान सङ्ग्राम का देवता था एक मन्दिर बना था और उस पहाड़ी का नाम आरियोपगुस अर्थात कार्त्तिक्य की पहाड़ी था। वहां पर विचारस्थान था जिस में न्यायकर्त्ताओं की सभा होती रही। फिर पूर्व ओर को डेढ़ सौ फुट का एक कराड़ा था जिस के ऊपर पल्लास देवी का ऐसा मन्दिर बना था जो पार्थिनान अर्थात कन्यालय के नाम से लोक प्रख्यात हो गया। उस पहाड़ी का नाम अक्रापोलिस अर्थात ऊंचा गढ़ था और उस पर केवल इषृ देवी का मन्दिर न था बरन उस की चोटी पर और कराड़े की प्रत्येक ताक में छोटे बड़े मन्दिर मूरतें वेदियां बनी हुई थीं। उस कराड़े का यह वर्णन लिखा हुआ है कि वह शिल्पविद्या इतिहास और धर्म्म का अद्भुत पदार्थालय था क्योंकि देवताओं

की पूजा के निमित्त और अपनी जाति और देश का यश बढ़ाने की इच्छा से अथेनी वालों ने उस को गृहादि निर्माण और प्रतिमा की शिल्पविद्या के अद्भुत सुन्दर कार्यों का एक अद्भुत समूह और संहिता बनाया था। पल्लास देवी के दो और नाम थे एक अथीनी जिस से नगर का नाम हुआ और रूमी लोग उस देवी को मिनरभा भी कहते थे। वह कन्या कुंवारी और बुद्धि और सङ्ग्राम और शिल्पविद्या की देवी बखान किई जाती थी। उस की एक प्रतिमा थी जो छब्बीस हाथ ऊंची हाथीदांत और सोने की बनी थी। उस में बारह लाख रुपये का सोना लगा था। मन्दिर के बाहर कराड़े के ऊपर उस की एक और इस्से ऊंची मूरत सैंतीस हाथ ऊंची पीतल की बनी थी उस के शिर पर सोने का शिरस्त्र और हाथ में एक भाला था जिस की नोक सोने की थी। यह मूरत बारह हाथ ऊंचे एक आसन पर स्थापित थी ऐसा कि जब नौका सलोमिस की खाड़ी से होके पैरियस की ओर आती थीं तो यह सोने का शिरस्त्र और भाले की नोक सूर्य की ज्योति में चमकके सब से पहिले पदार्थ दृष्टि आते थे। इस रीति से यवनों ने अपने मनकल्पित देवताओं और देवियों की पूजा में और अगणित प्रसिद्ध सेनापतियों और बीरों और ज्ञानियों और सुबक्ताओं की प्रतिष्ठा के लिये अपने इस शोभायमान नगर अथेनी को मूर्त्तियों और वेदियों से भर दिया था। और केवल इतना ही नहीं वरन अपने मनभावना के अनुसार उन्हों ने अनेक

गुणमात्रों के सन्मान के निमित्त जैसे लज्जाशीलता दया-यश पराक्रम इत्यादि इधर उधर वेदियां बनाईं यहां लों कि एक कहावत प्रचलित थी कि अथेनी में मनुष्यों से अधिक देवते मिलते हैं ॥

अक्रापोलिस कराड़े की जड़ पर दैयानुसुस देवता की पूजा के लिये एक बड़ा क्रीड़ागृह था जो अर्द्धगोल के आकार में पहाड़ से खोदा गया था । यह देवता मूल यवनी न था बरन उस की कथा में वर्णित है कि वह भरतखण्ड से वहां को गया । वह दाखवृक्ष और मदिरा का देवता था और उस की पूजा में यवन लोग मतवाला हो दण्डों पर लिङ्ग की मूरतें ले जाते और होली के समान अपने स्वरूप को रङ्ग से बिगाड़के निर्लज्ज और लम्पट बचनों से आपस का निरादर करते थे । धीरे २ इस की पूजा में यवनी कवीश्वरों ने नाना प्रकार के कबिता और नाटक निर्माण किये जो प्रतिवर्ष यवनों की एक बड़ी सभा के सन्मुख प्रकाशित हुये । इस लीला क्रीड़ा के निमित्त उन्हों ने वह क्रीड़ागृह बनाया जिस में पचास सहस्र मनुष्य आ सकते थे । पहाड़ी की चट्टान में सीढ़ी के समान अर्द्धगोल के आकार में लंबे गोल आसन एक दूसरे के ऊपर खोदे गये और उन के सन्मुख अखाड़ा अथवा नाटकालय जिस पर नट लोग लीला क्रीड़ा करते थे बना था । इस क्रीड़ा के निमित्त नाटक आदि नाना प्रकार की कविता प्रतिवर्ष निर्माण किई जाती थीं।

उन में से कितने आज लों भी उपस्थित हैं और सारे विद्यावान उन को अति सुन्दर और मनोहर जानते हैं क्योंकि इन नाटकों में उस देवता की पूजा की अयोग्य बातों को त्याग कर कवीश्वर बहुधा अपने देश और पुरपे लोगों के शोकजनक और भयानक वृत्तान्त को अति मनमोहन रूप से प्रगट करते थे और जिस का नाटक सब से अच्छा निकला उस की बड़ी प्रतिष्ठा हुई। परन्तु उस देवता की पूजा के कारण साधारण लोगों में अकथ्य अपवित्रता प्रचलित हो गई॥

यवनों के केवल नाटक आदि कबिता के निर्माण-कर्त्ता प्रसिद्ध और अतुल्य न थे बरन रेखागणित और बीजगणित अलङ्कार विद्या तत्वबिचार विद्या इतिहास इत्यादि समस्त विद्याओं में उन के ग्रन्थकर्त्ता गुरु और ऋषी सारे अन्यजातियों से निपुण और बलवन्त थे और प्रजाकृत सर्वलोकसम्बन्धी राज्य के कारण उन के सम्पूर्ण राज्यविषयों की चर्चा साधारण लोगों के सन्मुख होती जाती थी। इस के निमित्त सर्वलोक सम्बन्धी सभायें नुक्स पहाड़ी के ऊपर होती जाती थीं और नगर और राज्य के प्रधान अध्यक्ष जो बहुधा सुबक्ता थे अपने २ राजनीति प्रबन्ध समस्त लोगों के सन्मुख अति मनोहर वाक्यों से बखान करते थे। साधारण लोग इन सभाओं में और क्रीड़ागृह में उपस्थित हो सदा यह बखान और कबिता सुना करते थे और इस रीति से उन की बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण और

उन की भाषा अति शुद्ध और सुन्दर होती गई और वे इन सब विषयों का बादानुबाद और बिचार करने में थोड़ा बहुत प्रवृत्त रहते थे । परन्तु एक विषय था जिस को ज्ञानी लोग पण्डित और गुरु विशेष करके अपने आधीन कर रखते थे । अर्थात जिस रीति से हिन्दू ऋषियों और आचार्यों ने सृष्टि के तत्व और परमपुरुषार्थ का नाना प्रकार का बिचार करके षट-दर्शनों को स्थापन किया इसही रीति से इन प्रकरणों के अनेक दर्शन यवनी आचार्यों से भी स्थापन हुये । विशेष करके तीन बड़े संप्रदाय अथवा मत उन के बीच में प्रचलित थे । एक जो ऐकादिमी अर्थात उपवन का मत कहलाता है इस कारण कि इस का बड़ा आचार्य इफ़लातून जो सुकरात का चेला था उप-वन में फ़िरते २ अपने मत की शिक्षा करता था । दूसरा इपिकूरी अर्थात बाटिका का मत इस कारण कि इस का स्थापनकर्त्ता इपिकूरस नामे अपने चेलों को बाटिका में पाठ पढ़ाता था । इस मत के अनुसार कुशल और चैन परमपुरुषार्थ है उस का मूल अभिप्राय उस मानसिक कुशल और चैन से था जो सुस्वभाव और सुकर्म से उत्पन्न होता है परन्तु उस के उत्तरवर्ती आचार्यों ने उस अभिप्राय को बिगाड़के इन्द्रिय विशेष सुखबिलास को परमपुरुषार्थ बतलाया और यों उन के चेले बड़े इन्द्रियाधीन और रजोगुण के बस हो गये । तीसरे स्तोयेकी अर्थात उसारे का मत इस

कारण कि इस का पहिलाशिष्यक ज़ेनो एक उसारा में जो रङ्गारङ्ग चित्र लेखनों से विभूषित था अपने मत का उपदेश करता था। इस के अनुसार एक प्रकार का वैराग्य जिस में न दुःख न सुख का चेतन है परम-पुरुषार्थ है और इस के शिष्य कषृ उठाने में बड़े बली थे परन्तु कठोर मन और अहङ्कारी हो वे तमोगुण के बस भी हो गये। इन को छोड़ अनेक और मत भी थे जिन के कितने सिद्धान्त षटदर्शनों के सिद्धान्तों से थोड़ा बहुत मिलते हैं और ये सब आचार्य और ऋषी अपने २ सिद्धान्तों की बड़ीही चर्चा और परस्पर बहुत वादानुवाद करते थे। बहुधा ये ज्ञानी साधारण मूर्त्ति-पूजा पर कुछ विश्वास न रखके निवृत्ति मार्ग को मानते थे परन्तु लौकिक व्यवहार के कारण वे प्रवृत्ति मार्ग पर चलते भी थे। इस रीति से एक प्रत्यक्ष कपट और छल उन में देख पड़ता था जिस के कारण से उन का नीति-संयुक्त आत्मिक स्वभाव बहुतही बिगड़ गया और हेत्वा-भाषबादी और जल्प और वितण्डा करनेहारे उन में अत्यन्त बढ़ गये जो वेदान्तियों के समान सत्य मिथ्या को मिश्रित करके अपने को और औरों को भ्रष्ट करते थे॥

अगले दिनों में अथेनी के निवासी एक लाख से अधिक थे। जब रूमियों ने यवन देश को अपने बड़े राज्य में मिला लिया उन्हों ने कोरिन्तुस नगर को उस भाग की अर्थात अखाया की राजधानी ठहराया तब

से अथेनी की महिमा घटती गई। फिर भी वह निरन्तर विद्या के प्रकरण में समस्त अन्य यवनी नगरों से प्रतिष्ठित था और रूमी लोग अपने लड़कों और जवानों को शिक्षा पाने के लिये वहां भेजते थे। नगर की यह दशा थी जब कि पुलूस यसू ख्रीष्ट का शिष्य और प्रेरित हो मंगलसमाचार प्रचारने को उन लोगों के बीच अकेला आ गया। कदाचित फिलिपी में बेंत के मार खाने से उस का शरीर कुछ दुःखी था और अकेला होने के कारण क्या आश्चर्य्य कि उस का मन तनिक उदास भी हो। परन्तु वह नित्य अपना प्रभु अपने संग जानता था और उस के काम से अपना हाथ कभी नहीं खींचता था। नगर में थोड़े यहूदी थे सो वह पहिले अपनी रीति के अनुसार उन के पास जा उन के मण्डलीघर में ख्रिष्टीय उपदेश करने लगा। परन्तु केवल इतने पर सन्तुष्ट न था क्योंकि जब उस ने नगर को देवों और देवियों की मूरतों और वेदियों और मन्दिरों से भरा हुआ और नगरनिवासियों को अपने मनकल्पित देवपूजा पर ऐसा उन्मत्त देखा तो उस का मन ज्वलित हो गया। सत्य ईश्वर की अपनिन्दा से वह दुःखी था और उन लोगों की अज्ञानता पर दयावान था। इस कारण प्रतिदिन ऐगोरा नामे चौक में जहां संवाद और बकबक करने के लिये समस्त प्रकार के नगरनिवासी एकट्ठे होते थे जाके उन से जो उस को मिलते थे वार्त्ता करने लगा॥

ध्यानी मनुष्य जो इस दशा पर मन लगाके सोचे तो अवश्य मान लेगा कि बड़े आश्चर्य्य की दशा है क्योंकि पुलूस के चारों ओर एक लाख के लग भग मनुष्य थे जो सांसारिक विद्या में अति निपुण और प्रसिद्ध थे परन्तु उन के पास सत्य परमेश्वर का ज्ञान न था और वे अभिमान करके यहूदी लोगों को तुच्छनीय जानते थे। अब उन के बीच एक निर्बल मनुष्य जो जात का तुच्छनीय यहूदी और यसू ख्रीष्ट का शिष्य था उन में ईश्वर का सत्य ज्ञान प्रचारने के लिये आया था। निःसन्देह यवनों ने उस का स्वरूप देखके पहिचान लिया होगा कि यह यहूदी है और आश्चर्य्य मानके बिचार किया होगा कि यह भी हम लोगों की शिक्षा करने को आया है। कदाचित कितने एक दिन इस रीति से बीत गये होंगे कि अथेनी वाले जो नई २ बात के कहने और सुन्ने में अत्यन्त प्रवृत्त थे नई बात सुन्ने की इच्छा से थोड़ी सुनते फिर ठट्ठा करके चले जाते। इतने में रजोगुणी अपीकूरी और तमोगुणी स्तोयेकी ज्ञानियों में से कितने उस से बिवाद करने लगे और कितने बोले यह बकवादी क्या कहने चाहता है। पर औरों ने जब सुना कि यसू और पुनरुत्थान की वार्त्ता करता है तो कहा कि यह पराये देवों का प्रचारक देख पड़ता है। तब उन्हों ने उस को आरियोपगुस नामे पहाड़ी पर जहां न्यायकर्त्ताओं की सभा होती थी ले जाके कहा कि क्या हम जान सक्ते हैं कि

यह नया उपदेश जो हम सुनते हैं क्या है क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है और हम जान्ने चाहते हैं कि इस का क्या अभिप्राय है इति। आरियोपगुस के बिचारस्थान पर चढ़ने के लिये सीढ़ी और न्यायकर्त्ताओं के लिये आसन भी चट्टान में खोदे गये थे और वहां खड़े होके सारे मनुष्य ऐगोरा की चौक और अक्रापोलिस का बड़ा मन्दिर और अगणित देवों और देवियों की मूरतें और वेदियां देख सक्ते थे। तब पुलूस सभा के सन्मुख खड़ा हो और हाथ से सैन कर कहने लगा॥

पुलूस बोला। हे अथीनियो मैं तुम को सर्वथा देवों के बड़े भक्त देखता हूं क्योंकि चलते फिरते और तुम्हारे धर्म्मविशेष पदार्थों को देखते २ मैं ने एक वेदी पाई जिस में यह लिखा था कि अनजाने ईश्वर की। सो जिसे तुम बिन जाने पूजते हो उस ही का समाचार मैं तुम्हें सुनाता हूं। परमेश्वर जिस ने जगत और सब कुछ जो उस में है बनाया सो स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु होके हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में बास नहीं करता है और न किसी बस्तु का प्रयोजन रखके मनुष्यों के हाथ से सेवा लेता है। वह तो आप ही सभों को जीवन स्वास और सब कुछ देता है। उस ने एक रुधिर से मनुष्य की सारी जातें पृथ्वी की सम्पूर्ण पृष्ठ पर बसने के लिये बनाईं। और ठहराये हुए कालों को और उन के निवास के सिवानों को बांधा जिसतें वे परमेश्वर को ढूंढ़ें कदाचित टटोलते २ वे उसे पावें।

ऐसा तो नहीं कि वह हम में से किसी से कुछ दूर है क्योंकि उसी में हम जीते और फिरते और होते भी हैं। जैसे तुम्हारे यहां कितने कवियों ने भी कहा है कि उसी के तो हम बंश हैं। तो यह विचार करना उचित नहीं है कि ईश्वरत्व मनुष्य की शिल्पविद्या और भावना से गढ़े हुए सोने अथवा रूपे किंवा पत्थर के समान है। इस लिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अभी सर्वत्र सब मनुष्यों को पछतावा करने की आज्ञा करता है क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा जिसे उस ने नियुक्त किया है धर्म्म से जगत का न्याय करेगा और उस को मृतकों में से जिलाके इस बात का निश्चय सभों को कराया है इति ॥

इतने बचन सुनते ही अथेनी वाले थक गये और कितने यह कहके कि हम इस के विषय में तुझ से फिर सुनेंगे चले गये कितनों ने मृतकों के जी उठने का बचन सुनके ठट्ठा किया। दो मनुष्यों के नाम एक पुरुष दैयोन्यूसियूस का जो आरियोपगुस का न्यायकर्त्ता था और एक स्त्री दामेरिस का लिखे हैं और कितने एक और लोगों का वर्णन है जो बिश्वास लाके शिष्य हो गये। परन्तु पुलूस के उपदेश से केवल इतनाही फल नहीं हुआ क्योंकि सत्वरजस्तमस्सङ्ग्राम में जो वहां होने लगा होते २ सत्वगुण वहां जयवन्त हुआ और अथेनी नगर के सारे देवगण खण्डन हुए और यवन देश वरण सारा

यूरप महाखण्ड की सम्पूर्ण मनमता और मूर्त्तिपूजा सर्वत्र मिट गई यहां लों कि अब सैकड़ों बरसों से उन का एक भी भक्त संसार भर में कहीं पाया नहीं जाता है। किसी हेतु से पुलूस ने अच्छा नहीं माना कि उस समय और देर लों अथेनी नगर में रहे। कदाचित उस ने समझा हो कि यहां के लोग अपनी लौकिक विद्या और अपने मनकल्पित मत पर बड़ा अभिमान करते हैं और अपनी पापी दशा से निश्चिन्त हो मुक्ति के सत्य ज्ञान की अभिलाषा नहीं रखते हैं। कदाचित पवित्रात्मा ने उस को बतलाया हो कि कोरिन्तुस राजधानी में प्रभु के बहुत लोग होंगे। सो अथेनी से सिधारके जैसे इस पुस्तक के पहिले अध्याय में वर्णित है वह कोरिन्तुस को गया और प्रायः दो बरस वहां रहके अन्त को ऊपर के वर्णन के अनुसार अन्ताकिया नगर में पहुंचा। आगे को उस की तीसरी बड़ी यात्रा का थोड़ा बहुत वृत्तान्त लिखा जायगा॥

तेरहवां अध्याय।

तीसरी बड़ी यात्रा कर अफसुस में पहुंचना नगर का वृत्तान्त और पहिले शिष्यों और यहूदी वैरियों का वर्णन।

जब पुलूस अन्ताकिया में आया तो जैसा उस ने पहिली यात्रा के अन्त पर किया फिर अबके बार भी किया होगा अर्थात भाइयों को एकट्ठा करके ईश्वर का कर्म जो अन्यदेशियों के बीच उस के हाथ से हो गया था उन को बतलाया और उन्हों ने सुनके अत्यन्त आनन्दित हो परमेश्वर का धन्यबाद किया। फिर कुछ दिन रहके उस बचन का जो उस ने अफसुस के यहूदियों को दिया था कि ईश्वर की इच्छा हो मैं फिर आऊंगा स्मरण कर पुलूस अपनी तीसरी बड़ी यात्रा के लिये वहां से सिधारा। उस का समयात्री तिमोदेउस और पीछे से कई एक मनुष्य अर्थात कोरिन्तुस का निवासी और भंडारी अरस्तुस और थसलोनिकी के दो भाई गायूस और अरिसतारकुस और सम्भव है कि एक और तीतुस नामे भी यात्रा में उस के संग मिल गये। पहिले पुलूस एशिया के प्रायद्वीप के दो भागों में जिन के नाम फुरजिया और गलातिया थे शिष्यों को स्थिर करता हुआ गया। दूसरी बड़ी यात्रा में पुलूस उन्हीं सिवानों में मंगलसमाचार सुनाने के लिये गया था और गलातिया चकले में कई खिष्टीय मण्डलियां

स्थापित हो गई थीं परन्तु उस के उद्योगों का वृत्तान्त लिखा नहीं गया। केवल यह है कि उन के पास दूसरी बार जाने के उपरान्त उन की दशा का ऐसा समाचार पुलूस को मिला जिस के कारण उस ने उन के पास वह शिक्षापत्र लिख भेजा जो उन के नाम पर मंगल-समाचार पुस्तक में संयुक्त है। इतिहास के द्वारा और उस पत्र से भी जाना जाता है कि उन लोगों का स्वभाव फुरतीला और चंचल था। वे उसी कुल के थे जिन के इन दिनों फ्रानसीस लोग संतान हैं और भूत और वर्तमान के उन लोगों में एकही प्रकार के गुण प्रगट होते हैं। पुलूस अपने पत्र में लिखता है कि जब वह पहिले उन के पास गया यद्यपि वह रोग के कारण अपने कर्म में बहुत रुक गया था तथापि उन्हों ने बड़ी मिलनसारी और प्रेम से उस को ग्रहण किया परन्तु पीछे से पक्षपाती यहूदी शिष्यों की भटकानेवाली शिक्षा के कारण वे उस से फिर गये। इस दशा में वह उन के पास यों लिखता है कि तुम जानते हो कि पहिले मैं ने शरीर की दुर्बलता में तुम को सुसमाचार सुनाया और मेरी परीक्षा को जो मेरे शरीर में थी तुम ने तुच्छ नहीं जाना न घिन किया बरण जैसे ईश्वर के दूत को जैसे खीष्ट यसू को तैसेही मुझ को ग्रहण किया। तो अब वह तुम्हारी धन्यता कहां क्योंकि मैं तुम्हारा साक्षी हूं कि जो हो सक्ता तो तुम अपनी २ आंखें निकालके मुझ को देते। सो क्या तुम से सत्य बोलने के कारण

मैं तुम्हारा बैरी हुआ हूं इति । निदान पुलूस अपनी दूसरी बड़ी यात्रा में इन लोगों के पास गया था और अब फिर तीसरी यात्रा में दूसरी बेर उन के पास गया। विदित नहीं होता है कि पहिले के दूसरी भेंट में उस की यह दुर्बलता थी परन्तु दोनों बार उन लोगों ने उस को बड़ी सुशीलता से ग्रहण किया । दूसरी भेंट के उपरान्त पुलूस उत्तर की ओर यात्रा कर रूमियों के उस बड़े राजमार्ग से जो उत्तर पूरब के कोण से रूमी एशिया की राजधानी अफ़सुस नामे में गया था उस नगर में पहुंचा ॥

इस पुस्तक के नवें अध्याय में अफ़सुस नगर का थोड़ा सा वर्णन लिखा है । जब कि पुलूस अबकी बार प्रायः तीन बरस लों प्रभु यसू ख्रीष्ट का कर्म करते २ उस नगर अथवा उस के पड़ोस में रहा और वहां उस पर अद्भुत वृत्तान्त बीत गया इस कारण नगर का तनिक और वर्णन लिखा चाहिये ॥

उस नगर के प्रसिद्ध होने का एक विशेष कारण यह था कि वहां एक ऐसा मन्दिर बना था जो सारे संसार में प्रख्यात था । वह मन्दिर आर्तमिस अर्थात अस्तार्ती नामे देवी का जो चन्द्रमा अथवा पारबती देवी के कुछ समान थी पूजा के लिये बना था । वह दो सौ अस्सी हाथ लम्बा एक सौ सत्तावन हाथ चौड़ा था और उस का छप्पर एक सौ सत्ताईस बड़े खंभों पर जो चालीस २ हाथ ऊंचे थे धरा था । एक २ खम्भ

किसी राजा का दिया हुआ बखान करते थे और मन्दिर की शोभा और सुन्दरता ऐसी थी कि जगत के सात आश्चर्य्य पदार्थों में यह मन्दिर एक गिना जाता था। उस में एक मूरत थी जिस को कहते थे कि स्वर्ग से गिरी और सारा संसार उस को पवित्र मानता था। नगर में बहुत सुनार ठठेरे थे जो मन्दिर और देवी की छोटी २ मूरतें चांदी और पीतल की बनाके और परदेशी यात्रियों के हाथ बेचके बड़ा धन सम्पत्ति कमाते थे। क्योंकि उस राजधानी में चारों ओर के देशों के निवासी व्यापार और पूजा के लिये आया करते थे। इस रीति से नगरनिवासी अनेक देशों के मनुष्य थे एशिया वालों को छोड़ रूमी और यवन और यहूदी भी उस में बास करते थे और नाना प्रकार के मतावलंबी वहां एकट्ठे हो अर्तमिस देवी की पूजा में मिलते थे। केवल यहूदी लोग जहां कहीं जाते थे सत्य परमेश्वर को छोड़ और किसी का भजन नहीं करते थे॥

ऊपर वर्णित हुआ कि जब पुलूस पहिली बार अफसुस में आया तो अकिला और प्रिसकिला उस के संग थे और वह उन्हें वहां छोड़ गया। सम्भव है कि उन को छोड़ कोई ख्रिष्टीय शिष्य उस समय नगर में न हुआ होगा। इस कारण वे यहूदियों के संग मण्डलीघर में परमेश्वर का भजन किया करते थे। इतने में ऐसा हुआ कि एक शनिवार को जब वे मण्डलीघर

में भजन करते थे और धर्म्मपुस्तक का पाठ हो चुका था तो एक परदेशी मनुष्य शिक्षा करने के लिये खड़ा हो गया। वह बड़ा विद्यावान और सुवक्ता था और धर्म्मपुस्तक का अर्थ खोलने में बड़ा ज्ञानी और निपुण भी था। प्राचीन आचार्य्यों और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से उस ने ज्ञान पाया था कि स्वर्ग का राज्य अर्थात ख्रीष्ट के प्रगट होने का समय निकट आया। ऐसा देख पड़ा कि उस ने युहन्ना स्नानकर्त्ता की शिक्षा पाई और ग्रहण किई थी क्योंकि उसी की रीति वह समस्त लोगों को बड़े ज्वलन से उभारता था कि पछतावा करो और मन फिराके सिद्ध होओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है। परन्तु उस ने सुन नहीं लिया था अथवा सुनके ग्रहण नहीं किया था कि श्री यसू नासरी वही ख्रीष्ट है। युहन्ना स्नानकर्त्ता प्रभु यसू से छः मास आगे यहूदिया देश में प्रगट हुआ था और उस का विशेष कर्म यह था कि प्रभु के आने के लिये समस्त लोगों के मन को सिद्ध करे। उस का वृत्तान्त मंगलसमाचार पुस्तक में लिखा है। वह मनुष्य जो अफ़सुस के मण्डलीघर में यह शिक्षा करता था सो अपोल्लुस नामे था वह स्कन्दरिया नामे नगर का निवासी था और उन दिनों की विद्या और ज्ञान में बड़ा बली था। उस की शिक्षा से मण्डली के कितने लोगों ने आश्चर्य माना और अक्विला और प्रिसकिला ने उस के सतगुणों को देखके उस की मिल-

नसारी किई और उस को अपने यहां ले जाके जो कुछ उन्हों ने पुलूस प्रेरित से सीखा था उस के लिये बतलाके ईश्वर के सत्य मार्ग का अधिक स्पष्ट वर्णन किया ॥

इस वृत्तान्त से देख पड़ता है कि ज्ञानी शिष्य कभी २ अपने शिक्षकों को भी उत्तम ज्ञान सिखा सकते हैं और ज्ञानी शिक्षक अपने शिष्यों से सत्य ज्ञान की शिक्षा पाने से अप्रसन्न न होंगे । अकिला और प्रिसकिला जो तम्बू बनानेहारे थे दो बरसों से पुलूस की संगति में रहे थे इस कारण उन्हों ने अपोल्लुस की अपेक्षा उत्तम ज्ञान प्राप्त करने का बड़ा औसर पाया था और बड़े आनन्द से सभों को जो ज्ञान के खोजक थे सामर्थ भर शिक्षा देने पर सिद्ध थे । क्योंकि ज्ञान ऐसा पदार्थ है कि जितना औरों को देवें हम अपना नहीं घटाते बरन देने से बढ़ाते भी हैं । विदित नहीं है कि इस के उपरान्त अपोल्लुस कितने दिन अफसुस में रहा अथवा कि उस ने वहां के मण्डलीघर में खिष्टीय उपदेश किया कि नहीं । परन्तु यह लिखा है कि उस ने अखाया में जाने चाहा और भाइयों से पत्र लेके कोरिन्तुस में गया । जब वह वहां पहुंचा विश्वासी शिष्यों ने बड़े आनन्द से उस को ग्रहण किया और उस ने उन की बड़ी सहायता किई और धर्म्मपुस्तक से प्रमाण लाके कि यसू नासरी तो खीष्ट है सब लोगों के सन्मुख बड़े यत्न से यहूदियों को निरुत्तर कर दिया ॥

इतने में पुलूस प्रेरित दूसरी बार अफसुस में आ पहुंचा और सम्भव है कि अपने पुरातन मित्रों अर्थात अकिला और प्रिसकिला के यहां जा रहने लगा। क्योंकि जैसे उस ने कोरिन्तुस में किया था तैसे अफसुस में भी तम्बू बनाने में परिश्रम करता रहा। सन्देह नहीं है कि उन के बतलाये से उस ने अपोल्लुस का वृत्तान्त सुन लिया होगा और कितने और मनुष्यों का भी समाचार पाया जो शिष्य कहलाते थे परन्तु अपोल्लुस के समान उन्हों ने भी केवल युहन्ना स्नानकर्त्ता का उपदेश सुनके ग्रहण किया था। वर्णित नहीं है कि ये लोग कहां के थे अथवा कब अफसुस में आये थे किंवा वे यहूदियों के मण्डलीघर में भजन करते थे कि नहीं। परन्तु पुलूस ने जब उन का वृत्तान्त समझ लिया तो खिष्टीय जलसंस्कार उन को देके पीछे से अपना हाथ उन के शिर पर धर दिया और उन्हों ने पवित्रात्मा का दान पाया। इस रीति से उन मनुष्यों के द्वारा जो बारह एक थे अकिला और प्रिसकिला को उन के संग मिलाके पुलूस ने अफसुस नगर में प्रथम खिष्टीय मण्डली की नेव डाली और सम्भव है कि ये सब खिष्टीय शिष्य अपने खिष्टीय भजन सहित जो रविवार को होता रहता था यहूदियों के मण्डलीघर में निरन्तर उपस्थित हुए होंगे॥

इसी प्रकार से उस नगर में भी जहां रातोंरात का अन्धकार अर्थात धर्म्म और परमेश्वर के सत्य ज्ञान

के विषय में रजोगुण और तमोगुण सनातन से छाय रहे थे सत्त्वगुण का उजियाला एक दीपक के समान चमकने लगा। अब देखा चाहिये कि वहां भी जैसे कोरिन्तुस में और समस्त अन्य नगरों और देशों में जब सत्य जीवन का उजियाला अन्धकार में चमकता है तो अन्धकार उस को ग्रहण नहीं करता है बरन उस के विरुद्ध सङ्ग्राम करने लगता है। और यदि वह उजियाला केवल उन्हीं मनुष्यों का बारा हुआ होता तो उस को दीपक के समान बुझाना क्या कठिन होता। परन्तु सूर्य्य को बुझाना मनुष्य की सामर्थ्य नहीं। जहां कहीं सूर्य्य की ज्योति पहुंचती है वहां अन्धकार नष्ट होता है परन्तु सूर्य्य भी पल भर में उदय नहीं होता है रात दिन के बीच एक काल अरुणोदय कहलाता है जिस में अन्धकार उजियाला से सङ्ग्राम करता है और धर्म्म सूर्य्य के उदय होने में यही दशा देख पड़ती है परन्तु अन्त को अन्धकार को सर्वथा भाग जाना अवश्य पड़ता है॥

अफ़सुस में पुलूस अपने व्यवहार के अनुसार सब से पहिले मण्डलीघर में जाके यहूदी भाइयों के पक्षपातरूपी अन्धकार के बीच सत्य ज्ञान का उजियाला प्रकाश करने लगा। जब वह पहिली बार उन के पास गया था तो उन्हों ने उस की बिन्ती किई कि कुछ और दिन हमारे पास रहके अपना उपदेश सुनाइये परन्तु उस समय वह रह न सका। अब कि वह उन के बीच

रहने के लिये आया था उन्हों ने प्रथम उस को मण्डलीघर में वे धड़क और बे रोक टोक उपदेश करने दिया। कितने दिनों वे आनन्द अथवा धीरज के संग प्रभु यसू खीष्ट का मंगलसमाचार पुलूस के प्रचारने से सुन रहे थे सो नहीं लिखा है परन्तु सन्देह नहीं है कि उस के विषय में उन के बीच जैसा कोरिन्तुस में हुआ बड़ा बिवाद हुआ होगा। क्योंकि अन्त को जब तीन मास बीत गये यहूदी लोग और धीरज न कर कठोर हो गये और उस खिष्टीय शिक्षा की निन्दा करने लगे। इस कारण पुलूस उन के पास से चला गया और शिष्यों को अलग कर तुरेनुस नामे एक मनुष्य की पाठशाला अथवा विद्यालय में धर्म्मोपदेश और बादानुवाद करने लगा। और यह दशा दो बरस लों होती रही और उस के कारण वैसाही वृत्तान्त उपस्थित हुआ होगा जैसे कोरिन्तुस नगर में ऊपर वर्णित हुआ इस लिये उस का दोबारा वर्णन करना कुछ प्रयोजन नहीं। निदान उस के और खिष्टीय शिष्यों के उद्योग और परिश्रम के द्वारा मंगलसमाचार यहां लों उन सब सिवानों में प्रचारा गया कि रूमी एशिया के चारों ओर के निवासियों ने क्या यहूदी क्या यवनी उस को सुन्ने पाया॥

इस वृत्तान्त से भी अर्थात कि पुलूस ने अफ़सुस में जैसे कोरिन्तुस और अन्य नगरों में यहूदियों से अलग हो अन्य जातियों के पास जा उन को मंगलसमाचार प्रचारा यह जाना जाता है कि सत्य का तम पर प्रबल

होना सदा सर्वदा इस प्रकार का नहीं है कि सत्य तम को तुरन्त नष्ट कर देता है । क्योंकि परमेश्वर जिस ने मनुष्य जाति को और उन के मूल प्रकृति और स्वभाव को निर्माण किया है कभी उन पर बरबस्ती नहीं करता है । मनुष्य की आत्मिक जाति की यह शक्ति है कि न केवल सत्य मिथ्या का विवेक करे बरन यह भी कि सत्य को त्याग कर मिथ्या को ग्रहण करे । कभी २ मनुष्य पक्ष अथवा द्वेष किंवा काम क्रोध लोभ के मारे प्रत्यक्ष मिथ्या को ग्रहण करते हैं और उस के स्थापन करने में नाना प्रकार का हेत्वाभास जल्प वितण्डा करते हैं । ऐसे लोगों से प्रमाण लाना अथवा बिबाद करना वृथा है । इस विषय में प्रभु ने शिष्यों को आज्ञा दिई कि अपने मोतियों को सुअरों के आगे मत फेंको फिर जब एक नगर में तुम्हारी नहीं सुनते तो दूसरे नगर में जाओ इति । ऐसा करने में सत्य की हार नहीं होती है क्योंकि वह नष्ट न हुआ न हो सकता है । केवल यह है कि पक्षपातियों को छोड़ वह दूसरे लोगों के पास जाके जय पाता है और इस रीति से अन्त को अपने बैरियों की लज्जा प्रगट करता है । फिर यह भी देख पड़ता है कि मनुष्य के ज्ञान और कुशल और मुक्ति का सब से कठिन बैरी पक्ष है क्योंकि उस के द्वारा भले मनुष्यों के मन पर भी घोरनरक का सा अन्धकार और तम छाया जाता है । परन्तु यहूदियों के पक्ष को छोड़ अफसुस नगर

में और प्रकार का तम भी फैल रहा था जिस का सत्य से सङ्ग्राम करने का वृत्तान्त थोड़ा बहुत आगे के अध्याय में लिखा जायगा॥

चौदहवां अध्याय।

अफसुस के टोन्हों की हार और लोभी सुनारों का हुल्लड़ और पुलूस का अन्तवाला वृतान्त।

सारे मनुष्यजाति के मन में यह बात निश्चय देख पड़ती है कि इस लोक से परे एक और लोक है जिस में नाना प्रकार के शक्तिमान बुद्धिमान जीव जो इस जगत के निवासियों पर दृष्टि करते और उन के सुख दुःख के अभिलाषी हो उद्योग करते हैं बास करते हैं। कदाचित इस विचार का मूल सृष्टि के व्यवहार से अथवा उस के अनुक्रम के विरुद्धता से जो कभी २ देख पड़ती है और मनुष्य की आपत्तियों के कारण से होती है। क्योंकि भूकम्प काल मरी प्रलय इत्यादि बिपत्तें जो समय २ पड़ जाती हैं सो किसी भयङ्कर क्रोधी सामर्थी नाशक के कार्य देख पड़ते हैं और मनुष्य का पापमय मन तुरन्त जान लेता है कि यह आपत्तियां उस नाश-कर्त्ता की ओर से हमारे ऊपर आती हैं। फिर ऐसे पार-लौकिक जीवतों का कुछ ठीक और सत्य समाचार न पाके मनुष्य उन के विषय में नाना प्रकार की कल्पना करने लगते हैं। इस कल्पना में वे अपनेही स्वभाव और प्रकृति से अनुमान करके उन पारलौकिक अदृश्य जातियों में मनुष्यरूपी गुण और स्वभाव निर्माण करते हैं। फिर जब मनुष्य आप कामी क्रोधी लोभी

आपस्वार्थी उपद्रवी क्रूर और कठोर हैं तो क्या आश्चर्य्य कि वे उन अदृश्य जातियों को वैसेही जान लेते हैं और उन के बैर और क्रोध से भय मानते हैं और उन को प्रसन्न करने के निमित्त भांति २ के उपाय रचते हैं॥

फिर मनुष्यजाति अपने भविष्यत् होनहार दशा के कुछ ज्ञान पाने की बड़ी अभिलाषी है। और जब कि उन की समझ में इन अदृश्य शक्तियों का बस इस विषय पर चलता है और कदाचित वे भविष्य का ज्ञान भी रखते हैं तो इस भावना से अज्ञान मनुष्य अनेक रीति के उद्योग करके अपने भाग और कर्म का खोज उन्हीं से करते हैं। इसी प्रकार से टोना मंत्रमोहन झाड़ फूंक करनेहारे ऐसे भयभीत पापी जनों को जो इन बातों को प्रतीति करते हैं ठगके उन से बड़ा धन कमा लेते हैं। इस प्रकार के छली मायाकार लोग एशिया खण्डवाले देशों में सनातन से अगणित हो रहे हैं और उन देशों के धर्म्मों और रीतों में भी ज्योतिषियों और झाड़ फूंक करनेहारों और मंत्रवादियों के द्वारा जन्मपत्र नक्षत्र लगनकुण्डली इत्यादि ठहराना बहुतही प्रचलित हो रहा है। इस प्रकार के ठगी और छली लोग अफसुस नगर में भी बहुत थे। उन का एक मंत्र जो अफसुसी अक्षर कहलाता था सारे संसार में प्रसिद्ध था। वह किसी असमझिय भाषा का एक वाक्य था जैसे बौद्धवालों की बात ओं मनी पदमी ओंम अथवा ब्राह्मणों की गायत्री जिस के द्वारा

मंत्र करके वे अपने बैरियों को साप और अपने मित्रों को और आप को आशीष दे सकते थे। यह मंत्र अफसुसवाले अपने वस्त्रों पर और अपने घरों में रखते थे और उन की समझ में यही मंत्र सब लोगों के लिये निश्चय रक्षक ठहरता है॥

ज्ञानी बुद्धिमान विद्यावान मनुष्य भली भांति जानते कि यह सारी बातें निरी मिथ्या हैं। परमेश्वर के बचन से जाना जाता है कि पारलौकिक आत्मिक जातें तो हैं और उन में कितने जो पहिले स्वर्गीय पवित्र थे भ्रष्ट हो नरकीय नाशक हो गये। परन्तु ईश्वर की इच्छा के बिरुद्ध उन का तनिक भी बल नहीं चल सकता है और मनुष्य के बिन प्रसन्न किये वे उस के भाग वा कर्म वा भविष्य दशा पर कुछ भी नहीं कर सकते हैं। परन्तु अज्ञान लोग यह नहीं जानते और इन मिथ्या बातों को प्रतीति कर और उन से अति भयमान हो वे सत्य उपदेश से बैर रखते और छली लोगों का लूट और अहेर बन जाते हैं। इस कारण मंत्रवादी झाड़ फूंक करनेहारे सदा सर्बदा ईश्वर के सत्य ज्ञान से निपट अप्रसन्न हो उस के मंगलसमाचार के कठिन बैरी ठहरे हैं। अफसुस के ऐसे लोगों की मिथ्या शिक्षा और छल खण्डन करने के निमित्त प्रभु यसू ख्रीष्ट ने अपने प्रेरित पुलूस को अद्भुत आश्चर्य कर्म करने की विशेष शक्ति दिई। यहां लों कि अंगोछे और पटुके उस के शरीर को छुआके रोगियों पर

डालते थे और उन के रोग जाते रहे और दुष्ट आत्मा उन से निकल गये ॥

जब अफसुस के निवासियों ने देखा कि पुलूस के हाथ से ऐसे आश्चर्य कर्म होते हैं तो जो बिश्वास और आदर वे अपने मंत्रकर्त्ताओं पर करते थे सो घट गया और इस रीति से उन छलियों की कमाई भी घट गई। इस दशा में उन्हों ने एक उपाय रचा जो इन दिनों भी ऐसी दशा में कभी २ दृष्टि आता है। अर्थात जब खिष्टीय धर्म जीत जाने पर देख पड़ता है तो वे मनुष्य जो आगे उस के विरोधी थे उस की अनेक बातें ग्रहण कर अपने भावनों में मिलाकर अपना एक नवीन मत स्थापन करने का उद्योग करते हैं। प्रभु यसू खीष्ट की अनेक शिक्षा उस प्रकार की है कि यद्यपि उस के प्रचारने से पहिले वह किसी के मन में नहीं आई थी तथापि जब प्रचारी गई तो वह ऐसी साक्षात सत्य और उत्तम है कि उस को खण्डन करना किसी की सामर्थ्य नहीं है परन्तु इस के संग और भी शिक्षा हैं जो पापी अहङ्कारी मनुष्य को कठिन और कड़वी प्रगट होती हैं। इस कारण कितने मनुष्य कठिन शिक्षा को अस्वीकार कर अपनी भावना के समान कुछ एक शिक्षा ग्रहण करने चाहते हैं। परन्तु ऐसा व्यवहार केवल थोड़े दिनों के लिये चलने पाता है और उस के चलानेहारे अन्त को बड़े लज्जित हो जाते हैं। क्योंकि उस से केवल प्रभु का निरादर और मनुष्य की निरासता

निकलती है। अफसुस के टोना करनेहारों का वैसाही उपाय प्रगट हुआ और उस का वैसाही अन्त भी हुआ। क्योंकि उन्हों ने मन में ठाना कि जिन लोगों को दुष्ट आत्मा लगे हैं उन पर प्रभु यसू का नाम लेके कहें कि जिस यसू को पुलूस प्रचारता है हम तुम्हें उस की किरिया देते हैं। और स्कीवा यहूदी प्रधान याजक के सात बेटे यही करते थे। तब दुष्टात्मा ने उत्तर देके कहा यसू को मैं जानता हूं और पुलूस को मैं पहचानता हूं परन्तु तुम्हीं लोग कौन हो। और जिस मनुष्य को दुष्टात्मा लगा था सो उन पर लपका और प्रबल होके उन को जीता यहां लों कि वे नंगे और घायल होके उस घर से निकल भागे। और यह बात सब यहूदियों और यवनों को जो अफसुस में रहते थे जान पड़ी और उन सभों पर डर पड़ी और प्रभु यसू के नाम की बड़ाई हुई। और जो लोग बिश्वास लाये थे उन में से बहुतेरों ने आके अपने २ कर्म मान लिये और दिखा दिये। और बहुतेरे इन्द्रजालियों ने अपनी २ पुस्तकें जिन में अफसुसी मंत्र लिखे थे एकट्ठे लाके उन्हें सब लोगों के सामने फूंक दिया और उन्हों ने उन के मोल का जो लेखा किया तो पचास सहस्र रुपये निकले। ऐसे परमेश्वर का बचन प्रबल होके बढ़ा और जयवन्त हुआ॥

इस के उपरान्त पुलूस की इच्छा थी कि यवन देश से होके यरूसलम को जावे और वहां से सिधारके रूम नगर का दर्शन पावे इस कारण उस ने तिमोदेउस

और अरस्तुस को आगे मकदूनिया में भेजा परन्तु आप कुछ और दिन एशिया में रहा। इतने में कोरिन्तुस के शिष्यों का ऐसा समाचार उस को मिला जिस के कारण वह अति दुःखी और चिन्तायमान हो गया। उन्हों ने कितने एक प्रकरणों के विषय में प्रश्न करने का एक पत्र उस के पास लिख भेजा था परन्तु उस में उन्हों ने अनेक कुकर्मों और बुरी दशाओं का जो उन के बीच में प्रगट हो गई थीं वर्णन नहीं किया। इन बातों का समाचार कङ्करिया के एक शिष्य के द्वारा पुलूस को मिला था। उन की ऐसी दशा हो गई थी कि वे आपुस में झगड़ा करते थे और अपने उपदेशकों के आदर करने में पक्षपाती हो गये थे और इस अनमेल के कारण उन के धर्म रीतों में बड़ी कुशीलता और उन के व्यवहारों में अति बुरी अपवित्रता भी प्रचलित होने लगी थी। यह समाचार पाके पुलूस ने उन के नाम पर वह पहिला पत्र जो मंगलसमाचार पुस्तक में संयुक्त है लिख भेजा। इस में वह बड़ी खराई के संग उन के अपराधों का वर्णन स्पष्ट रूप से करके उन को दोषी ठहराता है और पिता के समान उन की ताड़ना करके उन को समझाता है। उस पत्र के तात्पर्य से ज्ञान मिलता है कि खिष्टीय बिश्वास कैसा अत्यन्त पवित्र और दैवीय बस्तु है और किस रीति से वह मनुष्यों के पापों को नष्ट करने में भस्मकारी अग्नि के समान ठहरता है। उस पत्र के द्वारा कोरिन्तुस के शिष्य

अपने अपराधों का चेतन पाके बड़े शोकित मन हो पछतावा करने लगे। परन्तु जब लों पुलूस ने इस बात का समाचार न पाया तब लों उस का मन ऐसा चिंतित और पीड़ित हो रहा कि उस के कारण न शरीर में न मन में बिश्राम हो सका॥

सम्भव है कि उन्हीं दिनों पुलूस ने गलातिया के शिष्यों के पास वह शिक्षापत्र भी लिख भेजा जिस का थोड़ा सा वर्णन ऊपर हुआ। और रूम नगर के ख्रिष्टीय भाइयों के नाम पर भी वह पत्र लिखा जो मंगलसमाचार पुस्तक में संयुक्त है। इस के संग अफ-सुस नगर और उस के पड़ोस में मंगलसमाचार सुनाना और बिरोधियों से बिबाद करना और तम्बू बनाने में परिश्रम करना निरन्तर होता रहा। बड़े अचंभे की बात देख पड़ती है कि किस रीति से कोई मनुष्य विशेष करके एक दुर्बल और रोगी जन इतना परिश्रम और उद्योग कर सके कि तीन बरस के बीच रूमी एशिया के बहुधा निवासी उस के प्रचारने से मंगलसमाचार भी सुनें। परन्तु उन्हों ने केवल सुनाही नहीं बरन उन में से बहुतेरे बिश्वासी शिष्य भी हो गये। यहां लों कि चारों ओर की मूर्त्तिपूजा बहुत घटने लगी और यह बात एक वृत्तान्त से जो उन दिनों अफसुस नगर में उपस्थित हुआ प्रमाणिक होती है॥

ऊपर वर्णन हुआ कि अर्तिमिस देवी का एक बड़ा मन्दिर उस नगर में बना था। इस को छोड़ जैसे

कोरिन्तुस और अथेनी और अन्य बड़े यवनी और रूमी नगरों में वहां भी एक बड़ा क्रीड़ाघर बना था जिस में प्रति बरस मेला की रीति चारों ओर की बस्तियों और नगरों से बरन अन्य देशों से भी अगणित मनुष्य देवी की पूजा में लीला क्रीड़ा करते थे। फिर रूमी न्यायकर्त्ता भी अपराधियों के बिचार करने के निमित्त स्थापित समय पर नगर २ घूमा करते थे और कभी २ ऐसा हुआ कि जिस समय मेला लगा था उसी बिरियां न्यायकर्त्ता भी नगर में बिचार करते थे। सम्भव है कि अफ़सस की यही दशा थी जब पूर्वोक्त आश्चर्य्यित वृत्तान्त उपस्थित हो गया। वह वृत्तान्त इस प्रकार का था कि जब पुलूस के उपदेश के कारण बहुतेरे मनुष्यों ने खिष्टीय शिष्य हो मूर्त्तिपूजा के व्यवहारों को त्याग किया तो देवी और मन्दिर की छोटी २ मूरतों का बिकना बहुत घट गया और इस रीति से सुनारों और ठठेरों की कमाई भी बहुत घट गई। इस दशा में दमीतरयुस नामे उन के प्रधान ने अपने साझियों को एकट्ठे बुलाकर उन को इस रीतिसे उभारा अर्थात

दमीतरयुस बोला। हे मनुष्यो तुम जानते हो कि हम लोगों की जीविका इसी उद्यम से अर्थात इन मूरतों के बनाने और बेचने से होती है। और तुम देखते और सुनते हो कि केवल अफ़सुस नगर में तो नहीं बरन प्रायः सारे एशिया में इस पुलूस ने बहुत लोगों को समझाके और यह कहके भरमाया कि जो हाथ से

बने हैं सो ईश्वर नहीं हैं । सो केवल यही खटका नहीं है कि हमारे उद्यम की हानि हो जावे बरन यह भी कि बड़ी देवी अर्तिमिस का मन्दिर तुच्छ हो जायगा और जिसे समस्त एशिया और संसार भी पूजते हैं उस की महिमा जाती रहेगी इति ॥

सन्देह नहीं है कि दमीतरयुस की इन बातों में बड़ी चतुराई देख पड़ती है। क्योंकि उस ने पहिले अपने साझियों का लोभ उसकाके उन को भली भांति क्रोधित कर दिया । परन्तु जब इस रीति से अन्य लोग इस कारण कि उन की कमाई की कुछ हानि नहीं देख पड़ी कदाचित उसकाये न जाते तो उन को उभारने के निमित्त उस ने उन के धर्म्म भ्रष्ट होने की वार्त्ता किई । ऐसा देख पड़ता है कि सुनारों और ठठेरों की यह मण्डली नगर के किसी घर में एकट्ठी हुई थी और उस समय नगर निवासी देवी की पूजा में लीला क्रीड़ा करने को क्रीड़ागृह की ओर जाते थे। इतने में सुनारों का समूह उस घर से निकलके यह पुकारते हुए कि अफसुस की देवी अर्तिमिस जी की जय अर्तिमिस देवी की जय नगर के चारों ओर दौड़ते गये । यों सम्पूर्ण नगर में बड़ीही हड़बड़ी हो गई और सब लोग इधर उधर बड़े घबराहट के संग दौड़ते थे । और जब उन्हों ने पुलूस के दो संगियों को अर्थात गायुस और अरस्तारकुस को पाया तो उन को पकड़के एक चित्त हो क्रीड़ागृह में दौड़ गये । उस समय पुलूस अपने उन

दो मित्रों के संग न था परन्तु जब इस दशा का समाचार उस को मिला तो उस की इच्छा थी कि उन को उन उन्मत्त लोगों के हाथ से बचाने के निमित्त क्रीड़ागृह में जावे। पर भाइयों ने उसे जाने न दिया और कितने कुलीन मनुष्यों ने जो नगर के प्रधान थे और पुलूस के संग मित्रभाव रखते थे उस के पास निवेदन करके कहला भेजा कि आप क्रीड़ागृह में जाने का जोखिम अपने ऊपर न उठाइये। उस हुल्लड़ में बहुधा मनुष्य ठीक नहीं जानते थे कि इस का क्या अर्थ है और कितने जानते थे कि यहूदी लोगों ने हमारे धर्म्म और देवी का कुछ अपमान किया होगा। इस कारण यहूदियों ने चाहा कि इस दशा का ठीक कारण उन के सन्मुख बतलावें और इस इच्छा से उन्हों ने एक जन सिकन्दर नामे को खड़ा करके उन के आगे बढ़ा दिया। परन्तु जब वह हाथ से सैन करके उत्तर देने लगा तो उन्हों ने उस को यहूदी जान सब के सब दो घड़ी के अटकल एक शब्द से पुकारते रहे कि अफसुसियों की देवी अर्तिमिस की जय अर्तिमिस जी की जय। यों सारी भीड़ और भी घबराहट में आ गई और अत्यन्त बड़ा हुल्लड़ मच गया और बहुधा लोग तनिक भी नहीं जानते थे कि हम किस कारण एकट्ठे हुए हैं क्योंकि कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे और सारी भीड़ वालों के मन पर निरा तम और व्याकुलता का राज्य बरबस्ती कर रहा था॥

जब नगर के प्रधान अध्यक्ष को इस दशा का समाचार मिला तो प्यादों को साथ लेकर क्रीड़ागृह में गया और भीड़ के लोग उस को देखके हुलड़ मचाने से तनिक धीमे हो गये तब वह लोगों को शान्ति करके इस रीति से उन को समझाने लगा अर्थात

नगराध्यक्ष बोला । हे अफसुसियो कौन मनुष्य नहीं जानता है कि यह नगर बड़ी देवी अर्तिमिस का और उस मूरत का जो बृहस्पति से गिरी टहलुआ और पूजनेहारा है। फिर जब इन बातों का खण्डन हो नहीं सक्ता है तो उचित था कि तुम शान्त होवो और बिना ध्यान किये कुछ मत करो । क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाये हो जो न कि पवित्र वस्तुओं के चोर न तुम्हारी देवी के निन्दा करनेहारे हैं । फिर यदि दमीतरयुस का अथवा उस के साथियों का किसी से कुछ बखेड़ा हो बिचारस्थान अभी खुला है और न्यायकर्त्ता भी उपस्थित है एक दूसरे पर अपवाद करें । परन्तु यदि तुम और बातों के विषय में पूछते हो तो स्थापित सभा में निर्णय किया जायगा । क्योंकि आज के हुल्लड़ के हेतु से हम ही पर अपवाद होने का खटका है इस लिये कि कोई ऐसा कारण देख नहीं पड़ता है जिस से हम इस भीड़ का उत्तर दे सकें इति । यह कहके नगराध्यक्ष ने मण्डली को बिदा किया ॥

इस वृत्तान्त से प्रगट होता है कि अपने बिश्वासी सेवकों को खटके से बचाने के लिये प्रभु यसू खीष्ट के

पास अनेक उपाय हैं । और जिस रीति से उस ने कोरिन्तुस में गलियून एक मूर्त्तिपूजक अध्यक्ष के द्वारा पुलूस को पक्षपाती यहूदियों के बैर से बचाया उसी प्रकार से उस ने अफसुस में भी एक और मूर्त्तिपूजक अध्यक्ष के द्वारा लोभी और उन्मत्त अफसुसियों के क्रोध से उस की रक्षा किई । इस के उपरान्त पुलूस अफसुस से सिधारके मकदूनिया और अखाया में जाके कोरिन्तुस नगर में दो एक मास रहके और वहां के शिष्यों को ठीक करके अन्त में उसी मार्ग से फिलिपी में लौट आया और वहां से नौका पर चढ़के फिर अफसुस के निकट मलीतुस नामे बन्दर में पहुंचा । और अफसुस की खिष्टीय मण्डली के प्रधानों को पास बुलाके उन से बिदा होने का वह उपदेश किया जिस के कितने बचन ऊपर नवें अध्याय में लिखे हैं । परन्तु उन बचनों को छोड़ जो वहां लिखे हैं उस ने अफसुसी भाइयों से यह भी कहा अर्थात अब देखो मैं आत्मा का बंधा हुआ यरूसलम को जाता हूं और नहीं जानता कि वहां मुझ पर क्या बीतेगा । केवल इतना कि पवित्र आत्मा हर एक नगर में यह कहके साक्षी देता है कि बन्ध और कष्ट तेरे लिये सिद्ध हैं । तौ भी मैं उसे कुछ नहीं समझता और न मैं अपने प्राण को प्यारा जानता हूं जिसतें मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा को जिसे मैं ने करने को प्रभु यसू से पाया है अर्थात कि परमेश्वर की कृपा के मंगलसमाचार की साक्षी देऊं सो आनन्द से

पूरा करूं । और अब देखो मैं जानता हूं कि तुम सब लोग जिन में मैं परमेश्वर के राज्य को प्रचारता फिरा हूं मेरा मुंह फिर न देखोगे इति । इतने बचन कहके पुलूस ने घुटने टेकके उन सभों के संग प्रार्थना किई और वे सब बहुत रोये और पुलूस के गले लगके उसे चूमा और निज करके उस बात से जो उस ने कही थी कि तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे वे बहुत उदास हुए और उन्हों ने उस को नौका तक पहुंचाया ॥

इस के उपरान्त पुलूस के अनेक वृत्तान्त उपस्थित हुए जो बुद्धिमानों के लिये ध्यान करने के अति योग्य है परन्तु उस का सम्पूर्ण वर्णन लिखना इस पुस्तक का अभिप्राय नहीं है । जो कोई उस को जान्ने चाहे सो मंगलसमाचार आदि पुस्तकों में देख सकेगा । इस पुस्तक का तात्पर्य्य विशेष करके अनेक प्राचीन और प्रसिद्ध नगरों में खिष्टीय मत के प्रवेश और स्थापित होने से सम्बन्ध रखता है । इस कारण अब पुलूस के अन्तवाले वृत्तान्त का संक्षेप लिखके पीछे जिन नगरों का वर्णन ऊपर लिखा है उन में रज और तम गुणों के संग सत्त्वगुण का सङ्ग्राम कर उन पर प्रबल होना इस का थोड़ा सा वर्णन अन्तवाले अध्याय में लिखा जायगा ॥

मलीतुस से सिधारके पुलूस और उस के समयात्री अनेक टापुओं और नगरों से हो सूर नगर के बन्दर में टिक गये और सात दिन नगर में रहे । फिर कैसरिया में आके कितने दिन वहां भी रहे । इस के पीछे वे

यरूसलम में पहुंचे और वहां के पक्षपाती यहूदियों ने हुल्लड़ मचाके परमेश्वर के बड़े मन्दिर में रूमी प्यादों के हाथ पुलूस को पकड़वाया और बंदीगृह में डाला। फिर उन बैरियों के अपवाद के कारण उस को अनेक बार अध्यक्षों और राजाओं के विचारस्थान में उत्तर देने पड़ा और वह बंधुवा होके कैसरिया में भेजा गया और दो बरस वहां बंदीगृह में रहा। फिर जब उस ने रूमी महाराजा कैसर की दुहाई दिई तो अन्त में उन्हों ने उस को नौका पर चढ़ाके रूम नगर की ओर भेज दिया। जब नौका सागर के पार जाती थी तो बड़ी आंधी चली और नौका टूट गई और सब नौकावाले एक टापू पर डाले गये। वहां से दूसरी नौका पर चढ़के रूम नगर को सिधारे। वहां भी पुलूस दो बरस बंधुआ रहा परन्तु उसही दशा में वह उपदेश करता रहा और उस के द्वारा कैसर के राजभवन में भी मंगलसमाचार सुनाया गया। सम्भव है कि छुटकारा पाके फिर इधर उधर दौरा करके अनेक देशों में प्रभु का कर्म करता रहा। अन्त को वह फिर पकड़ा गया और रूम नगर के बंदीगृह में दोबारा डाला गया और परम्परा की बात है कि जब बूढ़ा हो गया था तो उस नगर के बड़े क्रीड़ागृह में कठोर मन मूर्त्तिपूजकों की रुचि बढ़ाने के लिये जंगली पशुओं से फाड़ा गया अथवा उस का सिर खड्ग से काटा गया। जब बन्दीगृह में बन्द हुआ था तो उस ने उन शेष पत्रों को जो मंगलसमाचार पुस्तक में

संयुक्त हैं ख्रिष्टीय मण्डलियों और शिष्यों के पास लिखा और एक में जो तिमोदेउस के नाम पर दूसरा पत्र कहावता है अपने ऐसेही अन्त की बाट जोहते हुए उस ने यों लिखा है अर्थात मैं अब भी ढाला जाता हूं और मेरे बिदा होने का समय आ पहुंचा मैं अच्छा सङ्ग्राम कर चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी किई है मैं ने बिश्वास को पालन किया है अब तो मेरे लिये वह धर्म्म का मुकुट धरा है जिसे प्रभु जो धर्म्म का बिचारकरता है उस दिन मुझे देगा और केवल मुझे ही नहीं पर उन सभों को भी जिन्हों ने उस का फेर प्रगट होना प्रिय जाना इति ॥

पन्द्रहवां अध्याय ।

ऊपर के वृत्तान्त में सत्वरजस्तमस्सङ्ग्राम का प्रकाश ।

ऊपर का वर्णन लिखने में ग्रन्थकर्त्ता का विशेष अभिप्राय यह था कि भारतवर्ष के निवासी जो अंग्रेज़ी भाषा से अनजान हैं अनेक प्राचीन और प्रसिद्ध नगरों की अद्भुत दशा का तनिक समाचार पावें । और उन में ख्रिष्टीय मत का प्रवेश और स्थापन किस रीति से हुआ इस का वृत्तान्त उन पर प्रकाशित होवे । क्योंकि अगिले काल में और अनेक देशों में महा पुरुषों ने अत्यन्त बड़े और शोभायमान नगरों को बनाया जिन के गृहआदिकों की सुन्दरता अतुल्य थी । उन में से कितनों के नाम भी इस संक्षेप पुस्तक में लिखे नहीं गये और कितनों का केवल नाम लिखा है अर्थात बाबुल और नैनवी और थीन्स और मिमफिस और स्कन्दरिया और स्पार्टा और बिजान्तिऊम और रूम और कार्थेज इत्यादि बड़े २ नगर थे जिन का अति आश्चर्य्यित वर्णन प्राचीन पुस्तकों में लिखा है । इस छोटे ग्रंथ में केवल दो एक का अर्थात अथेनी और कोरिन्तुस और अन्ताकिया और यरूसलम और कैसरिया और अफ़सुस का संक्षेप लिखा गया । इन नगरों में से कितने इन दिनों सर्वथा सुन हो गये कितनों के थोड़े २ खंडहर क़न्नोज इन्द्रप्रस्थ हस्तिनापुर के रीति पर देखने में आते हैं

कितनों की आज लों भी कुछ २ शोभा शेष रही है परन्तु उन की दशा प्रथम प्रताप से बहुत बदल गई है। और उन सभों के पुरातन निवासी सब के सब सुन और अदृश्य हो गये। उन नगरों में कितने अगणित मनुष्य उन प्रथम कालों में जीवते चलते फिरते थे कौन बतला सक्ता है पर उन में से केवल दो एक मनुष्यों के नाम भी आज लों जाने जाते हैं वे उस अदृश्य लोक को चले गये हैं जिस और हम सब के सब सिधारते हैं॥

परन्तु उन नगरों में जिन का संक्षेप ऊपर लिखा है एक पदार्थ आ गया जो आज लों क्षय नहीं हुआ और उस के क्षय होने का कोई लक्षण देख नहीं पड़ता है। इस के बिरुद्ध वह पदार्थ प्रति बरस बढ़ता चला जाता और अन्य नगरों और देशों में प्रवेश करके सारे संसार के ऊपर जय पाने की अभिलाषा और आसरा प्रगट करता है। निस्सन्देह जय पाने में सङ्ग्राम तो करने पड़ता है परन्तु यह सङ्ग्राम आत्मिक और मानसिक है न कि शारीरिक। क्योंकि यह पदार्थ जो ख्रिष्टीय मत अर्थात प्रभु यसू ख्रीष्ट का मुक्तिदायक धर्म्म है जय पाने के लिये शारीरिक शस्त्र नहीं चलाता है और शारीरिक बल साधन नहीं करता है। उस के बिरोधी तो बहुधा ऐसा करते और तब ख्रिष्टीय शिष्यों को जैसे उन के प्रभु को शारीरिक दुःख सहने पड़ता है। पर वे आप धर्म्म के विषय में किसी जन पर किसी प्रकार की बरबस्ती नहीं करते हैं। अथवा जो कोई उन में से भूल करके

ऐसा करे तो वह अपने प्रभु की आज्ञा टाल देता और उस के व्यवहार और इच्छा के विरुद्ध करता है। इस कारण यह ख्रिष्टीय मत सत्वगुण के समान देख पड़ता है क्योंकि वह प्रकाशकारक धीरजवान प्रेमपूर्वक कल्याणदायक बुद्धिजनक ज्ञानपूर्वक और मुक्तिदायक ठहरता है। परन्तु जब इस के विरुद्ध रजोगुण तमोगुण इस जगत में मनुष्यजाति के ऊपर बहुतही प्रबल हो रहे हैं तो क्या आश्चर्य्य कि इस के और उन के बीच सङ्ग्राम हो रहे॥

उन नगरों में जिन का वर्णन हुआ और उन के निवासियों में रजोगुण और तमोगुण अति बलि होके सत्वगुण से बड़ा सङ्ग्राम कर रहे थे। क्योंकि यरूसलम को छोड़ उन सब नगरों में एक आश्चर्य्यरूपी मनकल्पित मूर्त्तिपूजा सनातन से प्रचलित हो रही थी। और जहां कहीं यह दशा है वहां रज और तम अवश्य बली और शक्तिमान हैं। इस जगत की कितनी जंगली जातें हैं जो पशु की रीति केवल अपने भोजन की चिन्ता करते हैं और यह सब के सब किसी कुडौल और क्रूर मूर्त्तिपूजा के दास हैं। फिर और भी जातें जिन के पास कुछ विद्या और सभ्यता हैं फिर भी अपने हस्तकृत और मनकल्पित देवों का भजन करते हैं। परन्तु जो जो जाति सत्य परमेश्वर को छोड़ और किसी का भजन करते हैं अवश्य वे होते २ बुद्धिहीन कुचाल अधर्म्म अज्ञान अपवित्र निर्बल

हो जाते हैं । वरन जिन लोगों के पास जैसे प्राचीन यहूदी जाति थी सत्य परमेश्वर का ज्ञान और भजन हो रहा जब वे अहङ्कार वा पक्ष वा लोभ के मारे सीधे मन से उस की आज्ञा पर नहीं चलते तो वे भी शीघ्र अपने सत्य ज्ञान को उलटी रीति से समझके भ्रष्ट होते हैं। यहूदी लोगों का अहङ्कारपूर्वक पक्ष निस्सन्देह तमोगुण का एक साक्षात लक्षण था और यह निरन्तर सत्वगुण से कठिन वैर और द्वेष रखता था । फिर कोरन्ती लोगों का सुख बिलास और राज रङ्ग और अथेनियों का विद्यासंयुक्त अभिमान और चतुराई और अफसुसियों का लोभ और टोना और रूमियों का राजसम्बन्धी घमण्ड और कठोरता और उन सभों का शारीरिक और लौकिक स्वभाव और आत्मिक अज्ञानता और दासता यह सब के सब रजोगुण और तमोगुण के सम्बन्धी थे और यसू खीष्ट के पवित्र मुक्तिदायक मंगलसमाचार के अत्यन्त कठिन वैरी ठहरे ॥

इस वैर का एक विशेष कारण यह था कि खिष्टीय धर्म्म इन समस्त बस्तुओं पर सत्वगुण का उजाला चमकाके उन के औगुणों को प्रगट करता है । इस के अनुसार प्रभु यसू खीष्ट सदा सर्बदा कपटी पक्षपाती यहूदियों पर दोष लगाके उन को क्रोधित करता रहा कि हे कपटी अध्यापको और फरीसियो तुम पर हाय क्योंकि तुम मनुष्यों पर स्वर्ग के राज्य का द्वार मूंदते हो न तुम आप भीतर जाते हो न आनेवालों को

जाने देते । हे कपटी अध्यापको और फरीसियो तुम पर हाय क्योंकि तुम बिधवाओं के घरों को निंगल जाते और छल से लम्बी प्रार्थना करते हो । इस कारण तुम अधिक दण्ड पाओगे इति । इसी प्रकार से पुलूस ने भी रूमी शिष्यों के नाम पर अपने पत्र में प्राचीन मूर्त्तिपूजकों की भ्रष्टता का भयानक वर्णन किया है अर्थात इस कारण कि उन्हों ने ईश्वर को जानके ईश्वर के योग्य गुणानुवाद न किया न धन्य माना परन्तु अनर्थक बादबिवाद करने लगे और उन का निर्बुद्धि मन अंधियारा हो गया वे अपने को ज्ञानी कहके मूरख बन गये और अबिनाशी ईश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य और पक्षियों और चौपायों और रेंगनेहारे जन्तुओं की मूर्त्ति की समानता से बदल डाला । इस कारण ईश्वर ने उन्हें उन के मन की अभिलाषा के अनुसार अशुद्धता के लिये त्याग दिया कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें । और जब कि ईश्वर को चित्त में रखना उन्हें अच्छा न लगा इस लिये ईश्वर ने उन्हें भ्रष्ट मन के बस में त्याग दिया कि वे अनुचित कर्म करें और सारे अधर्म्म और व्यभिचार और दुष्टता और लोभ और बुराई से भरे हुए और डाह और नरहिंसा और बैर और छल और दुरभाव से भरपूर हों और फुसफुसिये अपवादी ईश्वरद्रोही निन्दक अभिमानी दम्भी बुरी बातों के बनानेहारे माता पिता की आज्ञा उलंघन करनेहारे निर्बुद्धि झूटे स्नेहरहित क्षमारहित निर्दय होवें।

जो ईश्वर की विधि जानते हैं कि ऐसे २ काम करनेहारे मृत्यु के योग्य हैं तौभी न केवल उन कामों को करते हैं परन्तु करनेहारों से प्रसन्न भी होते हैं ॥

फिर अफसुसी भाइयों के पास जब वह रूम नगर में बंधुआ था तो उस ने यों लिखा है अर्थात जैसा कि पवित्र लोगों के योग्य हैं तैसा व्यभिचार का और सब प्रकार के अशुद्ध कर्मों का अथवा लोभ का नाम भी तुम्हों में न लिया जाय और न निर्लज्जता का न मूढ़ता की बात चीत का अथवा ठट्ठे का नाम कि ये बातें सोहती नहीं। परन्तु धन्यबाद ही सुनाया जाय । क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी व्यभिचारी को अथवा अशुद्ध जन को अथवा लोभी मनुष्य को जो मूर्त्तिपूजक है ख्रीष्ट और ईश्वर के राज्य में अधिकार नहीं है । कोई तुम्हें अनर्थक बातों से धोखा न दे क्योंकि इन कर्मों के कारण ईश्वर का क्रोध आज्ञा लंघन करनेहारों पर पड़ता है । सो तुम उन के संग भागी मत होओ क्योंकि तुम आगे अन्धकार थे पर अब प्रभु में उजियाले हो । ज्योति के सन्तानों की नाईं चलो क्योंकि सब प्रकार की भलाई और धर्म्म और सत्यता में आत्मा का फल होता है। और परखो कि प्रभु को क्या भावता है और अन्धकार के निष्फल कार्य्यों में भागी मत होओ बरन और भी उन पर दोष देओ । क्योंकि जो कर्म गुप्त में उन से किये जाते हैं उन्हें कहना भी लाज की बात है । और सारी बस्तें जो दोषी ठहरती हैं सो उजियाला से प्रकाश होती हैं

क्योंकि जो कुछ प्रकाश करता है सो उजियाला है। इस कारण कहा गया है हे तू जो सोता है जाग और मृतकों में से उठ और ख्रीष्ट तुझे उजियाला देगा॥

निदान जब ख्रिष्टीय धर्म्म सारी दोषीय बस्तुओं को अपने उजियाला से प्रकाश करता है तो क्या आश्चर्य्य कि वे बस्तें उस से बिरोध करें। और जब कि संसार ऐसी बस्तुओं से परिपूर्ण है तो क्या आश्चर्य्य कि उन का बिरोध कठिन और कड़ुवा हो। इस के अनुसार सन्देह नहीं है कि ख्रिष्टीय धर्म्म के प्रथम काल में संसार का सारा पराक्रम और व्यवहारिक ज्ञान और मिथ्या धर्म्म और लौकिक स्वार्थता और शारीरिक सुखबिलास और कपटियों का कठिन बैर और द्वेष उस धर्म्म के नष्ट करने के निमित्त एकही संग प्रवृत्त हो निरन्तर प्रयत्न कर रहे थे। और यदि वह धर्म्म दैवीय ईश्वरीय न होता तो निश्चय वह नष्ट हो जाता। परन्तु जिस रीति से जगत ने प्रभु यसू ख्रीष्ट को बध कर दिया और इस के उपरान्त ख्रिष्टीय धर्म नवीन बल से जगत में जय पाता गया इसही प्रकार से ख्रिष्टीय शिष्यों के दुःख सहने और घात होने के द्वारा उस धर्म का जय और प्रताप बढ़ताही गया। क्योंकि मनुष्यजाति के मूल प्रकृत और स्वभाव यद्यपि पाप के कारण बहुत भ्रष्ट हो गये तथापि उस में सत्य मिथ्या का विवेक और पाप पुण्य का ज्ञान और परलोक की चिन्ता उस रीति से व्याप्त और संयुक्त है जो मिटने का नहीं।

और जब इन विषयों की सत्यता स्पष्ट रूप से और पवित्रात्मा के गुणदायक अनुग्रह से मनुष्य के चित्त और अन्तःकरण पर प्रकाशित होती है तो उस का स्वीकार करना अवश्य पड़ता है। ऊपर के वृत्तान्त से विदित होता है कि कोरिन्तुस अफ़सुस आदि नगरों में पुलूस के उद्योगों के द्वारा रज और तम गुणों के ऊपर सत्व गुण जय पाता गया और उस के विरोधी अपनी प्रत्येक हार के पीछे अधिक उन्मत्त और क्रोधी हो और भी कठिन सङ्ग्राम कर अन्त को सर्वथा हराये गये। यहां लों कि उन देशों में उन मिथ्या धर्मों का चिन्ह कहीं पाया नहीं जाता है॥

निस्सन्देह ख्रिष्टीय धर्म्म का यह गुण अर्थात कि वह समस्त प्रकार की बुरी पापमय बस्तुओं को नष्ट करने चाहता है सो उस धर्म्म के ईश्वर की ओर से आने का एक प्रसिद्ध लक्षण है। क्योंकि मनुष्य के पापमय स्वभाव के विपरीति है कि ऐसा धर्म्म निर्माण करें। फिर जब सम्पूर्ण संसार का पराक्रम और विद्या और बल उस की विरुद्धता करके उस को हरा न सक्ते थे सो यह भी उस के दैवीय मूल का एक दृढ़ प्रमाण देख पड़ता है। इस को छोड़ जब यह धर्म्म केवल मानसिक आत्मिक बुद्धिरूपी शस्त्र चलाता और निरे प्रमाण और सत्यता के बल से जय पाता है तो निश्चय वह मनुष्य का कल्पित नहीं हो सक्ता है। क्योंकि जितने मनकल्पित धर्म्म संसार में हैं वे सब के सब इस विषय

में खिष्टीय धर्म्म के विपरीत हैं। वही अकेला सत्यता और प्रेम और ज्ञान और शुद्धता के बल से फैलके जय पाता है। निदान वही अकेला परमेश्वर का दिया हुआ सत्य मुक्तिदायक धर्म्म ठहरता है॥

अब यह धर्म्म प्रभु की इच्छा से भारतवर्ष में भी आया और उस के शिष्य नाना प्रकार के उद्योग करके उस की शिक्षा चारों ओर प्रचारते हैं। इस देश के कितने भागों में पचास सत्तर बरसों से इस का प्रचार हो रहा है और वहां विशेष करके दक्खिन में सहस्रों मनुष्य शिष्य हो गये। उत्तर की दिशा में दस बीस तीस बरसों से सैकड़ों मनुष्य विश्वास लाये और लाते जाते हैं और कदाचित्त उन से अधिक मनुष्य हैं जो मन में उस को सत्य जानते परन्तु स्पष्ट रूप से उस को अङ्गीकार नहीं करते हैं क्योंकि ऐसा करने में सांसारिक कष्ट उठाने पड़ता है। इस का कारण वही है जो अगिले काल में और अन्य देशों में ऊपर के वृत्तान्त के अनुसार प्रगट था अर्थात कि बहुतेरे मनुष्य अपने पितरों का धर्म्म बिना परीक्षा किये सत्य मान और उस का पक्ष कर खिष्टीय धर्म्म का बिरोध करते और उस के शिष्यों को सताने चाहते हैं। फिर कितने संसार के राजरंग और व्यवहार में लौलीन हो अपने परलोक की चिन्ता नहीं करते और कितने अपने कुरीतों और कुचालों पर उनमत्त हो खिष्टीय धर्म्म की पवित्र दैवीय शिक्षा से कठिन बैर रखते हैं। फिर उन में कितने मनुष्य जो उन

की सामर्थ्य होती तो बड़े आनन्द से खिष्टीय शिष्यों को अति क्रूरता के संग सताते और कष्ट देते और मार भी डालते। परन्तु जब प्रभु की इच्छा से इस देश में खिष्टीय राज्य स्थापित हो गया तो यह लोग ऐसा करने नहीं पाते। इस प्रबन्ध में यह बड़ा लाभ देख पड़ता है कि इस प्रकार से स्वर्ग के राज्य का बीज चारों ओर बहुत मनुष्यों के मन में बोने का औसर मिलता है और उस धर्म्म के लाभदायक गुण कितनों के मन में जड़ पकड़ने पाते हैं और साधारण लोगों का ज्ञान और विद्या बढ़ती चली जाती है और उन की चाल भी नाना प्रकार से सुधरती जाती है। कदाचित पीछे से प्रभु की इच्छा होगी कि इस देश में भी जैसे अन्य देशों में उस के शिष्यों को अपने बिश्वास के कारण बड़े बड़े कष्ट उठाने पड़े और यों इस धर्म्म का पूर्ण प्रताप सब लोगों पर प्रकाशित होगा जैसे कि १८५७ ईस्वी के बलवा में कुछ न कुछ इस प्रकार की दशा प्रगट हुई। परन्तु यह बात जैसी हो फिर भी एक बात निश्चय है कि खिष्टीय धर्म्म इस देश में भी जैसे अन्य देशों में प्रबल होनेवाला है॥

इस दशा में समस्त बुद्धिमान धर्म्ममय हिन्दुओं को इस धर्म्म के प्रमाण और तात्पर्य और शिक्षा को जांचके समझ लेना एक अति योग्य कार्य्य बरन एक अवश्य करतव्य देख पड़ता है। यदि कोई मनुष्य उस की परीक्षा कर उस को खण्डन कर सके तो करे। नहीं तो अवश्य वह धर्म्म उस मनुष्य को खण्डन करेगा। क्योंकि परमेश्वर

ने पापी भ्रष्ट मनुष्यों के लिये अपने प्रिय पुत्र को इस जगत में भेजके मुक्ति के सत्य मार्ग को इस इच्छा से नहीं ठहराया होगा कि मनुष्य उस की आनाकानी करें या उस को तुच्छ जानें। निस्सन्देह इस के जांचने और ग्रहण करने में कुछ मानसिक और शारीरिक दुःख सहने पड़ता है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के मन में जैसे संसार के किसी देश में ईश्वर का राज्य स्थापन होना एक सङ्ग्राम की बात है। प्रत्येक मनुष्य के मन में जैसे संसार में रजोगुण तमोगुण दोनों बलवन्त हैं और बिना सङ्ग्राम किये ये हार नहीं जाते। परन्तु अनन्त जीवन और सत्य मुक्ति के लिये यह कष्ट उठाना एक अति योग्य बात है और जब लों कि रजोगुण तमोगुण किसी के मन से नष्ट न होवें और सत्वगुण अर्थात परमेश्वर का सत्य राज्य जो प्रभु यसू ख्रीष्ट के द्वारा इस जगत में स्थापित हो गया उस के मन में स्थापन न हो तो इस जीवन में भी वह सत्य कुशल और विश्राम नहीं जान सक्ता है। फिर अन्तवाले बड़े न्याय के दिन जब सारे मनुष्यों का बिचार प्रभु यसू ख्रीष्ट से किया जायगा तो वे जिन के पास उस के धर्म्म का समाचार आया क्या उन्हों ने उस को ग्रहण किया कि नहीं किया फिर भी उसी धर्म्म के अनुसार उन का बिचार निश्चय किया जायगा। ईश्वर इस पुस्तक के सारे पढ़नेहारों को अपना अनुग्रह देवे कि इस भारी प्रकरण का विचार शीघ्र करके सीधे मन से कर लेवें इति॥

सत्वरजस्तमस्सङ्ग्राम समाप्तः॥

DATE DUE

[illegible] 2 9 '76			
MAY 2 2 '81			

GAYLORD PRINTED IN U.S.A.

PK2097 .S25
Satwa-rajas-tamas-sangram = (The battle
Princeton Theological Seminary-Speer Library
1 1012 00080 5822